₹25

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

अप्रैल 2016

- पर्यावरण सुरक्षा : कारोबार का नया अंदाज़
  —रिज़वान अहमद सिद्दीक़ी
- ग्लोबल वार्मिंग के ख़तरे और इस्लामी शिक्षाएं
  —डॉ॰ मुहम्मद रफ़अत
- हफ़ीज़ मेरठी का साहित्यिक संदर्भ
  —फ़रहत हुसैन ख़ुशदिल
- भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ कारगर लड़ाई की ज़रूरत
  —विद्या प्रकाश

MASJID - ISLAMIC CENTER

7-TOMBS ROAD | TOLICHOWKI | HYDERABAD

The proposed multifaceted Islamic Center at Tolichowki is committed in providing a service to the community in accordance to the teachings and strict adherence to the Quran and authentic Sunnah.

JAMA'AT-E-ISLAMI HIND
Greater Hyderabad

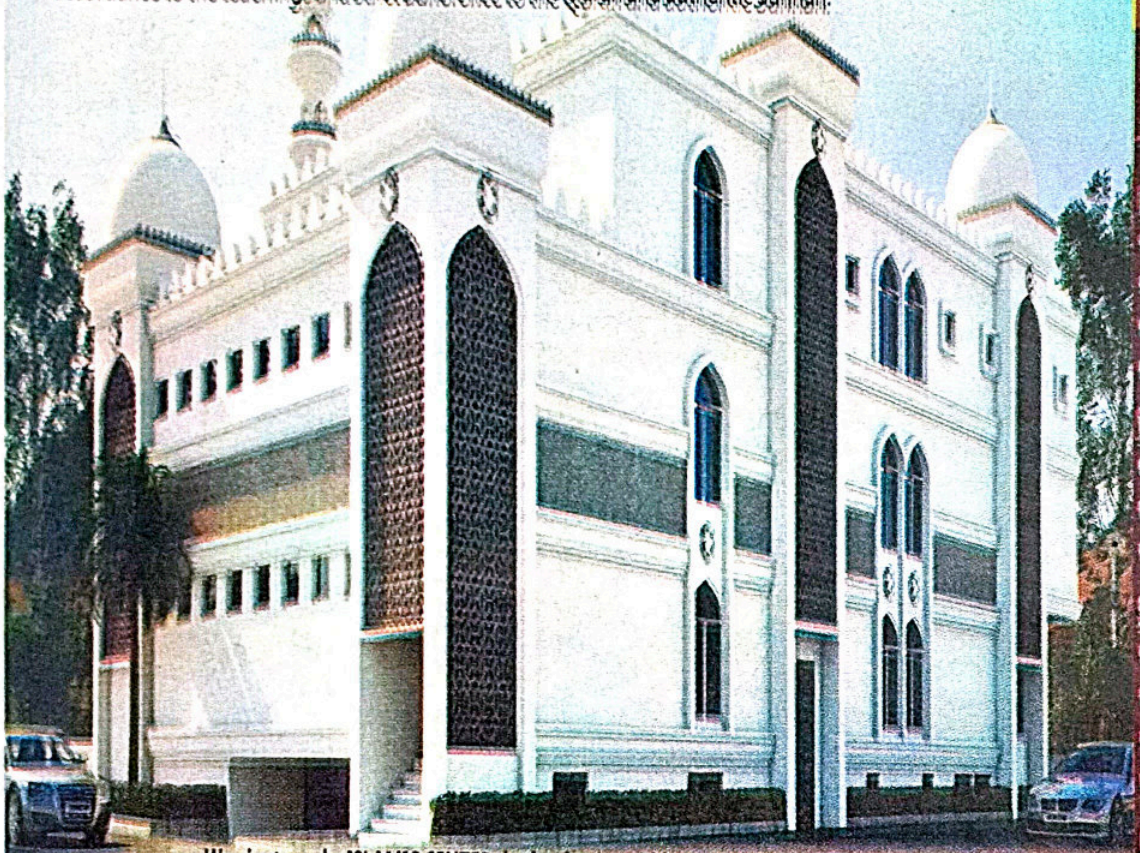

HIGHLIGHTS

Dawah Center
- Dawah Counseling Center
- Dawah Library
- Audio Visual Library
- Dawah Training Center

Women and Children Welfare Centre
- Basic Learning Center
- Women Welfare Centre
- Facilities for Sisters

Social Service Center
- Widows Support Center
- Career Guidance Center
- Interest free Micro Finance Centre
- Medical Aid and Medical Equipment Bank

Other Facilities
- Markazi Maktaba Publishres (MMI) Depot
- SIO , GIO and JIH Offices
- Reading Rooms and Lecture Hall

We aim to make ISLAMIC CENTER the focal point within our community. We envision beyond the tradition Masajid that only offer Salat, as we have a dedicated team of workers beholding a vision of several Social Spiritual activities:

The Masjid and Islamic Center will be a rewarding source. Please reserve your eternal rewards by contributing as much as you can.

Account Name : JIH Toli Chowki | Account No.: 3459101006336 | IFSC Code:: CNRB0003459 | Bank: Canara Bank | Branch: Toli Chowki.

TANVEER UL HAQ : 9989036632 | ABDUL RAZZACK : 9440014127

www.islamiccentertolichowki.com info@islamiccentertolichowki.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 26 अंक 5 नवम्बर 2016

कितनी ही ऐसी बस्तियों को हम तबाह कर चुके हैं, जिनके लोग अपने जीवन-व्यापार पर इतरा गये थे। सो देख लो, वे उनके निवास-स्थान पड़े हुए हैं, जिनमें उनके बाद कम ही कोई बसा है, आख़िरकार हम ही वारिस होकर रहे। -क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : www.kanti.in

चेक / ड्राफ्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

दुश्मन भले हज़ार मिलें...!

कूटनीति के रथ पर चढ़कर जिसने मार्ग बनाया हो,
अपनों को ही धोखा देकर जिसने जश्न मनाया हो
औरों के जीवन में जिसने घोला सदा हलाहल हो
छल, प्रपंच और झूठ ही जिसका सबसे बड़ा महाबल हो
अपने ही स्वार्थों के हित सबको नीचा दिखलाया हो
अपनी चतुराई के बल पर सबको नाच नचाया हो
और भरोसे की चादर को हरदम जिसने फाड़ा हो
आघातों को हरपल जिसने दिल में चाकू गाड़ा हो
ऐसे मित्रों से हम कैसे मरहम की उम्मीद करें
ऐसे कृपण सखा से अच्छा दुश्मन भले हज़ार मिले ।।1।।

चाटुकारिता और षड्यंत्रों से ही जिसकी यारी हो
और कुटिलता की दुनिया ही जिसको सबसे प्यारी हो
अपने कर्मों की गठरी को औरों के सर लादी हो
और फ़रेबी भाषा गढ़कर हरदम बाज़ी मारी हो
जिसने सदा दिखावा कर सबको अपना बतलाया हो
और तिलिस्मी अय्यारी से फिर सबको झुठलाया हो
जिसके फ़नकारीपन से जब अदाकार भी हारे हों
और कुटिल मुस्कानों पर जब कामदेव भी वारे हों
ऐसे मित्रों से हम कैसे सदाचार की बात करें
ऐसे कृपण सखा से अच्छा दुश्मन भले हज़ार मिलें ।।2।।

डॉ० मान सिंह

तिलक नगर, बीधापुर,

उन्नाव (उ०प्र०)



कहां क्या है ?

दुश्मन भले हज़ार मिलें...। —डॉ॰ मान सिंह 3
क़ुरआन ज्योति 5
अल्लाह का भय (हदीस मंजरी) 6
सार्वभौमिक धर्म इस्लाम (संपादकीय) 7
बौद्धिकता का अर्थ (आपके पत्र) 9
इस्लाम सारी मानवता के लिए (आस्था) —अबू मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी 13
ईश्वर और उसकी सत्ता (दृष्टिकोण) —स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य 15
मेरा बेटा (कहानी) —विष्णु प्रभाकर 19
हिन्दी के नामकरण प्रवर्तक : अमीर खुसरो (साहित्यिक) —बद्रीनारायण तिवारी 24
पर्यावरण सुरक्षा : कारोबार का नया अंदाज़ (विशेष आयोजन) —रिज़वान अहमद सिद्दीक़ी 26
ग्लोबल वार्मिंग के ख़तरे और इस्लामी शिक्षाएं (विशेष आयोजन) —डॉ॰ मुहम्मद रफ़अत 28
लापरवाही न बरते चिकनगुनिया में (स्वास्थ्य चर्चा) —डॉ अनुराग श्रीवास्तव 30
हफ़ीज़ मेरठी का साहित्यिक संदर्भ (व्यक्तित्व) —फ़रहत हुसैन ख़ुशदिल 31
सफलता के लिए ज़रूरी है शब्दों का जादू (कैरियर) —डॉ॰ विभा सिंह 34
भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ कारगर लड़ाई की ज़रूरत (दृष्टिकोण) —विद्या प्रकाश 37
भारत के 500 टेस्ट मैचों का सफ़र (खेल-खिलाड़ी) —ए॰ एन॰ शिब्ली 39
मुसलमानों की अनदेखी से पिछड़ रहा है भारत (विचार) —ठाकुर पवन सिंह 41
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर दो उत्तम पुस्तकें (पुस्तक-समीक्षा) —मुहम्मद इलियास हुसैन 43
हिंसा के रूपों पर क़ाबू पाने की ज़रूरत (महिला जगत) —डॉ॰ विभा सिंह 46
आसान नहीं है लोकतंत्र की जड़ों को हिलाना (उद्‌गार) —विभांशु दिव्याल 47
सावधान ! हम बच्चों को कौन से संस्कार दे रहे हैं (बालवीथी) 49

कुरआन ज्योति

(8) उनका अन्तिम ठिकाना जहन्नम होगा उन बुराइयों के बदले में जिन्हें वे (अपने इस ग़लत विश्वास और ग़लत रवैये के कारण) करते रहे।[12]

(9) और यह भी सत्य है कि जो लोग ईमान लाए (अर्थात जिन्होंने उन सच्चाइयों को मान लिया जो इस किताब में प्रस्तुत की गयी है) और भले अमल करते रहे, उन्हें उनका रब उनके ईमान की वजह से सीधी राह चलाएगा, नेमत भरी जन्नतों में उनके नीचे नहरें बहेंगी।[13]

–क़ुरआन, 10 : 8,9

12. यहां फिर दावे के साथ-साथ उसकी दलील भी संकेत में बता दी गयी। दावा यह है कि आख़िरत के विश्वास के इन्कार का अनिवार्य और निश्चित परिणाम जहन्नम है, और दलील यह है कि इस विश्वास का इन्कार करने वाले या इस पर अपना कोई विचार न रखने वाला इन्सान उन बुराइयों को करता है जिनकी सज़ा जहन्नम के सिवा और कुछ नहीं हो सकती। आख़िरत के इस विश्वास पर यह एक और प्रकार की दलील है। पहली तीन दलीलें बौद्धिक दलीलों जैसी थीं और यह अनुभवों पर आधारित दलील है। यहां इसका सिर्फ़ संकेत में उल्लेख किया गया है, मगर क़ुरआन में अलग-अलग अवसरों पर हमें इसका विस्तृत विवरण मिलता है। इस दलील का सार यह है कि इन्सान का निजी रवैया और इन्सानी गिरोहों का सामूहिक रवैया कभी उस समय तक सही नहीं हो सकता, जब तक यह चेतना और यह विश्वास इन्सानी आचरण में गड़ा हुआ न हो कि हमें अल्लाह के सामने अपने-अपने कर्मों का जवाब देना है। अब सोचने की बात यह है कि आख़िर ऐसा क्यों है ? क्या कारण है कि इस चेतना और विश्वास के ग़ायब या कमज़ोर होते ही इन्सानी चरित्र व आचरण की गाड़ी बुराई की राह पर चल पड़ती है। अगर आख़िरत का विश्वास वास्तविकता के मुताबिक़ न होता, और उसका इन्कार सच्चाई के विरुद्ध होता तो संभव न था कि इस मानने और न मानने के ये नतीजे एक अनिवार्य शान के साथ बराबर हमारे अनुभव में आते। एक ही चीज़ से बराबर सही नतीजों का निकलना और उसके न होने पर चीज़ों का हमेशा ग़लत हो जाना इस बात का पक्का प्रमाण है कि वह चीज़ अपने आप में सही है।

(कहा जा सकता है कि अल्लाह और आख़िरत के बहुत-से इन्कारी भी अच्छा चरित्र रखते और सदाचारी होते हैं, लेकिन यह विचार या यह आपत्ति ऊपर-ऊपर देखने का नतीज़ा होगी।) फिर भी अगर अल्लाह और आख़िरत का इन्कारी सच में दुनिया में ऐसा मौजूद है जो स्थायी रूप से कुछ नेकियों का पाबन्द और कुछ बुराइयों से बचा हुआ है तो वास्तव में उसकी यह नेकी और परहेज़गारी उसके जीवन के भौतिकवादी दृष्टिकोण का परिणाम नहीं है, बल्कि उन धर्म-प्रभावों का फल है जो अनजाने तौर पर उनके मन में मौजूद है। उसकी नैतिक पूंजी धर्म से

(शेष पृष्ठ 17 पर)



अल्लाह का भय

● हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि॰) कहते हैं कि हमसे अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने जो सच्चे और माने हुए सच्चे हैं–बयान किया : "तुममें से प्रत्येक व्यक्ति की संरचना इस प्रकार होती है कि अपनी मां के पेट में चालीस दिन तक वह वीर्य रूप में रहता है फिर उतने ही दिन वह लोथड़े के रूप में रहता और फिर उतने ही दिनों वह मांस की बोटी के रूप में रहता है । फिर फ़रिश्ता भेजा जाता है, तो वह उससे रूह फूंकता है, फिर उसे चार बातों को लिखने का आदेश होता है : उसकी रोज़ी, उसकी आयु, उसका कर्म और यह कि वह अभागा है या भाग्यवान । तो उसकी सौगन्ध जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, तुममें से एक व्यक्ति जन्नत वालों जैसा कर्म करता रहता है यहां तक कि उसके और जन्नत के बीच केवल एक हाथ की दूरी रह जाती है, तो तक़दीर का लिखा उससे आगे हो जाता है और वह दोज़ख़ (नरक) वालों जैसा कर्म करने लगता है और दोज़ख़ में दाख़िल हो जाता है । और तुममें से एक व्यक्ति दोज़ख़ वालों जैसा कर्म करता रहता है यहां तक कि उसके और दोज़ख़ के बीच केवल हाथ भर की दूरी रह जाती है । तो तक़दीर का लिखा उससे आगे हो जाता है और वह जन्नत वालों जैसा कर्म करने लगता है और वह जन्नत में दाख़िल हो जाता है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अदी बिन हातिम (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "तुममें से प्रत्येक व्यक्ति से उसका रब बात करेगा इस तरह कि अल्लाह के और उसके बीच कोई दुभाषिया न होगा । वह अपनी दायीं ओर देखेगा, तो उसे वही दिखायी देगा जो उसने आगे भेजा है । और वह अपनी बायीं ओर देखेगा, तो उसे बस वही दीख पड़ेगा जो उसने आगे भेजा है । वह अपने सामने देखेगा, तो उसे अपने सम्मुख बस आग ही दिखायी देगी । अतः आग से बचो चाहे खजूर के आधे टुकड़े के द्वारा ही सही ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू बरज़ह नजलह बिन उबैद अल-असलमी (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "बन्दे के क़दम (क़ियामत के दिन) अपनी जगह से हिल नहीं सकते जब तक कि उससे उसके जीवनकाल के विषय में न पूछ लिया जाए कि उसे उसने किन कामों में समाप्त किया ? और उसके प्राप्त किये हुए ज्ञान के विषय में कि उसने उसका उपयोग कैसे किया ? उसके धन के विषय में कि उसने उसको कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया ? और उसके शरीर के विषय में कि उसको उसने किस काम में घटाया ।"

तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा "जो डरता है वह रात के शुरू ही में चल पड़ता है और जो रात के पहले हिस्से में चल पड़ता है वह मंज़िल तक पहुंच जाता है । जान लो, कि अल्लाह का पण्य पदार्थ बहुमूल्य है । जान लो कि अल्लाह का पण्य पदार्थ जन्नत है ।

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन' है ।

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

सार्वभौमिक धर्म इस्लाम

इस्लाम इन्सान का मौलिक, वास्तविक एवं स्वाभाविक धर्म है । यह केवल एक आस्था नहीं, अपितु जीवन में अनुकरण करने और आत्मसात करने की तीव्र प्रेरणा देने वाला धर्म है । इस्लाम एक पूरी जीवन पद्धति है । यह इन्सान को जीवन के सभी क्षेत्रों व गतिविधियों में मार्गदर्शन करता है, और वह भी ईश्वरीय मार्गदर्शन ! यह एक सार्वभौमिक धर्म है, अतएव इसका नाम किसी क़ौम, जाति, क्षेत्र या अन्य किसी भौतिक पहचान पर नहीं है, अपितु पालनहार प्रभु और उसके बन्दों के मधुर संबंधों पर है । इस्लाम का अर्थ है–ईश्वर की बन्दगी और उसके आगे पूर्ण समर्पण । क़ुरआन कहता है कि अल्लाह की सच्चाई आरंभ से एक है । दुनिया का कोई देश और कोई कोना ऐसा नहीं जहां अल्लाह के पैग़म्बर न भेजे गये हों । उन्होंने इन्सानों को हक़ और सच्चाई की शिक्षा दी, परन्तु सदैव ऐसा हुआ कि लोगों ने कुछ समय के बाद अपनी स्वार्थपरता के कारण कल्पना और अंधविश्वास से विभिन्न मिथकों और झूठी बातों के सहारे वास्तविक धर्म-शिक्षाओं को विकृत कर डाला । महादयालु, कृपाशील अल्लाह ने फिर भी इन्सानों पर कृपा दृष्टि की और अपने अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल) को भेजा । आप (सल्ल०) के द्वारा इस्लाम की पूर्ण और प्रमाणिक शिक्षा पेश की । इस्लाम की शिक्षाओं में सर्वप्रथम शिक्षा यह है कि अल्लाह एक है और केवल उसी की बन्दगी की जानी चाहिए ।

इसकी शिक्षाएं इन्सानियत के लिए सर्वथा हितकारी-कल्याणकारी हैं । ये किसी एक समुदाय या क़ौम की सम्पत्ति न होकर सार्वभौमिक और सर्वजन की सम्पत्ति हैं । अतः यह सार्वजनिक, जगतव्यापी एवं सर्व कल्याणकारी धर्म है । सहज रूप से अल्लाह की प्रसन्नता, सामीप्य एवं लोक-परलोक की सफलता प्रत्येक आस्थावान मनुष्य को अभीष्ट है । यह उसी एक जीवन-प्रणाली द्वारा संभव है, जो मानवजाति के संगठन को अस्त-व्यस्त नहीं करती एवं उसके विचार-व्यवहार को द्वंदात्मक संघर्ष में नहीं ग्रस्त करती तथा जो आख़िरकार मानव-प्रकृति और जगत-प्रकृति से नहीं टकराती । यही इस्लामी जीवन-प्रणाली है । इस्लाम इसलिए नहीं आया कि केवल नैतिक क्षेत्र में आत्मा को संवारे, वह लोगों में मात्र चेतना और अनुभूति बनकर रहे और मस्जिदों में केवल एक उपासना-पद्धति बनकर रह जाए । अपितु यह मानव-जीवन को पूरी तरह अल्लाह के आदेश के अनुरूप ढालना चाहता है । यह लोगों को उनके धर्म से छुड़ाना चाहता, बल्कि उनके वास्तविक धर्म का उनको पुनः अनुगामी बनाना चाहता है । दुनिया में विभिन्न धर्म हैं । हर धर्मावलंबी समझता है कि सत्य केवल उसी के पास है और बाक़ी सब असत्य पर हैं । यह वास्तविक से परे बात है । सत्य तो केवल एक ही हो सकता है । इस्लाम सत्य में असत्य की मिलावट को दूर कर उसे विशुद्ध और पवित्र बनाता है ।

मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीबाग, (झारखण्ड)

नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

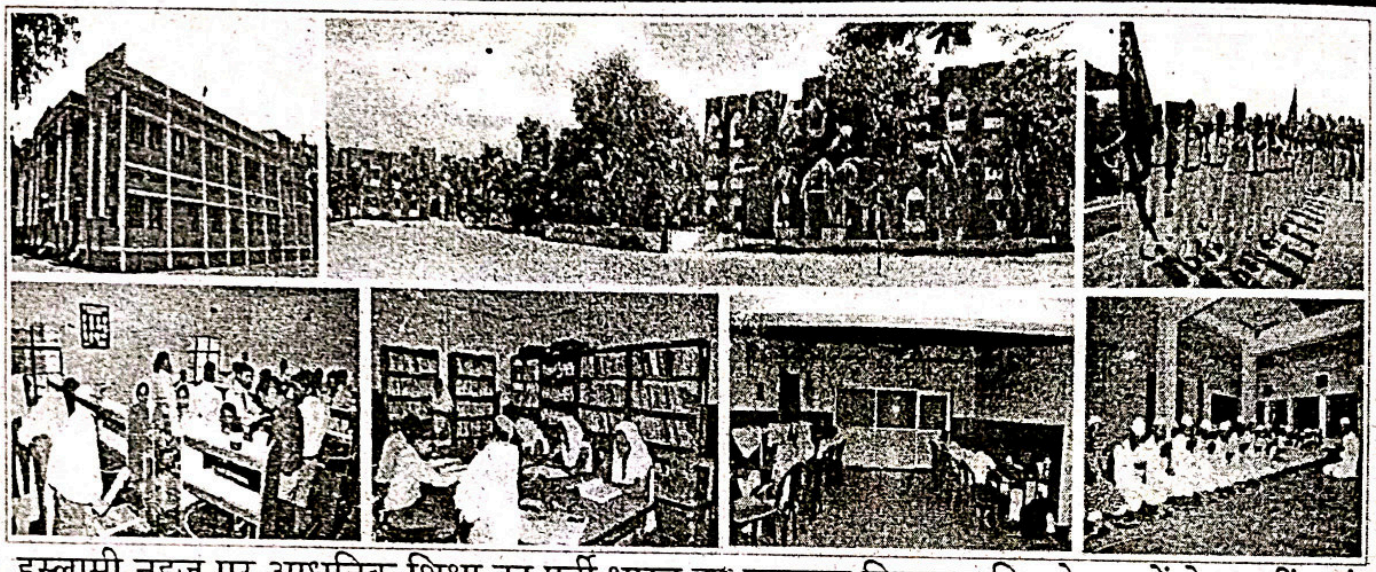

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

एस॰एम॰ नईम	साद राशिद ख़ान नदवी	वकील अहमद
एम.ए., बी.एड.ए (अलीग.)	फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ	एम एस सी., बी.एड.
निदेशक	छात्रावास अधिक्षक	प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोबाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई॰मेल : hmpt.mission@gmail.com

बौद्धिकता का अर्थ

प्रकृति हमें कई महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाती है । जैसे-पतझड़ का मतलब पेड़ का अंत नहीं है । इस पाठ को जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में आत्मसात किया उसे असफलता से कभी डर नहीं लगा । ऐसे व्यक्ति अपनी हर असफलता के बाद विचलित हुए बग़ैर नये सिरे से सफलता पाने की कोशिश करते हैं । वे तब तक ऐसा करते रहते हैं जब तक सफलता उन्हें मिल नहीं जाती । इसी तरह फलों से लदे, मगर नीचे की ओर झुके पेड़ हमें सफलता और प्रसिद्धि मिलने या संपन्न होने के बावजूद विनम्र और सज्जन बने रहना सिखाते हैं ।

प्रकृति ने हमें दो महत्वपूर्ण अनुदान दिये हैं-एक समय और दूसरा क्षमता । किंतु हमारे पास सीमित समय व क्षमता है । इसी समयावधि में हमें अपने निर्धारित कर्तव्यों के पालन के साथ जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति भी करनी है । इसीलिए जीवन का प्रत्येक क्षण अनमोल है, क्योंकि समय के सदुपयोग पर ही जीवन का विकास संभव है । किसने कितने समय के अनुसार कार्य किया उसी के अनुरूप उसे उपलब्धियां मिलती हैं ।

समय की तीन अवस्थाएं हैं-भूत, वर्तमान एवं भविष्य। सिर्फ़ वर्तमान ही हमारे हाथ में होता है, जबकि भविष्य वर्तमान का प्रतिफल होता है और भूत को हम मिटा नहीं सकते । वर्तमान में खड़े रहने की सामर्थ्य विरलों में ही होती है । वर्तमान समय का उपयोग हम कर नहीं पाते । प्राय: हम अतीत की यादों में खोए रहते हैं या फिर भविष्य की कल्पनाओं में डूब जाते हैं । यदि वर्तमान का उपयोग करते भी हैं तो वह भी आधे-अधूरे मन से करते हैं । इसका परिणाम यह होता है कि महत्वपूर्ण वर्तमान क्षण हम से छूट जाता है ।

वर्तमान समय की उपेक्षा करके कोई भी इन्सान प्रगति नहीं कर सकता, क्योंकि हम से जो कुछ कर सकना संभव है वह सिर्फ़ वर्तमान में ही है । हम चाहे वर्तमान समय का उपयोग करें या न करें, प्रत्येक क्षण हमारे हाथों से रेत के समान छूट रहा है और एक दिन हमारी मुट्ठी ख़ाली हो जाएगी । इसलिए हमें सचेत होकर अपने वर्तमान समय का अधिकतम सदुपयोग करना चाहिए ।

जो व्यक्ति अपने अतीत के बारे में ज़्यादा सोचते होते हैं, अपने अतीत में ही खोए रहते हैं, वे प्राय: मनोरोगी हो जाते हैं, क्योंकि मनोरोग अतीत की ग्रंथियों का ही परिणाम होता है और जो अपने भविष्य की कल्पनाओं में डूबे रहते हैं, वे शेख़चिल्ली व पलायनवादी हो जाते हैं । वे भी अपना महत्वपूर्ण समय शेख़चिल्ली की तरह कोरी कल्पनाओं में नष्ट कर देते हैं ।

हम प्राय: भूत व भविष्य के झूले में झूलते रहते हैं, पर जो करना है वह नहीं करते और वर्तमान समय की अवहेलना करते हैं । वर्तमान समय की उपेक्ष ही दुर्भाग्य का कारण है । इस संसार में कोई भी व्यक्ति वर्तमान समय की उपेक्षा कर कभी सुखी, शांत व उन्नत नहीं हो पाया है । वर्तमान समय का जो सदुपयोग करता है, वह अपने जीवन में कोई भी उपलब्धि पा लेता है ।

बौद्धिक व्यक्ति के जीवन का परम उद्देश्य लोक कल्याण करते हुए जीवन से मुक्ति की प्राप्ति है । अतीत और भविष्य की सोच व कल्पनाएं ही मनुष्य को अपने जीवन के महान उद्देश्य लोक कल्याण से भटकाती हैं । भ्रम तथा व्यर्थ की कल्पनाओं से भरा सारा मायाजाल अतीत व भविष्य से आता है । वर्तमान समय का सदुपयोग ही वह मार्ग है, जिसके द्वारा हम जीवन के महान उद्देश्य लोक कल्याण को प्राप्त कर सकते हैं । वर्तमान में टिकने पर ही विकास संभव है । जो वर्तमान में जितना ज़्यादा टिकेगा, वह संसार और जीवन के महत्वपूर्ण उद्देश्य लोक कल्याण, दोनों क्षेत्रों में उतना ही सफल होगा ।

जो कुछ करने की क्षमता है, वह इसी पल में है । यदि हम अपने जीवन में कुछ करना चाहते हैं तो वर्तमान क्षण को व्यर्थ में न जाने दें । जीवन कितने ही तरह से खोता है, पर सच तो यह है कि हमें होश ही नहीं । हम अपनी यादों, सपनों व इच्छाओं के पीछे दौड़ते रहते हैं और जाने-अनजाने हम वर्तमान समय की उपेक्षा करते हैं । यदि जीवन को

संभालना व संवारना है तो अभी से हमें वर्तमान के प्रति सचेत होना होगा ।

हमारा अतीत हमें जकड़े रहता है, हमें इससे बाहर आना होगा, क्योंकि अतीत की जकड़न ही मनोरोगों का कारण है । अतीत के परिष्कार से ही वर्तमान में टिकने की क्षमता आती है । वर्तमान में जीने वाला कभी अपराध नहीं कर सकता, क्योंकि वर्तमान में जीना ही होश में रहना है । प्राय: व्यक्ति अपनी कल्पनाओं के कारण ही भयभीत होते हैं, जबकि वास्तविकता वैसी नहीं होती । अपने अतीत में रहने के कारण ही व्यक्ति अवसाद से ग्रस्त हो जाता है और जो भविष्य में डूबा रहता है, वह सारहीन कल्पनाओं तथा व्यर्थ चिंता का शिकार हो जाता है । वर्तमान में रहने वाला ही सुख, शांति व प्रसन्नता प्राप्त है ।

आज तरह-तरह के नशों की खोज की गयी है, क्योंकि हम वर्तमान का सामना नहीं करना चाहते । वर्तमान का सामना करने से डरते हैं । वर्तमान हमारे सामने अपनी वास्तविकता को लाकर खड़ा कर देता है, पर हम अपनी वास्तविकता को स्वीकार नहीं करना चाहते । वर्तमान से पलायन का सबसे सुगम मार्ग है नशा, क्योंकि नशा हमें बेहोशी देता है । सारे नशों का आविष्कार वर्तमान से भागने के लिए ही हुआ है । पलायन की सुविधा देता है नशा, पर पलायन हमें मनोरोगी भी बनाता है, क्योंकि मनोरोगी परिस्थितियों से भाग लेता है । जिस समय हम संघर्ष करते हैं, वह क्षण होश का होता है । होश में जीने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, अपनी वास्तविकता को स्वीकारना पड़ता है, जबकि हम अपनी वास्तविकता को स्वीकारना नहीं चाहते और न ही संघर्ष करना चाहते हैं, क्योंकि हम अपनी वास्तविकता व संघर्ष, दोनों से ही घबराते हैं । जीवन का वास्तविक विकास तो संघर्ष में ही है और संघर्ष वही कर सकता है, जो होश में जीता है ।

कई लोग अपनी पूर्व में हुई ग़लतियों के कारण उन्हीं के बारे में सोचते व मन ही मन पछताते रहते हैं या फिर किन्हीं कल्पनाओं में खोए रहते हैं, जबकि हमें सिर्फ़ वर्तमान के बारे में ही सोचना चाहिए, क्योंकि अतीत की ग़लतियों व भविष्य क व्यर्थ चिंता का निदान सिर्फ़ वर्तमान के सुदपयोग में है वर्तमान का सदुपयोग वही कर सकता है, जो होश में जीता है । यह तो सच है कि हम एक क्षण भी बिना कर्म किये नहीं रह सकते, क्रियाशील रहना हमारा स्वभाव है और क्रियाशीलता में ही हमारा विकास संभव है । यदि सचेत होकर कर्म किया जाए तो बहुत सारे अनावश्यक कार्यों व अपराध करने से बच सकते हैं । वर्तमान में जीना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार तथा कर्तव्य है ।

जिस दिन हम कुछ अच्छां कार्य करते हैं तो उस दिन हमें बहुत अच्छा लगता है, एक विश्वास जगता है और भीतर से आत्म संतोष भी अनुभव होता है, पर जब सारा दिन यूं ही कोरी कल्पनाओं और योजनाओं को बुनने में गुज़ार दिया जाता है, तो खोखलापन व बेचैनी अनुभव होती है । इसलिए हमें सचेत होकर क्रियाशील रहना आवश्यक है अन्यथा धीरे-धीरे शरीर और मन, दोनों ही बेकार हो जाएंगे । यह सच है कि कार्य करने में बाधाएं तो आएंगी और टूटेंगी भी और निरंतर करते चले जाएं तो एक दिन उपलब्धियां मिलेंगी ।

प्रदीप कुमार सिंह 'पाल'
एल्डिको, रायबरेली रोड, लखनऊ (उ०प्र०)

बाल श्रमिकों की सुध लें

उस दिन सायंकाल अपने कुछ मित्रों के साथ प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक शहर की एक चायशाला में चाय पान हेतु गया । कप में चाय की गरमागरम चुस्कियों के बीच मेरी निगाह उस किशोर पर गयी जिसके दुकान में दाख़िल होते ही दुकान मालिक ने अपनी मज़बूत उंगलियों से कसकर सिर का बाल पकड़ा और दूसरे हाथ से गाल पर तीन चार ज़ोरदार तमाचा जड़ दिया । मुश्किल से पन्द्रह सोलह साल की उम्र से ज़्यादा का न रहा होगा किशोर । मालिक के तमाचा और डांट-फटकार से डरा-सहमा वह आंख की पलकों में तरल आंसुओं को दबाये चुपचाप नल के पास जाकर उचकुन से ग्राहकों की जूठी प्यालियां-तश्तरियां धोने लगा । मालिक का पारा गरम और अशांत था ।

वह मेरी तरफ़ मुड़कर कहने लगा, 'भइया ! मैं इस कमीने को रोज़ाना सुबह-शाम दो वक़्त की रोटी, साल भर में दो पैंट-शर्ट और दो सौ रुपया माहवार तनख़्वाह देता हूं। मगर यह इतना कामचोर और जंगरचोट्टा है कि बाज़ार से चाय की पत्ती और चीनी लेकर एक घंटे के बाद आ रहा है । दुकान में कस्टमर आकर चले जाएं, ज़रा भी परवाह नहीं है इसको । पार्क में जाकर पतंग उड़ा और गुलछर्राबाज़ी कर रहा होगा ।

यह तो एक नमूना मात्र है । समाज में ग़रीब वर्ग के ऐसे

न जाने कितने मासूम कमसिन किशोर हैं जिन्हें पेट की भूख मिटाने तथा परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने की मजबूरी में सुबह से लेकर देर गये रात तक होटलों, ढाबों और रेस्तरांओं में ग्राहकों की जूठी थाली, गिलास, कप-प्लेट, कटोरी वग़ैरह धोना पड़ता है और बदले में उन्हें बतौर मेहनताना मिलता क्या है–माहवार दो चार सौ रुपये और असावधानीवश धोते समय प्याली टूट जाने पर मालिक की डांट-फटकार ऊपर से । उनके परिवार की माली हालत ठीक तथा संतोषजनक नहीं है । पिता का देहांत हो चुका है या जीवित हैं भी तो उनकी आमदनी इतनी अल्प है कि उतने में पूरा नहीं पड़ता । मुफ़लिसी और तंगहाली में मजबूरन ऐसे किशोरों को परिवार का ख़र्च पूरा करने के लिए पढ़ाई-लिखाई और खेल-कूद की नाजुक उम्र में होटलों-ढाबों में काम करना पड़ता है । कुछ किशोरों को रेलवे स्टेशनों के प्लेटफार्मों पर घूम-घूमकर पत्र-पत्रिकाएं बेचना पड़ता है ।

कुछ किशोर दौरी में उबला चना-प्याज और अदरक की महीन कतरन के साथ नींबू गारकर और कुछ किशोर ट्रेन की बोगियों में जाकर मूंगफली, रेवड़ी और सस्ते क़िस्म के बिस्कुट बेचने लगते हैं । कुछ तो ऐसे हैं जो चमड़े के बैग में जूते का तस्मा, ब्रश और बूट पालिश रखकर रेलवे स्टेशनों तथा रोडवेज बस अड्डों पर लोगों को जूता पालिश का धंधा करने लगते हैं ।

बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था में उनके नाजुक कंधों पर जीविकोपार्जन का अनचाहा बोझ लाद इस क़दर लाद दिया जाता है कि उन्हें इस बात का ज़रा भी एहसास नहीं हो पाता कि बचपन ज़िन्दगी के किस गलियारे से आकर कब कहां खो गया ।

धनाढ्य वर्ग तथा उच्च मध्यम वर्ग के बच्चों को यूनीफार्म में सज्जित होकर कान्वेंट स्कूलों में पढ़ने के लिए जाते देखकर इनके मन की अव्यक्त पीड़ा का सहज ही अनुमान किया जा सकता है । चलती ट्रेन में रेवड़ी-बिस्कुट बेचने वाले तथा हाकरी करने वाले कमसिन किशोरों से भी ज़्यादा कष्टप्रद स्थिति उन बच्चों तथा किशोरों की है जो ग़रीब मां-बाप के साथ ईंट के भट्टों पर काम करने को अभिशप्त हैं । देश में ऐसे बदक़िस्मत बच्चों की तादाद कम नहीं है ।

देश में इन ग़रीब बच्चों के कल्याण तथा ख़ुशहाली के लिए सरकारी स्तर पर अनेकानेक योजनाएं हैं । इन योजनाओं की सरिता इन बच्चों के दरवाज़े तक आते-आते सूख जाया करती है ।

इन भाग्यहीन बच्चों को इस बात की जानकारी ही नहीं हो पाती कि उनके लिए सरकार ने कौन-कौन सी योजना संचालित कर रखी है और न विभागाधिकारियों को इस बात में इतनी दिलचस्पी तथा इतनी फ़ुरसत है कि वे ग़रीब अभावग्रस्त जीवन-यापन करने वाले ऐसे परिवारों के बीच जाएं तथा उनकी ख़ुशहाली और स्तरोन्नयनार्थ योजनाओं के तहत पहल करें । इन ग़रीब परिवारों तथा ईंट-भट्ठों और होटलों में हाड़तोड़ काम करने वाले बाल श्रमिकों की बाल श्रम के बारे में भी जानकारी है और न कोई उन्हें इस संबंध में बताने वाला है ।

विद्या प्रकाश
अचला भाट मार्ग, सिपाह, जौनपुर (उ०प्र०)

नफ़रत का कारोबार

मैं कहीं पढ़ रहा था जिसमें आई०एस० के प्रवक्ता ने अपने साथियों/अनुयायियों से कहा कि दुश्मनों को गोली से मारो, गोली नहीं मिलती तो डंडों से मारो, अगर डंडे नहीं मिलते तो हाथों से मारो और अगर कुछ नहीं कर सकते तो उनके चेहरे पर थूक दो ।

आख़िर इन लोगों की दूसरों से इतनी और इस हद तक नफ़रत क्यों ? जब आपके प्रति किसी को इतनी नफ़रत होती है तो ज़ाहिर है उसे आपकी हत्या करने में क़तई गुरेज़ नहीं होगा । प्रश्न यह है कि आख़िर यह नफ़रत किन लोगों के ख़िलाफ़ है । ज़ाहिर है यह इन्सानियत के ख़िलाफ़ है ।

घटोत्कच
नयी दिल्ली

भूल सुधार

'अतीत के झरोखे से' स्तंभान्तर्गत मुमताज़ महल के बारे में पृष्ठ 37 पर प्रकाशित सामग्री में उनका शाहजहां से निकाह 10 मई 1912 को बताया गया, जबकि होना चाहिए 10 मई 1612 । प्रूफ़ की इस ग़लती का सुधार अपेक्षित है । यह प्रूफ़ की ही ग़लती है, क्योंकि इसी पृष्ठ पर कई बार सोलहवीं सदी का उल्लेख किया गया है ।

मुहम्मद रफ़ीक़ ख़ां
रोशनाबाद, फ़र्रूख़ाबाद (उ०प्र०)

"फ़ने तालीम व तर्बियत" भाग-1 का हिन्दी में पहला संस्करण

शिक्षण-प्रशिक्षण कला

(भाग-1)

अफ़ज़ल हुसैन

एम०ए०एल०टी

इस पुस्तक में बच्चों की मनोस्थिति, शिक्षा के नियम, शिक्षक के गुण, प्रधानाचार्य के दायित्व, शिक्षण के तरीक़े, प्रशिक्षण के दंग, पाठशाला की व्यवस्था, शिक्षा संस्थाओं की सफलता की शर्तें और सहयोग प्राप्त करने के स्वरूपों पर विचार से प्रकाश डाला गया है ।

इसमें माता-पिता और शिक्षकों के लिए सरल और सुगम भाषा में बच्चों के इस्लामी दृष्टिकोण से शिक्षण और प्रशिक्षण के नियम बयान किये गये हैं । आशा है कि उर्दू संस्करण ही की तरह इसे भी आसामान्य लोकप्रियता प्राप्त होगी ।

साइज : $\frac{23 \times 36}{16}$ कुल पृष्ठ : 552 मूल्य : 325-00

MMI PUBLISHERS

D-307,Dawat Nagar,Abul Fazl Enclave,Jamia Nagar
New Delhi-110025 • Phone: 26981652,26984347
• Fax: 26987858 • E-mail: mmipublishers@gmail.com
• website: www.mmipublishers.net

इस्लाम : सारी मानवता के लिए

■ अबू मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी

इस्लाम के बारे में तरह-तरह के भ्रम फैले हुए हैं और उनके अनेक कारण हैं। उनमें से एक कारण बाहर से भारत में आने वाले मुसलमानों का इतिहास है जो स्वयं भी इस्लाम के संबंध में भ्रम जनम है और वह जैसा कुछ है उससे कहीं अधिक इस्लाम विरोधी विद्वानों और इतिहासकारों ने उसे इस्लाम के विरुद्ध बना दिया।

बाहर से भारत में जो मुसलमान आये वे सूफ़ी (संत) थे या व्यापारी और सैनिक। मुसलमान साधु-संतों ने केवल इस्लाम का नैतिक और आध्यात्मिक भाग व्यक्त किया और वह इतना ही कर सकते थे और मुसलमान सेनापतियों और सैनिकों ने तो इस्लाम के किसी पहलू को भी उचित रूप से पेश नहीं किया, न उनमें इस्लाम की सचरित्रता थी, न नैतिकता और न आध्यात्मिकता। उन्होंने सेनापति और सैनिकों के रूप में जो कार्य किये वे भी इस्लामी सिद्धांत और इस्लाम की शिक्षा और आदेश के अनुसार न थे। वे जिन शासनों और शासकों से संबंधित थे उन शासनों का विधान और नियम और उन शासकों का जीवन इस्लाम का आदर्श न था, फिर उन सेनापतियों और सैनिकों में यह योग्यता कहां से आ सकती थी कि उनका जीवन और कार्य इस्लाम का प्रतिनिधि होता और वह भारत में इस्लाम का आदर्श पेश करते। उन लोगों के द्वारा भारत में जो शासन स्थापित हुआ वह भी इस्लाम की शासन व्यवस्था के अनुसार न था। उनका कोई ऐसा कार्य न था जो इस्लाम के आदेश का उचित प्रतिनिधित्व करता, परन्तु उन सब लोगों पर इस्लाम की छाप थी, अतः देशवासियों ने इन सब कार्यों और आचरणों को इस्लामी शिक्षा का परिणाम समझ लिया और उन्हीं के अनुसार अपनी धारणा बना ली।

मुसलमानों को ज़िम्मेदारी थी कि वे शुद्ध इस्लामी जीवन व्यतीत करते और देशवासियों को यह देखने का सुअवसर प्राप्त होता कि इस्लामी जीवन मानवजाति के लिए कितना सुखदायक, कितना कल्याणकारी, कितना मंगलमय होता है। किन्तु आमतौर पर ऐसा हुआ नहीं, इसका परिणाम यह हुआ कि देशवासियों के मन में इस्लाम के प्रति भ्रम और भी सघन और अंधकारमय हो गया। खेद की बात यह है कि आमतौर से मुसलमानों का वर्तमान जीवन भी इस्लाम के अनुसार नहीं, न मुसलमानों का राजनैतिक जीवन इस्लाम के अनुसार है न सामाजिक जीवन और न साधारण व्यावहारिक जीवन, उनके जीवन के सभी अंग इस्लाम के प्रति भ्रम ही उत्पन्न करने वाले हैं।

जब मुसलमान अपने व्यावहारिक जीवन से इस्लाम के प्रति द्वेष का सृजन कर रहे हों तो कोरी बातों का कुछ विशेष मूल्य नहीं रह जाता, मूल्य तो उन्हीं बातों का होता है जिनकी पुष्टि व्यवहार और कर्म से हो रही हो, लेकिन मुसलमानों ने इतना भी न किया कि देश की विभिन्न भाषाओं और लिपियों द्वारा लिखित रूप ही में शुद्ध और पूर्ण इस्लाम उपस्थित करते और इसी प्रकार देशवासियों को यह बताते कि यथार्थ में इस्लाम क्या है ? और वह मानवजाति को किस आदर्श, किस व्यवहार और किस जीवन पद्धति का आदेश देता है।

वर्तमान सांप्रदायिक संघर्ष और संकट में मुसलमानों की इस त्रुटि और अवहेलना का बहुत बड़ा भाग है, यदि अब भी देशवासियों को विभिन्न भाषाओं और लिपियों द्वारा बताया जाए कि इस्लाम वह नहीं है जो उन्होंने मुसलमानों के कर्म और आचरण से समझा है। इस्लाम इससे बहुत कुछ भिन्न है और जो वास्तविक इस्लाम है इसका उनको ज्ञान कराया जाए तो आशा ही नहीं विश्वास है कि इस्लाम के प्रति देशवासियों की भावना बदल जाए और वे इस्लाम को पराई नहीं, अपनी चीज़ समझने लगें।

इस्लाम का अर्थ

जिस प्रकार संसार में बहुत-सी जातियां और बहुत से धर्म हैं उसी प्रकार मुसलमानों को भी एक जाति समझ लिया गया है और इस्लाम को केवल उन्हीं का धर्म। लेकिन यह एक भ्रम है। सच यह है कि मुसलमान इस अर्थ में एक जाति नहीं हैं, जिस अर्थ में वंश, वर्ण और देश के संबंध से जातियां बना करती हैं और इस अर्थ में इस्लाम भी किसी

विशेष जाति का धर्म नहीं है । यह समस्त मानवजाति और पूरे संसार का एक प्राकृतिक धर्म और स्वाभाविक जीवन सिद्धांत है । केवल किसी वंश, वर्ण, जाति और किसी भूखंड के संबंध से न कोई इस्लाम में प्रवेश कर सकता है और न इस संबंध के विच्छेद से कोई इस्लाम से बाहर हो सकता है । जो इस्लाम के सिद्धांतों और आदेशों को मानता और उनके अनुसार चलता है वह मुसलमान है और जो उसके सिद्धांतों को नहीं मानता और उसके आदेशों के अनुसार नहीं चलता वह मुसलमान नहीं हो सकता, चाहे वह किसी वंश, जाति और भूखंड का हो ।

इस कथन हो सिद्ध करने के लिए बाहरी लंबे-चौड़े प्रमाणों की आवश्यकता नहीं, यह उद्देश्य इस्लाम के नाम से ही भली-भाँति सिद्ध है, इस्लाम शब्द का अर्थ बताता है कि न उसका संबंध किसी विशेष व्यक्ति से है, न किसी विशेष जाति से, न किसी विशेष देश से, इस्लाम एक स्वतंत्र शब्द है । इसका अर्थ है ईश्वर को मान लेना, ईश्वर के सामने सिर झुका देना, अपने को सर्वथा ईश्वर के समर्पण में दे देना और संपूर्ण जीवन में उसका आज्ञाकारी बन जाना अर्थात उसी की पूजा और बन्दगी करना और उसी के नियम और क़ानून के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारना ।

मानवजाति का संयुक्त धर्म : इस्लाम

इस्लाम किसी एक जाति या एक देश का धर्म नहीं, यह मानवजाति का संयुक्त धर्म है । ईश्वर की ओर से संसार में जितने धर्म नेता और धर्म शिक्षक आये उन सबका एकमात्र आदेश यही था कि ईश्वर को मानो, उसी को पूजो और उसी की आज्ञाओं पर चलो । क़ुरआन में ख़ुदा कहता है–"हमने तुमसे पहले जितने भी रसूल भेजे उनको यही आदेश दिया कि मेरे सिवा कोई पूज्य प्रभु नहीं अत: तुम मेरी ही बन्दगी करो ।" (क़ुरआन, 21:25)

"निस्संदेह हमने हर समुदाय में रसूल (संन्देष्टा) भेजे जिन्होंने यही आदेश दिया कि लोगो ! अल्लाह ही की बन्दगी और आज्ञा का पालन करो और उन लोगों से अलग रहो जो सीमा उल्लंघन करके ईश्वर की जगह स्वयं अपनी पूजा और आज्ञापालन कराते हैं ।" (क़ुरआन, 16:36)

क़ुरआन के अनुसार ऐसे धर्म नेता और पथ-प्रदर्शक हर जाति में आए–"हर उम्मत (समुदाय) के लिए एक रसूल है ।" (क़ुरआन, 10:47)

"कोई ऐसा समुदाय नहीं जिसमें (कुमार्ग के परिणाम से) सचेत करने वाला न आया हो ।" (क़ुरआन, 35:24)

"(ऐ मुहम्मद !) तुम केवल कुमार्ग के परिणाम से सचेत करने वाले हो और इसी प्रकार हर जाति में पथ-प्रदर्शक आ चुके हैं ।" (क़ुरआन, 13:7)

क़ुरआन के इन कथनों के अनुसार संसार के सारे देशों में, जिसमें भारत भी है, ख़ुदा के रसूल (ईशदूत) आये और सब उसी धर्म के प्रचारक और शिक्षा देने वाले थे जिसे क़ुरआन इस्लाम कहता है, अर्थात ईश्वर की भक्ति और आज्ञापालन का धर्म । विभिन्न देशों और जातियों में भेजे जाने वाले ईशदूतों की शिक्षा-विधि अवश्य भिन्न थी । जिस जाति में जैसी आज्ञानता और भ्रष्टता थी उसको उसी के अनुसार शिक्षा दी गयी और उसमें सुधार की वैसी ही नीति ग्रहण की गयी, परन्तु यह भेद ऊपरी था, सबकी शिक्षा की आत्मा वही एक थी, ईश-भक्ति और उसका आज्ञापालन ।

सारांश यह कि न हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) ने कभी यह दावा किया कि केवल एक वही ख़ुदा के रसूल हैं और न क़ुरआन ने यह कहा कि वही एक ईश्वरीय ग्रंथ है, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) यह बताया कि इस्लाम मानवजाति का संयुक्त धर्म है और ईश्वर के समस्त दूत और सारे ईश्वरीय ग्रंथ इसी की शिक्षा दे रहे हैं । इसी लिए क़ुरआन कहता है–

"निस्संदेह अल्लाह के निकट इस्लाम (ईश आज्ञापालन) ही सत्य धर्म और सत्य जीवन विधान है ।" (क़ुरआन, 3:19)

और एक जगह कहता है–"उससे अच्छा कथन और किसका हो सकता है जिसने लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाया, अच्छे कर्म किये और कहा कि मैं (अल्लाह की) आज्ञा का पालन करने वाला हूं ।" (क़ुरआन, 41:33)

हज़रत मुहम्मद साहब पर ईश्वर की दया और कृपा हो । वह सारे ईश्वरीय संदेशदाताओं के प्रतिनिधि और अंतिम संदेशदाता थे और क़ुरआन अंतिम ईश्वरीय ग्रंथ और सारे ईश्वरीय ग्रंथों का प्रतिनिधि और सार है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और क़ुरआन की शिक्षा के अतिरिक्त संसार में ईश्वर के किसी संदेष्टा और किसी ईश्वरीय ग्रंथ की शिक्षा पूर्ण और वास्तविक रूप में विद्यमान नहीं है । अत: जो लोग ईश्वरीय धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहें उनके लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और क़ुरआन की शिक्षाओं को मानने के सिवा और कोई मार्ग मौजूद नहीं है ।

ईश्वर और उसकी सत्ता

■ स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य

ब्रह्माण्ड में हमारी आकाशगंगा जैसी खरबों-खरबों आकाशगंगा हैं जिनमें खरबों ऐसी आकाशगंगा हैं जिनमें हमारी आकाशगंगा से लाखों गुना तारे हैं। तारों की दूरी इतनी अधिक होती है कि इसे मील या किलोमीटर में नापने की जगह प्रकाशवर्ष में नापा जाता है। हमारी पृथ्वी से दूर स्थित आकाशगंगा की अभी तक अधिकतम दूरी तेरह अरब बीस करोड़ प्रकाशवर्ष नापी गयी है।

यह दूरी कितनी हुई इसका अंदाज़ा इससे लगाइये कि प्रकाश एक सेकेंड में लगभग तीन लाख किलोमीटर चलता है इस हिसाब से एक घंटे में 108 (एक सौ आठ) करोड़ किलोमीटर दूर जाता है। यह गति आजकल हवाई जहाज़ की अधिकतम गति (1500 किलोमीटर प्रतिघंटा) का सात लाख बीस हज़ार गुना और राकेट की अधिकतम गति (तीस हज़ार किलोमीटर प्रतिघंटा) का 36 हज़ार गुना तेज़ हुई।

इतनी तेज़ गति से प्रकाश लगातार एक साल चलता रहे तो वह नौ लाख छियालिस हज़ार अस्सी करोड़ किलोमीटर की दूरी तय करेगा। नौ लाख छियालिस हज़ार अस्सी करोड़ किलोमीटर की इसी दूरी को एक प्रकाश वर्ष की दूरी कहा जाता है।

प्रकाश अपनी इस गति से लगातार तेरह अरब बीस करोड़ साल तक चलकर जितनी दूरी तय करेगा वह दूरी तेरह अरब बीस करोड़ प्रकाश वर्ष हुई जैसा कि मैंने ऊपर बताया है कि अभी तक अधिकतम इतनी दूर स्थित आकाशगंगा देखी गयी है। यह दूरी तो केवल हमारी आकाशगंगा और दूर स्थित आकाशगंगा के बीच की है जो नापी जा सकी है। ब्रह्माण्ड तो सब ओर ऐसे ही फैला हुआ है जो यह दूरी नापी गयी है वह अंतिम नहीं है। खगोलशास्त्री मानने लगे हैं कि ब्रह्माण्ड की विशालता का जो ज्ञान उन्हें है वास्तविक ब्रह्माण्ड में वैसे खरबों ब्रह्माण्ड समा जाएं या वह अनंत हो। कुल मिलाकर आज के विज्ञान के हिसाब से अल्लाह की यह रचना अनंत है जो मनुष्य की बुद्धि और गणना से परे (बाहर) है।

यदि हम ईश्वर द्वारा रचे गये ब्रह्माण्ड और उसके जीव-जन्तु तथा वनस्पति और प्रकृति की अनुशासित व्यवस्था को देखें उस पर गहराई से सोचें तो ईश्वर की असीमित अनंत ताक़त देख उसके प्रति विश्वास और श्रद्धा से मन भर जाता है।

उदाहरण के लिए जैसे पृथ्वी को लें यह ईश्वर द्वारा जीवन के लिए रची गयी कितनी व्यवस्थित और सुनियोजित योजना है। यहां जीवन के लिए सारी आवश्यक परिस्थितियां प्रकृति द्वारा कैसे योजनाबद्ध ढंग से बनायी गयीं। सूर्य से आ रही ज़हरीली पराबैंगनी किरणों से जीवन को बचाने के लिए आश्चर्यजनक ढंग से ओजोन की पर्त बिछायी गयी। जीव के खाने-पीने की तरह-तरह की व्यवस्था की गयी। यह सब इतना व्यवस्थित है कि अगर हम इस विषय पर गहराई से सोंचते हैं तो आश्चर्य में पड़ जाते हैं। यह सब अपने आप नहीं हुआ अवश्य ही किसी शक्ति ने यह व्यवस्था बनायी।

विज्ञान का नियम है कि बिना बल या ऊर्जा के कोई कार्य नहीं हो सकता। इन कार्यों में जो ऊर्जा लगी, वह चाहे गतिज ऊर्जा हो या स्थितिज उसे बल या शक्ति कहां से मिली यदि सूर्य से तो सूर्य में यह कहां से आयी यदि उसके पदार्थ के परमाणु की नाभिकीय अभिक्रिया से, तो यह अभिक्रिया कैसे शुरू हुई या इसके लिए वह पदार्थ कहां से आया। सवालं पर सवाल करने से बात वहीं पर आती है कि कैसी भी ऊर्जा हो बिना बल या शक्ति के वह उत्पन्न नहीं हो सकती।

दूसरे शब्दों में बल से ऊर्जा है और ऊर्जा से बल। इसी तरह यदि पदार्थ से ऊर्जा निकली तो उस पदार्थ का अस्तित्व ऊर्जा से ही संभव है यह प्रकृति का नियम है और प्रकृति विशुद्ध विज्ञान है। अंत में वही प्रश्न खड़ा है कि बीज से पेड़ हुआ कि पेड़ से बीज ? नास्तिकों व असत्यवादियों के पास इसके उत्तर में केवल अटकलबाज़ियां ही होगी।

ब्रह्माण्ड में या पृथ्वी में जीव कैसे और कहां से आया? मनुष्य सहित पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े पहली बार कैसे पृथ्वी पर आये ? उनकी आश्चर्यजनक और विचित्र रचना को देखें–आंख, कान सहित अन्य इन्द्रियों को देखें और इस पर गहराई तक सोचें तो क्या नहीं लगता कि सब कुछ जैसे किसी ने योजना बनाकर किया हो । सृष्टि को बढ़ाने के लिए किस तरह सभी जीवों में काम वासना को डाला गया यदि यह वासना न होती तो जीव जन्तु अपनी आबादी को न बढ़ाते । ऐसी विचित्र और आश्चर्यजनक सृष्टि (यानी मख़्लूक़ात) की रचना परमेश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता ।

यह तो इस अनंत ब्रह्माण्ड में अपने ही एक क़ण की हैसियत रखने वाली पृथ्वी का हाल है । अब सोचें कैसे व्यवस्थित ढंग से उपग्रह, ग्रह का, ग्रह, तारे का, तारा, आकाशगंगा का और आकाशगंगा, ब्रह्माण्ड में चक्कर काट रही है यदि इनमें यह गति न दी गयी होती तो इनका अस्तित्व ही न होता ।

आख़िर कौन है इनको गति देने वाला ? कुछ नास्तिक या अज्ञानी कहेंगे कि ब्रह्माण्ड में हुए महाविस्फोट ने इनको गति प्रदान की, तो हमारा प्रश्न है कि यह विस्फोट होने की परिस्थितियां किसने पैदा कीं ? फिर वही प्रश्न पर प्रश्न जिसका अंतिम उत्तर देना इन्सानी दिमाग़ की सीमा से बहुत बाहर है ।

फिर आज इन्सान के बनाए उपग्रह (सैटेलाइट) को पृथ्वी की कक्षा में इस तरह स्थापित करने के लिए कि वह अपने आप उसका चक्कर काटता रहे, यह गणना की जाती है कि उसे राकेट से कितने किलोमीटर प्रतिघंटा की स्पीड से फेंका जाए । अब प्रश्न यह है कि महाविस्फोट से अनंत तारों के बनने का जो पदार्थ फैला उन सब के लिए अलग-अलग यह गणना कैसे हुई या किसने की, जिससे अनंत तारों का वह पदार्थ (जिनसे लाखों किलोमीटर व्यास यानी मोटाई वाले अनंत विशाल तारे बने व अभी बन रहे हैं) अलग-अलग अपनी-अपनी कक्षा में स्थापित होकर अपने निश्चित रास्ते पर चक्कर लगाने लगे । क्या यह सब अपने आप हो सकता है ? मनुष्य का विवेक और तर्क इसका उत्तर न में देता है ।

ईश्वरीय किताब क़ुरआन में इसे बार-बार सर्वशक्तिमान अल्लाह (यानी परमेश्वर) का ही चमत्कार कहा गया है । इसी तरह वेदों में इस अनंत ब्रह्माण्ड को उस एक परमेश्वर (यानी अल्लाह) से उत्पन्न हुआ बताया गया है जो अनादि और अनंत है ।

यह अनंत ब्रह्माण्ड एक अनंत अबूझ पहेली है जिसकी रचना अपने आप नहीं हुई क्योंकि अपने आप कुछ नहीं होता, होने के पीछे कारण होता है और इस अनंत ब्रह्माण्ड के होने का कारण उस एक परमेश्वर (यानी अल्लाह) के अतिरिक्त कोई नहीं है, सभी प्रश्नों का यही एकमात्र संतोषजनक उत्तर है ।

यह सब विस्तार से बताने का उद्देश्य यह है कि इस अनंत ब्रह्माण्ड को रचने वाला, उसे चलाने वाला और उसका विनाश (यानी क़ियामत) करने वाला ईश्वर, इस पृथ्वी पर जन्म लेकर, कमा खाकर, बीमार होकर, बूढ़ा होकर मरने वाला व्यक्ति नहीं हो सकता जिसकी हैसियत इस अनंत ब्रह्माण्ड से तुलना में शून्य जैसी है ।

तर्क शक्ति कहती है कि ऐसा ईश्वर खाने-पीने की ज़रूरतों से परे होगा, किसी लिंग से परे होगा, कामवासना से परे होगा क्योंकि वह स्वयं उस आनंद का स्रोत है जो आनंद, कामवासना में मनुष्य को प्राप्त होता है । वह निराकार है उसका न कोई बेटा है, न बेटी । उसका न तो जन्म होता है और न वह मरता ही है और यह अल्लाह (यानी परमेश्वर) के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है ।

इस अनंत ब्रह्माण्ड को रचने वाला अल्लाह (यानी परमेश्वर) अजन्मा है, अविनाशी है, सर्वशक्तिमान और अनंत है उसके समान दूसरा कोई नहीं है । वेद कहते हैं–

'पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।'

अर्थ : वह (परमेश्वर) पूर्ण है और (उसकी) यह (रचना ब्रह्माण्ड) भी पूर्ण है क्योंकि पूर्ण से ही पूर्ण की उत्पत्ति होती है । (यहां पूर्ण का मतलब 'अनंत' है । अभी ऊपर हम ब्रह्माण्ड को अनंत सिद्ध कर चुके हैं और अनंत ही एकमात्र ऐसी पूर्णता है जो अनंत को उत्पन्न कर सकती है ।)

इसका भावार्थ है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर अनंत है और उसकी यह रचना ब्रह्माण्ड भी अनंत है क्योंकि अनंत से ही अनंत की उत्पत्ति होती है ।

इस्लाम ने सत्य का नारा 'अल्लाहु अकबर' (यानी अल्लाह ही बहुत बड़ा है) और 'ला इला-ह इल्लल्लाह' (यानी अल्लाह के अलावा दूसरा कोई पूज्य नहीं) के रूप

में इस महान सत्य का पैग़ाम दुनिया को दिया ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि इस्लाम का सत्य इस दुनिया में सदैव से, अनंतकाल से मौजूद है । दूसरे शब्दों में इस्लाम अनादि और अनंत है ।

पुस्तक के समस्त निष्कर्षों को देखने के बाद अंतिम रूप से सिद्ध होता है कि–

इस्लाम, आतंक नहीं, आदर्श है ।

इस्लाम का यह आदर्श स्वीकार करने योग्य है ।

इस्लाम केवल मुसलमानों के लिए ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए है, मानवता के कल्याण के लिए है ।

पाठक ध्यान दें कि ऐसे इस्लाम को बदनाम करने के लिए, आतंकवाद को मुसलमान से जोड़ने की बड़ी सुनियोजित साज़िश की जा रही है । मोबाइल से एस॰एम॰एस॰ भेज कर प्रचारित किया जाता है कि हर मुसलमान आतंकवादी नहीं है लेकिन हर आतंकवादी मुसलमान है ।'

आतंकवादी यदि मुसलमान ही होते तो आतंकवादी हमले मुसलमानों पर न होते, हैदराबाद की मस्जिद तथा मालेगांव (महाराष्ट्र) के ईदगाह पर यह हमले न होते ।

आतंकवाद पर मुसलमानों के विचार जानने के लिए पिछले 6 माह में मैंने हज़ारों मुसलमानों से संपर्क किया । इनमें सभी मुसलमानों के अपने पड़ोसी ग़ैर-मुसलमानों से भाई या मित्र जैसे संबंध मैंने देखे । उनमें से कोई भी मुसलमान नहीं चाहता कि निर्दोष लोगों की कोई हत्या करे ।

ग़ैर-मुसलमानों (जिन्होंने मुसलमानों का कुछ न बिगाड़ा हो) से नफ़रत करने वाला, आतंकवाद समर्थक एक भी मुसलमान मुझे नहीं मिला । इसके बाद भी यदि कोई ऐसा है तो उसके लिए सभी मुसलमानों को या इस्लाम को किसी प्रकार घुमा-फिराकर दोषी नहीं ठहराया जा सकता । वह अपवाद है और ऐसे अपवाद सब जगह होते हैं ।

आतंकवाद के दुष्परिणाम मुसलमान और ग़ैर-मुसलमान दोनों भुगत रहे हैं क्योंकि आतंकवाद का शिकार दोनों हो रहे हैं जबकि शक की नज़र से केवल मुसलमान ही देखे जा रहे हैं । आतंकवाद, आतंकवाद है उसे किसी धर्म या संप्रदाय से जोड़ना अन्यायपूर्ण है ।

मुसलमान जानते हैं कि हर आतंकवादी हमले से उन लोगों को ताक़त मिलती है जो इस्लाम को बदनाम करना चाहते हैं क्योंकि इन हमलों के बाद ग़ैर-मुसलमान भय से एक होकर लोकतंत्र यानी जम्हूरियत में एक ताक़त बन जाते हैं और इस ताक़त का फ़ायदा इस्लाम के विरोधी उठाते हैं ।

ऐसे हर हमले के बाद यह ताक़त बढ़ती ही जाती है उस क्षेत्र में तो यह अत्यंत मज़बूत राजनीतिक ताक़त हो जाती है जहां आतंकी हमला बड़ा हुआ हो या बड़ी संख्या में हुआ हो और वहां ग़ैर-मुसलमानों की संख्या अधिक हो ।

इसीलिए इस्लाम को बदनाम करने वाली ताक़तें चाहती हैं कि इस तरह के हमले बराबर होते रहें और उन्हें बैठे-बैठे मुफ़्त की ताक़त मिलती रहे । ऐसे में हम सब का यह कर्तव्य है कि ऐसे लोगों का यह उद्देश्य सफल न होने दें ।

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

चुराई हुई है और उसको वह अनुचित ढंग से अधार्मिकता में प्रयोग कर रहा है, क्योंकि वह अपनी अधार्मिक और भौतिकवाद के ख़ज़ाने में इस पूंजी के स्रोत की निशानदेही कदापि नहीं कर सकता ।

13. इस वाक्य के विषय का क्रम अत्यधिक ध्यान चाहता है : (1) इन लोगों को आख़िरत की ज़िन्दगी में जन्नत क्यों मिलेगी ?–इसलिए कि ये दुनिया की ज़िन्दगी में सीधी राह पर चले । हर काम में इन्होंने सत्यपूर्ण रीति अपनायी और असत्य रीतियों को त्याग दिया । (2) यह हर-हर क़दम पर सत्य और असत्य, सही और ग़लत का अन्तर कैसे मालूम हुआ ? और फिर इस अन्तर के अनुसार सही रास्ते पर जमने और टेढ़े रास्ते से बचने की शक्ति उन्हें कहां से मिली ?–उनके रब की ओर से, क्योंकि वही ज्ञानात्मक मार्गदर्शन और व्यावहारिक सम्मति का स्रोत है ।

उनका रब उन्हें यह मार्गदर्शन और यह सम्मति क्यों देता रहा है ?–उनके ईमान की वजह से ।

ये नतीजे जो ऊपर बयान हुए हैं किस ईमान के नतीजे हैं ?–उस ईमान के नहीं जो मात्र मान लेने के अर्थ में हो, बल्कि उस ईमान के जो दिल की गहराइयों में उतर जाए, जो चरित्र व आचरण की आत्मा बन जाए और जिसकी शक्ति से चरित्र व व्यवहार में भलाई प्रकट होने लगे ।

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL

INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL

INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright
Future & Best Economic
Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE
INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)

Contact Us : 9022665544, 9869641648

मेरा बेटा

■ विष्णु प्रभाकर

सिविल अस्पताल का नया सर्जन डॉक्टर हसन जैसे ही कमरे में दाख़िल हुआ, उसने किवाड़ बन्द कर लिए । ठंडी हवा का झोंका, जो साथ-साथ अन्दर घुस आया था, क्षण-भर के लिए उसके पिता को कंपाता हुआ ग़ायब हो गया । डॉक्टर ने एक गहरी सांस खींची और हाथ के दस्ताने उतारते हुए कहा, "अब्बा, बड़ी ख़तरनाक हालत है ।"

अब्बा जो पलंग पर लेटे थे, 'हूं' करके रह गये । डॉक्टर ने चुपचाप ओवरकोट उतारा और खूंटी पर टांग दिया, फिर अंगीठी के पास जा खड़ा हुआ, बाहर सनसन करती हुई हवा चल रही थी और उस ठंड को, जिसके थपेड़े खाते हुए वह अभी लौटा था, याद करके उसे अब भी कंपकंपी आ जाती थी । एकाएक अब्बा बोल उठे, "अब तक कितने आदमी मर चुके होंगे ?"

डॉक्टर ने जवाब दिया, "अस्पताल में कुल तीस लाशें आयी हैं ।"

"और ज़ख़्मी ?"

"सौ हो सकते हैं ।"

"मुसलमान ज़्यादा होंगे ?"

डॉक्टर क्षण भर रुका, फिर हाथों को मलता हुआ बोला, "कुछ नहीं कहा जा सकता ।"

"फिर भी ?"

वह झिझका, जैसे कुछ सोचना चाहता हो । अब्बा, तब तक उसके मुंह की तरफ़ देखते रहे । उसने हाथों को आग के आगे किया और कहा, "हो सकता है, हिन्दू ज़्यादा हों ।"

फिर कई क्षण कोई नहीं बोला । सिर्फ़ हवा दरवाज़े पर थपेड़े मारती रही । अब्बा के मुख पर अनेक भाव आये और गये, उनके तने हुए चेहरे की नसें और भी तन गयीं, एकाएक बैठे-बैठे उन्होंने कहा, "तो कोई उम्मीद नहीं ?"

"किस बात की ?" हसन ने चौंककर पूछा ।

"फ़ैसले की ।"

"फ़ैसला ?" डॉक्टर ज़बरदस्ती मुस्कराया और फिर जोश में बोला, "अब्बा, हज़ार साल इस तरह लड़ते रहने पर भी फ़ैसला नहीं हो सकता । अस्ली बात यह है कि वे फ़ैसला करना ही नहीं चाहते, वे लड़ना चाहते हैं और लड़ते रहेंगे, इसीलिए वे एक-दूसरे की बात समझने से इन्कार करते हैं ।"

"इन्कार करते हैं ?"

"हां अब्बा, मैं तो इसे इन्कार करना ही मानता हूं । समझना चाहें तो झगड़ा ही क्या है ?"

अब्बा ने एक बार अपने बेटे को देखा, फिर कहा, "शायद तुम ठीक कहते हो ।"

"शायद नहीं अब्बा, मैं बिल्कुल ठीक कहता हूं ।"

तभी किसी ने दरवाज़ा खटखटाया, डॉक्टर चौंका । पूछा, "कौन है ?"

जवाब आया, "जी, अस्पताल में डॉक्टर शर्मा ने आपको बुलाया है ।"

"क्यों ?"

"एक नया केस आया है, साब !"

"तो ?"

"साब, उन्होंने कहा है, ज़ख़्मी की हालत ख़तरनाक है, आपका आना ज़रूरी है ।"

अब्बा ने सुनकर गुस्से से कहा, "क्या वाहियात बात है, अभी आये हो । खाना न पीना । मरने दो उसको ।"

डॉक्टर बोला, "मरना तो है ही अब्बा, आज मौत के फ़रिश्ते ने हम सबको अपने परों के साये में समेट लिया है ।

और फिर किवाड़ खोले, ठंडी हवा तेज़ी से अन्दर घुसी, उन्होंने कांपते हुए स्वर में कहा, "खाना खा सकता हूं ?"

आने वाला अस्पताल का जमादार था, सकुचते हुए जवाब दिया, "साब, वह तो जल्दी बुलाये हैं ।"

डॉक्टर ने लंबी सांस खींची, कहा, "अच्छा तो कह दो, अभी आता हूं ।" और उसने जल्दी से किवाड़ बन्द कर

लिये, सीधे अंगीठी के पास आया और कहा, "खून जमा देने वाली सरदी पड़ रही है, और वे लोग लड़े जा रहे हैं, वहशी, हैवान, दोज़ख़ी, कुत्ते...!" साथ ही साथ दस्ताने पहनता रहा फिर ओवरकोट उठाया और चलते-चलते कहा, "मैं कहता हूं अब्बा, वे हैवान है, वे फ़ैसला नहीं कर सकते ।"

अब्बा अगरचे क्रोध में भरे हुए थे पर न जाने क्या हुआ कि हसन की बात सुनकर हंस पड़े । बोले, हैवान बड़ी जल्दी फ़ैसला करता है, बेटे ।"

वह कुछ जवाब देता कि इस बार अन्दर के दरवाज़े पर आहट हुई, वह मुड़ा देखा, सामने उसकी बीवी खड़ी है । उसने गरम शाल लपेट रखी है और उसके सुन्दर मुख पर क्रोध भरी मुस्कराहट है । पास आने पर वह कुछ नाराज़गी से बोली, "अभी आये और चल दिये, क्या मुसीबत है ?"

"ख़ुदा जाने क्या होने वाला है, बेगम ।"

"खाना नहीं खाओगे ?"

"कैसे खाऊं, बुलावा आ गया है ।"

बेगम के हाथ में कुछ बिस्कुट थे, उन्हें डॉक्टर के ओवरकोट की जेब में डालते हुए कहा, "चाय तो पी लेते ।"

डॉक्टर मुस्कराया बोला, "तुम बहुत अच्छी हो, बेगम !"

और फिर उसके मुंह पर आयी हुई एक लट को पीछे करते हुए वह जल्दी से मुड़ा और कहा, "अब नहीं रुक सकता, बेगम ! देर हो गयी तो शायद पछताना पड़ेगा ।"

बेगम ने कुछ जवाब नहीं दिया, उसका सुन्दर मुखड़ा परेशानी से उदास हो गया था । दुखी मन से उसने डॉक्टर को जाते देखा और देखती ही रह गयी । डॉक्टर दरवाज़ा खोलकर जल्दी-जल्दी क़दम रखता हुआ बाहर निकल गया । बूटों की आवाज़ के साथ सनसनाती हुई हवा एक बार तेज़ी से उठी और फिर धीमी पड़ने लगी । चटकनी लगाकर अब्बा फिर पलंग पर आ बैठे, तभी पास के कमरे से एक हल्की लड़खड़ाती हुई आवाज़ आयी । डॉक्टर हसन के बाबा ने पूछा, 'अनवर, हसन आया था, अब फिर कहां गया ?"

"अस्पताल !"

"क्यों ?"

"क्यों क्या, कोई और ज़ख़्मी आ गया है, यह् काफ़िर न जीते हैं न जीने देते हैं ।"

बात इतनी तल्ख़ी से कही गयी थी कि बाबा कुछ जवाब नहीं दे सके, नौकर पास बैठा था, उससे कहा, '6जा, पूछ तो उसने कुछ खाया कि नहीं, और कुछ न हो तो बिस्कुट वग़ैरह लेकर वहीं दे आ, जा...।"

उधर डॉक्टर हसन जैसे ही अस्पताल में दाख़िल हुआ, डॉक्टर शर्मा ने बेचैनी से कहा, "हसन, तुम आ गये, जल्दी करो, वह कमरा नम्बर छह में है और ऑपरेशन का सामान तैयार है ।"

हसन ने ज़रा शिकायत भरे ढंग से कहा, "ऐसी क्या बात है, खाना तक नहीं खाने दिया ।"

"क्या करूं हसन, हम लोगों का काम ही ऐसा है ।"

"केस क्या बहुत सीरियस है ?"

"हां, केस बहुत सीरियस है हसन, उसके बदन का कोई हिस्सा ऐसा नहीं है, जिस पर चोट न आयी हो । चोट भी ऐसी है कि देखकर दिल कांप उठता है ।"

"होश में है ?"

"आह, होश ? मुझे अचरज है कि वह ज़िन्दा कैसे है ?"

"क्या उसका ज़िन्दा रहना ज़रूरी है ?" हसन ने उसी तरह कहा, "उसके मर जाने पर क्या दुनिया मिट जाएगी ?"

शर्मा बोला, "मैं जानता हूं, पर जब तक वह मर नहीं जाता, तब तक उसे ज़िंदा रखने का बोझ हम पर आ पड़ा है, क्या करें ?"

वे चल रहे थे और बातें भी करते जाते थे । वे घायलों के वार्ड में दाख़िल हो चुके थे और दर्द-भरी चीख़-पुकारें सुनायी पड़ने लगी थीं, दरवाज़ा खोलते-खोलते हसन ने पूछा, "वह कौन है ?"

"एक बूढ़ा हिन्दू है ।"

"यहीं का रहने वाला है ?" "नहीं, परदेसी है । जेब में जो काग़ज़ मिले हैं उनसे पता लगता है कि वह कानपुर का रहने वाला है और उसका नाम राम प्रसाद है ।"

हसन ने धीरे से दोहराया, "राम प्रसाद, कानपुर बस ?"

"बस ।"

उन लोगों ने कपड़े बदले और फिर नर्सों और कम्पाउंडरों से घिरे हुए उस ज़ख़्मी के ऊपर झुक गये, जो बीसों ज़ख़्म खाकर ऑपरेशन की मेज पर बेहोश पड़ा हुआ था । उसकी सांस बहुत आहिस्ता-आहिस्ता चल रही थी और अधखुली

आंखें दिल में डर पैदा करती थीं ।

ऑपरेशन ख़त्म करके जब वे बाहर निकले तो पूरे पांच घंटे बीत चुके थे । वे बेहद थके हुए थे और उनके तमाम बदन में दर्द हो रहा था । वे उस हवा में इतने डूब चुके थे कि दूर तक साथ-साथ चलते रहने पर भी वे एक-दूसरे से नहीं बोले । शाम हो चुकी थी, पर हवा की सनसनाहट उसी तरह गूंज रही थी । उसके थपेड़े खाकर वे कभी कोट का कालर ठीक करते, कभी क़दम तेज़ करके गर्मी पैदा करना चाहते । उसी वक़्त एकाएक डॉक्टर शर्मा ने धीरे से कहा, जैसे नींद में बड़बड़ाते हों, "कैसा अजीब केस है ।"

डॉक्टर हसन ने भी धीरे से कहा, "पर मुझे ख़ुशी है, हम उसे बचा सकेंगे ।"

"शायद ।"

"नहीं शर्मा", हसन ने पूरे भरोसे से कहा, "मुझे यक़ीन होता है, वह बच जाएगा ।"

डॉक्टर शर्मा ने हसन की ओर देखा फिर मुस्कराकर कहा, "तुम्हें यक़ीन होता है, क्योंकि तुमने उसके लिए परिश्रम किया है ।"

"वह केस ही ऐसा था, उसे देखकर मुझे लगा कि इसे बचना चाहिए...।"

"क्योंकि उसके बचने में तुम्हारे इल्म का इम्तिहान है ।"

डॉक्टर हसन ने एकाएक डॉक्टर शर्मा को देखा । उसे जाना पड़ा, वह ठीक कह रहा है, केस जितना ख़तरनाक था, उसको बचाने का ख़याल भी उतना ही ज़्यादा था ।

यह जानकर डॉक्टर हसन को गहरा संतोष हुआ और उसने खुश होकर कहा, "मेहनत तो तुमने भी की है, शर्मा ।"

"पर तुम्हारी तरह नहीं ।"

हसन ने इस बात का जवाब नहीं दिया, पहले की तरह चुपचाप चलता रहा । उसका घर सामने दिखायी पड़ रहा था । उसी को देखकर वह बोला, "मैं समझता हूं, घर जाने से पहले तुम एक प्याली चाय पीना पसन्द करोगे ।"

शर्मा ने मुस्कराकर कहा, "ज़रूर करूंगा । सारा बदन टूट रहा है ।"

हसन हंसा और बोला, "और इस बात की क्या गारंटी है कि हमें अभी फिर उसी कमरे में नहीं लौटना पड़ेगा ?"

"हां, कौन कह सकता है ?"

"लेकिन शर्मा, उस आदमी का पूरा पता मालूम होना चाहिए । देखने में किसी बड़े घर का जान पड़ता है ।"

शर्मा ने उसी तरह कहा, "मैंने पुलिस को पूरी रिपोर्ट दे दी है । वह पता लगा लेगी और न भी लगे तो क्या है, न जाने कौन-कौन मरता है !"

"वह नहीं मरेगा, शर्मा ! उस पर आज मैंने बाजी लगायी है ।"

शर्मा मुस्कराया, "तब और भी ज़रूरत नहीं है ।"

घर आ गया, किवाड़ खोलते हुए डॉक्टर हसन ने कहा, "बैठो शर्मा, मैं चाय के लिए कहता हूं ।"

और फिर अब्बा की ओर मुड़कर कहा, "अब्बा, वाक़ई वह बड़ा ख़तरनाक केस था, लेकिन उम्मीद है कि वह बच जाएगा । शर्मा और मैं अब तक उसी पर लगे थे ।"

शर्मा ने हसन के अब्बा को आदाब अर्ज किया । जवाब देकर अब्बा बोले, "कौन है ?"

"कोई बड़ा आदमी है ।"

"एक बूढ़ा हिन्दू है । अच्छे घर का जान पड़ता है ।"

"यहीं का रहने वाला है ?"

शर्मा ने कहा, "जी नहीं, परदेसी है । जो काग़ज़ात उसकी जेब में मिले हैं, उनसे पता चलता है कि वह कानपुर का रहने वाला है और उसका नाम राम प्रसाद है ।"

अब्बा एकाएक चौंके, "क्या...क्या बताया...राम प्रसाद...कानपुर...?"

"जी ।"

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

"और कुछ ?" "जी नहीं ?"

"उसके साथ कोई और नहीं है ?"

"जी नहीं ।"

हसन लौट आया था और अब्बा की बेचैनी को ध्यान से देख रहा था, बोला, "क्या आप उसे जानते हैं ?"

अब्बा का चेहरा तन चला था और उनकी आंखों में गुस्से की हल्की लकीरें उभर आयी थीं । उन्होंने अनजाने ही तलख़ी से कहा, "वह मरा नहीं है ?"

शर्मा ने जवाब दिया, "मरने में कुछ कसर तो नहीं थी, परंतु डॉक्टर हसन ने अपनी होशियारी से उसे बचा लिया है ।

अब्बा ने अब हसन की तरफ़ ग़ौर से देखा और देखते रहे । हसन को उनका यह व्यवहार बहुत अजीब-सा मालूम हुआ । उसने अब्बा के पास जाकर पूछा, "अब्बा, क्या आप उन्हें जानते हैं ?"

जैसे बिना सुने उन्होंने कहा, "राम प्रसाद...कानपुर... उसके मुंह पर दायीं तरफ़ एक मस्सा है ?"

"है ।" "उसका रंग गोरा है और उसकी शक्ल...।"

"उसकी शक्ल", हसन ने एकाएक अब्बा की तरफ़ देखा । जैसे बिजली कौंधी हो, ऑपरेशन करते समय उसके मन में यह विचार आया था कि इसकी शक्ल तो अब्बा से मिलती है । अब्बा उसी तेज़ी से बोले, "हां, मेरी तरफ़ देखो, उसकी शक्ल कुछ-कुछ मुझसे मिलती है ?"

हसन कांपा, "अब्बा...।"

अब्बा अपनी सुध-बुध खो रहे थे । उनके चेहरे की झुर्रियों में नफ़रत उभरती आ रही थी । उन्होंने जलती हुई आंखों से हसन की तरफ़ देखा और कहा, "हां, मैं कानपुर के राम प्रसाद को जानता हूं और मैं उससे नफ़रत करता हूं ।"

हसन जैसे पागल हो चला था, "आप उससे नफ़रत करते हैं, क्यों...?"

"हां, मैं उससे नफ़रत करता हूं और उसके मरने का मुझे ज़रा भी रंज नहीं है ।"

वे बुरी तरह कांपने लगे थे । उनकी आंखों में क्रोध और उत्तेजना के कारण पानी भर आया था । पर हसन को जैसे कुछ याद आ रहा था । कुछ, वह जो प्यारा होकर भी कड़वा था, उसके अब्बा की इस बेचैनी का कारण था । "अब्बा की बेचैनी"—वह आहिस्ता से अपने-आप से बोला, "नहीं, यह केवल अब्बा की बेचैनी नहीं है, यह तो...।"

ठीक उसी समय अन्दर के कमरे के किवाड़ भड़भड़ाकर खुल गये । उसकी नज़रें उस ओर उठीं, देखा, नौकर के कंधे पर हाथ रखे डॉक्टर हसन के बूढ़े दादा अन्दर चले आये हैं । उनके बाल सफेद हो चुके थे और कमर झुक गयी थी । उनके हाथ-पैर लड़खड़ाते थे और आंखें देखने से इन्कार कर चुकी थीं । उन्हें देखकर हसन के अब्बा घबराकर उठे और दोनों हाथों से थामकर उन्हें पलंग पर ले आये । बोले, "आज आप इतनी सरदी में क्यों उठे ?"

दादा ने कुछ नहीं सुना और लड़खड़ाते हुए कहा, "अनवर, तुमने अभी किसका नाम लिया था । कौन आया है ?"

"कोई नहीं, अब्बा !" हसन के अब्बा अनवर ने शांति से जवाब दिया, "यहां तो हसन के साथी शर्मा साहब बैठे हैं ।" "नहीं अनवर, मैंने अच्छी तरह सुना, तुम उसका नाम ले रहे थे ।"

डॉक्टर शर्मा एक अजीब भुलभुलैया में फंस गये थे । वे कभी हसन को देखते और कभी अब्बा को, और कभी बाबा को । पर उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था । हसन चुपचाप जेब में हाथ डाले बाबा पर नज़र गड़ाये हुए था । उसके मुख पर अब थकान नहीं थी, बल्कि एक गहरे दर्द ने उसे परेशान कर दिया था । इसके ख़िलाफ़ उसके अब्बा की नफ़रत गहरी होती जा रही थी और बाहर हवा उसी तेज़ी से सिर पटक रही थी । अनवर ने अब्बा को आराम से सहेजकर पलंग पर लिटा दिया और फिर धीरे-धीरे चारों ओर से कंबल ढकने लगे ।

दादा उसी तरह बोले, "अनवर, तू बोलता क्यों नहीं ?"

"अब्बा...।"

"हां, वह कहां है ? तू उसका नाम क्यों ले रहा था ?"

अनवर की आवाज़ कुछ लड़खड़ायी, उन्होंने कहा, 'अब्बा, वह यहां नहीं आये ।"

"तो...?"

"अस्पताल में हैं ।"

दादा की आवाज़ एकाएक और भी दर्दनाक हो उठी, "क्या...क्या कहा...अस्पताल में ?...क्यों...?"

जब हसन से नहीं रहा गया, तो आगे बढ़कर उसने कहा, "हां दादा, कानपुर वाले राम प्रसाद अस्पताल में पड़े

हैं, ज़ख़्मी हो गये थे, लेकिन अब बेहतर हैं ।'' सुनकर दादा ने कंबल को दूर फेंक दिया और लड़खड़ाते हुए बोले, ''राम प्रसाद ज़ख़्मी हो गया...कैसे हुआ...किसने किया...?''

''शहर में जो दंगा हो रहा है उसी में...।''

''मुसलमानों ने उसे मारा ?'' दादा ने अब सब कुछ समझकर कहा, और क्षण-भर के लिए ऐसे हो गये जैसे प्राणों ने साथ छोड़ दिया हो । फिर उनकी आंखों से आंसू बहने लगे, आवाज़ भर्रा गयी, बोले, ''अनवर, उसे मुसलमानों ने मार डाला और तुमने मुझे बताया भी नहीं, तुमने...।''

''दादा, मैं उनको जानता नहीं था ।''

''पर तूने कहा, वह अभी ज़िंदा है ?''

''हां, दादा !''

''अस्पताल में ?''

''हां, दादा !''

''तो हसन, मेरे बच्चे !'' उन्होंने उठने की कोशिश करते हुए कहा, ''तू मुझे उसके पास ले चल, मैं एक बार उसे देखूंगा, वह मेरा बेटा है, मेरा बड़ा बेटा... कहते-कहते दादा फूट-फूटकर रोने लगे, उनसे उठा नहीं गया, कटे हुए पेड़ की तरह वहीं लुढ़क गये, अनवर ने उन्हें देखा और पुकार उठे, ''हसन, जल्दी करो, अब्बा को गश आ गया है ।''

हसन न कांपा, न घबराया, आगे बढ़कर उसने आलमारी में से दवा निकाली और उसे प्याले में डालते-डालते बोला, ''शर्मा, क्या तुम इंजेक्शन तैयार नहीं कर दोगे ?''

''ज़रूर कर दूंगा ।'' शर्मा, जो अब समझ गया था, बोला और उठकर स्प्रिट में सुई साफ़ करने लगा । हसन ने दवा दादा के गले में डाली । फिर पुकारा, ''दादा !''

''कोई आवाज़ नहीं ।''

''दादा...आ...।''

अनवर ने पुकारा, ''अब्बा...।''

धीरे-धीरे उनको होश आया । होंठ फड़फड़ाए, बोले, ''कहां है वह ? मेरा बेटा...मेरा बेटा...।''

''अब्बा...।''

''मैं उसके पास जाऊंगा ।''

हसन ने कान के पास मुंह ले जाकर धीरे-से कहा, ''अभी चलते हैं, दादा ! आप ज़रा अपने को संभालिये तो...।''

उन्होंने उसी तरह कांपते हुए कहा, ''मैं होश में हूं, मेरे बच्चे, मैं उसके पास जाऊंगा, आख़िर वह मेरा बेटा है, कोई ग़ैर नहीं, मैं मुसलमान हूं और वह हिन्दू, वह मुझसे, मेरे बच्चों से नफ़रत करता है, पर...पर वह भी मेरा बच्चा है । मैं उससे नफ़रत नहीं करता, हसन...हसन...।''

''हां, दादा !''

''हसन, मैं उससे पूछूंगा, मैं मुसलमान हो गया तो क्या हुआ, हमारा बाप-बेटे का नाता तो नहीं टूट सकता, आख़िर उसकी रगों में अब भी मेरा ख़ून बहता है, इतना ही जितना अनवर की रगों में बहता है, शायद ज़्यादा...।''

उनकी आवाज़ फिर धीमी पड़ रही थी । वह रो-रो उठते थे । दोनों डॉक्टर उनके ऊपर झुके हुए थे और अनवर ने उनकी नाड़ी संभाल रखी थी ।

बाहर अंधेरा बढ़ा आ रहा था और हवा शांत पड़ रही थी, अन्दर बेगम आंखों में आंसू भरे, दुखी दिल से चाय लिए बैठी थीं, और वह चाय न जाने कब की ठंडी होकर काली पड़ गयी थी ।

कविता

अखंड भारत

मेरा धर्म एक षड्यंत्र है
मेरा नमाज़ पढ़ना एक षड्यंत्र है
मेरा चुपचाप रहना एक षड्यंत्र है
मेरा सोने से जागना एक षड्यंत्र है
मेरा दोस्त बनाना एक षड्यंत्र है
मेरी अनभिज्ञता, मेरा पिछड़ापन एक षड्यंत्र है

जबकि दूसरी तरफ़–

इसमें कोई षड्यंत्र नहीं है
मुझे शरणार्थी बना दिया जाए
जिस मुल्क में मैं पैदा हुआ हूं
इसमें कोई षड्यंत्र नहीं है कि
उन हवाओं को ज़हरीला बना दिया जाए
जिसमें मैं सांस लेता हूं
और जहां मैं रहता हूं
इसमें निश्चय ही कोई षड्यंत्र नहीं है कि
मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएं
और फिर एक अखंड भारत की कल्पना की जाए ।

● तेलुगू कवि ख़ादर मुहीउद्दीन

हिन्दी के नामकरण प्रवर्तक : अमीर ख़ुसरो

■ बद्रीनारायण तिवारी
(शिवाला, कानपुर)

हिन्दी का सर्वप्रथम नाम 'हिन्दवी' रखने वाले साहित्य के आदिकालीन कवि अमीर खुसरो थे । अमीर खुसरो का प्रारंभिक नाम अब्दुल हसन था । उनका जन्म एक तुर्की परिवार में सन 1253 ई॰ में उत्तर प्रदेश के एटा के 'पटियाली' नामक क़स्बे में हुआ था । अमीर खुसरो को बचपन से ही कविता से लगाव था जिसे उन्होंने स्वयं लिखा है–"मेरे पिता ने मुझे पढ़ने के लिए मकतब भेजा और शिक्षक ने मुझे सुलेख लिखाने का प्रयास किया, किंतु मेरा मन कविता के अतिरिक्त किसी अन्य कार्य में नहीं लगता था ।"

अमीर खुसरो बहुमुखी प्रतिभा के बहुभाषाविद् उच्च कोटि के इतिहासकार भी थे । अमीर खुसरो फ़ारसी तथा हिन्दी दोनों भाषाओं के लोकप्रिय कवि माने जाते हैं । इसके अतिरिक्त इन्हें खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम कवि माना गया है । डॉ॰ राम कुमार वर्मा के कथनानुसार "खड़ी बोली में प्रथम लिखने वाले अमीर खुसरो हुए, जिन्होंने अपनी पहेलियों, मुकरियों आदि में इस भाषा का प्रयोग किया । यद्यपि ब्रजभाषा को ही उन्होंने विशेष आश्रय दिया, पर उन्होंने खड़ी बोली को भी उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखा ।"

यद्यपि जन सामान्य में कहा जाता है कि अमीर खुसरो ने लगभग 92 ग्रंथों की रचना की थी, परन्तु इसका कोई साक्ष्य नहीं मिलता है । अमीर खुसरो चिश्ती संप्रदाय के प्रसिद्ध पीर निज़ामुद्दीन औलिया के मुरीदों में थे । खुसरो के काव्य में सूफ़ीनामा की झलक स्पष्ट दिखायी पड़ती है । वे अपनी रचना 'गुर्रतुलकमाल' की भूमिका में लिखते हैं कि मैंने अपनी हिन्दी कविताएं अपने मित्रों में बिखेर दी हैं, परंतु इन कविताओं में कुछ कविताएं सूफ़ी विचार से सराबोर हैं । खुसरों की दृष्टि में सूफ़ी शब्द का तात्पर्य है कि जो व्यक्ति पवित्र जीवन व्यतीत करते हुए धर्माचरण में लीन रहते थे, सूफ़ी कहलाए । हिन्दी के विद्वान कालीकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ॰ मलिक मुहम्मद



की कृति "अमीर खुसरो, भावात्मक एकता के मसीहा" में स्पष्ट लिखते हैं–'इन साइक्लोपीडिया ऑफ़ रिलीजन एंड इथिक्स' लिखा है कि अधिकांश व्यक्ति इस शब्द की व्युत्पत्ति 'सफ़ा' शब्द से मानते हैं । उनका कथन है कि जो लोग पवित्र थे, वे सूफ़ी कहलाए ।'

अमीर खुसरो के काव्य में रेखांकित पंक्तियों में 'सूफ़ीनामा' रंग के दोहे में साधक की आत्मा और ईश्वरीय सत्ता के मिलन की भाव व्यंजना कितने सुन्दर शब्दों में व्यक्त हुई है–

खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग । तन मेरो मन पीउ को, दोउ भये इक रंग ।।

तेरहवीं शताब्दी में सर्वप्रथम 'हिन्दी' का नामकरण 'हिन्दवी' नाम से अमीर खुसरो ने ही दिया । जो प्रचलन में अपभ्रंश होकर 'हिन्दवी' से हिन्दी नाम से चर्चित हो गया । हिन्दी खड़ी बोली की रचनाएं सर्वप्रथम सूफ़ी कविता में लिखकर प्रचलित करने के साथ ही जबकि उस समय फ़ारसी रचनाओं का ही वर्चस्व था । ऐसे समय तत्कालीन फ़ारसी प्रेम की पद्धति के विपरीत भारतीय प्रेम परंपरा का

दबदबा कायम रखा ।

अमीर खुसरो अपने पीर औलिया हजरत निजामुद्दीन के देहांत का दुखद समाचार मिलने पर जब उनकी दरगाह पर अजमेर पहुंचे तो रहस्यवादी सूफ़ी शैली में यह दोहा पढ़ा जो अब भी बहुचर्चित है–

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस । चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुं देस ।

खुसरो हिन्दी खड़ी बोली के सूफ़ी कवि थे और फ़ारसी में उन्होंने सूफ़ी मत की रचनाएं लिखी है । वह उनका एक रूप रहा होगा परन्तु खुसरो का जो रूप हिन्दवी में प्रकट हुआ वह रहस्यवादी नहीं वरन् सामान्य जनजीवन के सरस कवि रूप का है । वस्तुत: मनुष्य का परलोक का रूप न देकर यहीं के प्रेम, मस्ती एवं चंचलता को आनंदित करता तथा कविता में प्रदर्शित करता है ।

भारत में अमीर खुसरो का यश 'हिन्दी' के नामकरण 'हिन्दवी' से आज भी इतिहास के पन्नों में अमर है । खुसरों ने फ़ारसी के वर्चस्व काल में हिन्दी की रचनाएं लिखकर जन सामान्य में अपनी ख्याति स्थापित की । वर्तमान समय में भी खुसरो की हिन्दी रचनाएं जनप्रिय हैं ।

भारत में अमीर खुसरो का यश 'हिन्दी' के नामकरण 'हिन्दवी' से आज भी इतिहास के पन्नों में अमर है । खुसरों ने फ़ारसी के वर्चस्व काल में हिन्दी की रचनाएं लिखकर जन सामान्य में अपनी ख्याति स्थापित की । वर्तमान समय में भी खुसरो की हिन्दी रचनाएं जनप्रिय हैं । अमीर खुसरो ने अपनी हिन्दी निष्टा को किस आत्मीय भाव से लिखा है–

"मैं हिन्दुस्तान का तुर्क हूं और हिन्दवी में उत्तर देता हूं । मेरे पास मिश्री की मिटास नहीं कि मैं अरबी में बातें करूं ।

अमीर खुसरो भारतीय जनमानस में हिन्दी साहित्य के नामकरण एवं उनके नाम से साहित्य में अनेक पहेलियां, दोहे, गीत, मुकरियां, कव्वाली आदि अति प्रचलित हैं । हिन्दी अन्वेषक गोपीचन्द नारंग ने हिन्दी काव्य के संबंध में अपनी कृति–"अमीर खुसरो का हिन्दवी काव्य" में लिखा है–"अमीर खुसरो का हिन्दवी काव्य अपनी लोकप्रियता के कारण पीढ़ी-दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है और इन सात शताब्दियों में वह हमारी लोक परंपरा और लोक साहित्य का अंग बन गया है । लाखों-करोड़ों की जुबानों पर चढ़ने से उसमें संशोधन परिवर्तन अवश्य हुआ होगा । संभव है कि अमीर खुसरो से संबद्ध काव्य के कुछ अंश मौलिक हों किंतु कई अंश निश्चय ही ऐसे भी हैं जिन्हें कालांतर में बढ़ाया जाता रहा है ।"

बहुभाषाविद् अमीर खुसरो प्रचलित फ़ारसी भाषा से हिन्दी भाषा को जिसका सर्वप्रथम नामकरण उन्हीं ने 'हिन्दवी' नाम से प्रचलन भी किया था, उसे किसी भी तरह से फ़ारसी से कम नहीं मान्यता प्रदान किया । अमीर खुसरो ने अपनी फ़ारसी रचना 'ग़ुर्रतुलकमाल' की प्रस्तावना में लिखते हैं जो उनकी आंतरिक हिन्दवी को व्यक्त करती है–

"चू मन तुती एक हिन्दम ।"

'यदि सही पूछो तो मैं हिन्द का तोता हूं । यदि तुम मुझ से मीठी बातें करना चाहते हो तो 'हिन्दवी' में बातें करो ।'

अमीर खुसरो पहले कवि हैं जिन्होंने समूचे राष्ट्र की भाषा को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, वह बड़ी स्वच्छन्दता से संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, उर्दू, अरबी, फ़ारसी तथा अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करते हैं । इसीलिए खुसरो की हिन्दी की रचनाएं शताब्दियों बाद में जनप्रिय हैं ।

UNITED ELECTRONIC SPARES

Deals :
Electronic Spare Parts,
TV, DVD, DTH & All Types of Remote,
CFL Glass & CFL Kit, USB Set, Fan,
Iron, Mixer, Mobile Accessories,
0-25 KVA To 10 KVA Stabiliser &
Inverter, CFL Inverter &
12 V 7.2AH Battery

Shop No-8, Hotel Ashoka Complex,
L.T. Road, Ramgarh Cantt, Jharkhand



पर्यावरण सुरक्षा

■ रिज़वान अहमद सिद्दीक़ी

इन दिनों दुनिया भर में पर्यावरण के लिए उपयोगी वस्तुओं की बहुत चर्चा है । लगभग प्रतिदिन ही ऐसी ख़बरें आ रही होती हैं कि अमुक देश में पर्यावरण-सुरक्षा के लिए उपयोगी वस्तु तैयार कर ली गयी । पर्यावरण की सुरक्षा से दिलचस्पी रखनेवालों के लिए ऐसी ख़बरें नि:संदेह तसल्ली का कारण होती हैं, लेकिन ऐसी ही दिलचस्पी रखनेवाला एक ग्रुप ऐसा भी है, जो पर्यावरण की सुरक्षा के नाम पर होनेवाली बहुत-सी सरगर्मियों को संदेह की निगाह से देखता है । इस विचारधारा को माननेवाले लोग दुनिया भर में फैले हुए हैं । इनका कहना है कि वे पर्यावरण की सुरक्षा की सरगर्मियों के नहीं, बल्कि इस नाम पर होनेवाले कारोबार के ख़िलाफ़ हैं । इस विचारधारा के लोगों में कुछ वैज्ञानिक, शोधकर्ता, पर्यावरण की सुरक्षा के लिए काम करनेवाले लोग और आम आदमी, सब सम्मिलित हैं ।

आपत्तिकर्ताओं का कहना है कि आजकल पर्यावरण के लिए उपयोगी गाड़ियों का बहुत शोर है, लेकिन वास्तविकता यह है कि वे भी पूरी तरह पार्यावरण के लिए उपयोगी नहीं हैं । उनका कहना है कि ऐसी गाड़ियों की दो क़िस्में सामने आयी हैं और वे दोनों पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाले धुएं के उत्सर्जन से अलग नहीं हैं । फिर भी इनका उत्सर्जन कम है, लेकिन इनकी तैयारी के चरणों और इनकी दरों का जायज़ा लिया जाए, तो बात कान को हाथ घुमाकर पकड़ने के बराबर हो जाती है । ऐसी गाड़ी की एक क़िस्म बाइबर डालेक्ट्रिक व्हीकल और दूसरी प्लग इन बाइबर डालेक्ट्रिक व्हीकल कहलाती है । इन दोनों में बिजली के साथ पारंपरिक ईंधन भी जलता है । पहली क़िस्म में गाड़ी की बैट्री गाड़ी की चलने पर अपने आप चार्ज होती रहती है, लेकिन दूसरी क़िस्म की बैट्री बिजली के किसी वाह्य माध्यम से चार्ज होती है, अर्थात इसके लिए किसी सांकिट में लगाना पड़ता है ।

वे आगे कहते हैं कि पर्यावरण के लिए उपयोगी विद्युत संबंधी उपकरणों, घरेलू उपयोग की वस्तुएं, मकानों और

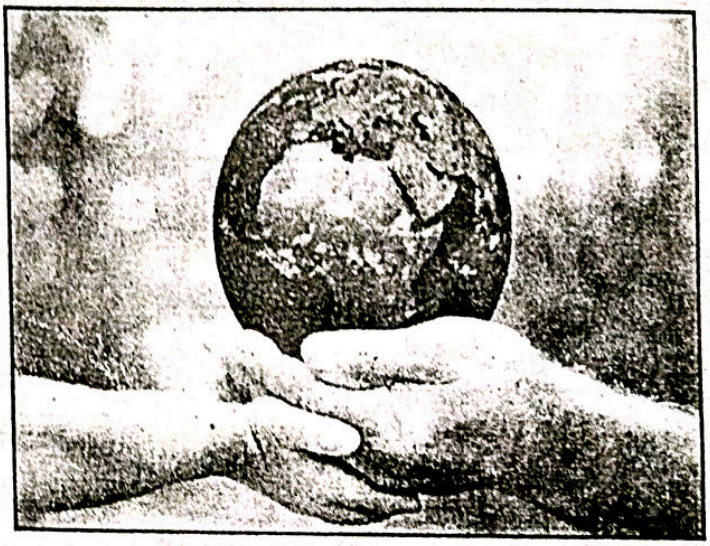

कार्यालय इत्यादि बनाने का कारोबार भी इन दिनों ज़ोर-शोर से जारी है । यह सब कुछ पर्यावरण की सुरक्षा के नाम पर हो रहा है और इस नाम पर अरबों-खरबों रुपये कमाये और ख़र्च किये जा रहे हैं, लेकिन अब तक ऐसी सरगर्मियों से आम आदमी को बड़े पैमाने पर कोई राहत नहीं मिली है और न दुनिया में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन आ सका है । इनका यह भी कहना है कि ऐसी अधिकतर सरगर्मियों के लिए पुरानी सुविधाजनक चीज़ों, भवनों और कार्यालय आदि को आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़कर या छोड़कर पर्यावरण की सुरक्षा के नाम पर नयी सरगर्मियां की जाती हैं । यह अमल पर्यावरण को बहुत-से तरीक़ों से हानि पहुंचाता रहा है ।

इनका कहना है कि इनके नाम पर सरकारों से जो रिआयतें प्राप्त की जा रही हैं और जनता की जेबों से जिस तरह पर्यावरण के लिए उपयोगी वस्तुओं की ख़रीदारी के नाम पर रक़में निकलवायी जा रही हैं, वे मामलों को संदिग्ध बना रही हैं और कुछ सच्चाइयों का गहरी नज़र से जायज़ा लेने से पता चला है कि वुछ व्यापारिक इदारे और सरकारी और ग़ैर-सरकारी संस्थाएं, विशेषरूप से विकासशील दुनिया में हुकूमतों और जनता की आंखें में धूल झोंक रही हैं । वे इस संदर्भ में कार्बन क्रेडिट के कारोबार की भी मिसाल पेश करते हैं ।

कारोबार का नया अंदाज़

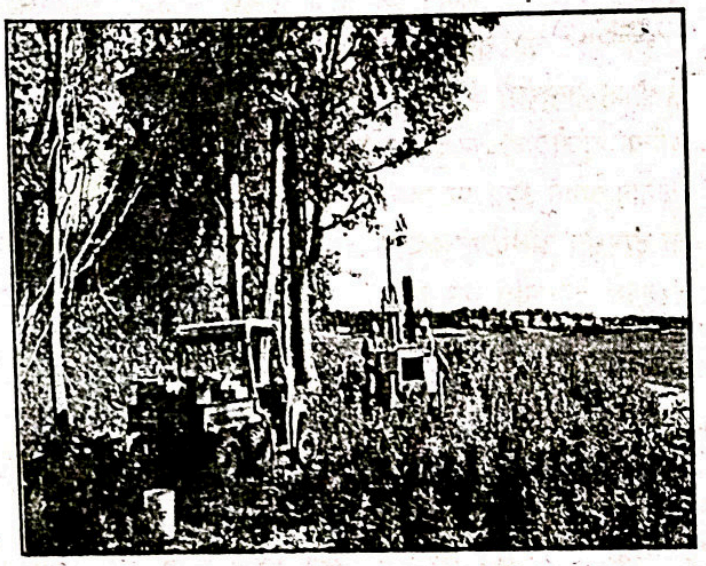

कार्बन क्रेडिट से आशय एक समझौता है, जिसकी वजह से एक देश दूसरे देश को एक टन कार्बन डाई आक्साइड उत्सर्जन की आज्ञा देते हैं और इस लक्ष्य से कम कार्बन डाई आक्साइड उत्सर्जन पर क्रेडिट दिया जाता है। यह क्रेडिक किसी भी देश का प्रशासन ही नहीं, बल्कि आम किसान और कारीगर भी कम कार्वन डाई आक्साइड या ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन के ज़रिए प्राप्त कर सकते हैं। इस कार्बन क्रेडिट को देने को उद्देश्य दुनिया भर में कार्बन डाई आक्साइड और पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव डालने वाली अन्य गैसों पर क़ाबू पाना है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में कार्बन डाई आक्साइड के उत्सर्जन में सबसे ज़्यादा हिस्सा अमेरिका, चीन, भारत, रूस, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, कनाडा, दक्षिणी कोरिया और इटली का है। पर्यावरणविदों के अनुसार यूरोप में कार्बन डाई आक्साइड का उत्सर्जन औसतन् दस मैट्रिक टन प्रतिवर्ष, जबकि अमेरिका प्रतिवर्ष बीस मैट्रिक टन कार्वन डाई आक्साइड का उत्सर्जन करता है, जो दुनिया में कार्बन डाई आक्साइड के औसत उत्सर्जन से छः गुना अधिक है।

कुछ शोधकर्ता यहां तक कहते हैं कि नित्य नयी खोजों से प्रगतिशील देश अपने लिए तो दौलत का अंबार लगा रहे हैं, लेकिन पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। इसके बदले में उन्नतिशील देशों में ग़रीबी और परेशानियां बढ़ती जा रही हैं। वे मिसाल देते हैं कि कम्प्यूटर को आम करते वक़्त यह कहा गया था कि इससे कागज़ की तैयारी की पर्यावरण के लिए अनुयोगी सरगर्मियां कम हो जाएंगी, जिससे पर्यावरण की सुरक्षा में मदद मिलेगी, लेकिन अब वास्तविकताएं यह कहती हैं कि दुनिया भर में केवल कम्प्यूटरों के ज़रिए 45 मिलियन मैट्रिक टन कार्बन डाई आक्साइड पैदा होती है, फिर यह कि औद्योगिक दौर शुरू होने के बाद वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों का स्तर बढ़ा है, जिससे पृथ्वी का तापमान प्रभावित हो रहा है। तापमान में अधिकता की वजह से ओज़ोन की परत को नुक़सान पहुंच रहा है, जो वातावरण के ऊपर वाली सतह में मौजूद हानिकारक पराबैंगनी किरणों को ज़मीन पर पहुंचने से रोकता है।

अमेरिका में लगभग दस वर्षों से पर्यावरण से संबंधित नया रवैया देखने में आ रहा है। दस वर्ष पूर्व दुनिया की दो बड़ी कंपनियों में से एक, जनरल इलेक्ट्रिक ने ऐसी टेक्नालोजी में पूंजी बढ़ाने का ऐलान किया था, जो पर्यावरण के लिए उपयोगी टेक्नालोजी कहलाती है। अर्थात ऐसी टेक्नालोजी जिसे प्रयोग करने से पर्यावरण को नुक़सान नहीं पहुंचता या कम पहुंचता है। जनरल इलेक्ट्रिक का कहना था कि वे साफ़-सुथरी टेक्नालोजी बाज़ार में लाने के लिए पहले से दी गयी रक़म ख़र्च करेगी। याद रहे कि कंपनी की निर्मित वस्तुओं की एक बड़ी मार्किट अमेरिका है।

अमेरिका वह देश है, जिससे पर्यावरण की सुरक्षा के लिए काम करने वाले सदस्य हमेशा नाराज़ रहे हैं। इस देश ने जापान में पर्यावरणीय प्रदूषण से बचाव के वैश्विक समझौते, क्यूटोप्रोटोकोल, पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया था। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए काम करने वाले सदस्यों का आरोप रहा है कि अमेरिकी पर्यावरण के लिए साफ़-सुथरी टेक्नालोजी अपनाने से बचते हैं. क्योंकि ऐसी टेक्नालोजी आमतौर पर थोड़ी महंगी होती है। लेकिन लगभग एक दशक से बहुत ख़ामोशी से अमेरिका में पर्यावरण से संबंधित नया रवैया देखने में आ रहा है। अमेरिकी कंपनियों को अहसास हो रहा है कि वे वस्तुएं

बाज़ार में ज़्यादा लोकप्रिय हैं, जो पर्यावरण को कम नुक़सान पहुंचाती हैं । मिसाल के तौर पर गाड़ियां बनानेवाली अमेरिकी कंपनी जनरल मोटर्से इसलिए आर्थिक संकट का शिकार हुई कि जनता में जापान की बनी हुई कम पेट्रोल इस्तेमाल करनेवलाी गाड़ियां ज़्यादा लोकप्रिय हैं और जनरल इलेक्ट्रिक, जो बिजली से बल्ब से लेकर बड़े-बड़े पावर स्टेशनों तक बनाती है, उसकी बनाई हुई गाड़ियां ज़्यादा ईंध न लेती हैं ।

ऐसे में कंपनी ने ऐसी वस्तुओं पर शोध करने पर ध्यान केन्द्रित की, जिन्हें 'ग्रीन प्रोडक्स' कहा जाता है । आपत्तिकर्ताओं को कहना था कि कंपनी ने यह सोचकर पैंतरा बदला है कि इस नाम पर उसकी निर्मित वस्तुएं ज़्यादा बिकेंगी । स्पस्ट रहे कि अमेरिका में राजनीतिक रूप से दक्षिण पंथी विचारधारा से संबंध रखनेवालों ने यह कहकर कम पेट्रोल वाली गाड़ियां इस्तेमाल करनी शुरू कर दी है कि यह उनकी क़ौमी सलामती के लिए ज़रूरी है । दक्षिण पंथी राजनीतिज्ञों का कहना कि पर्यावरण प्रदूषण की समस्या धुआंदार तक़रीरों और बड़े-बड़े समझौतों से नहीं हल होगी, बल्कि पूंजीवादी व्यवस्था और आधुनिक टेक्नालोजी का मिलाप अपने आप यह समस्या हल कर देगी । आपत्तिकर्ताओं के अनुसार अमेरिकी जनता अब पर्यावरण के लिए उपयोगी वस्तुओं की मांग कर रही हैं और व्यापारिक इदारे उनकी मांग को पूरी करने के लिए अपनी निर्मित वस्तुओं में बदलाव ला रहे हैं ।

ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते ख़तरे और इस्लामी शिक्षाएं

■ डॉ॰ मुहम्मद रफ़अत

पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है । प्रकृति ने जो व्यवस्था क़ायम की है, प्रदूषण ने उसे बिगाड़ कर रख दिया है और मौसमों पर भी इसके नुमायां प्रभाव पड़े हैं जिसके कारण आज दुनिया परेशान है । ज़मीन पर पाये जाने वाले प्रदूषण के अलावा गाड़ियों और चिमनियों से निकलने वाला धुआं वायु-प्रदूषण व जल-प्रदूषण आज इन्सानों के अलावा जानवरों को भी प्रभावित कर रहा है ।

औद्योगिक प्रदूषण ने ओज़ोन परत में छेंद करके ख़तरनाक गैसों के लिए ज़मीन तक आने का मार्ग प्रशस्त कर दिया है । इसके अस्ल ज़िम्मेदार अमेरिका और यूरोप के विकसित देश हैं जहां 50 वर्ष पहले औद्योगिक विकास की शुरुआत हुई । परन्तु वे इसकी पूरी ज़िम्मेदारी तीसरी दुनिया के देशों पर डालते हैं ।

परमाणु विकिरण के ज़रिये वातावरण में फैल रहा प्रदूषण और इन्सानों एवं अन्य प्राणियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभाव भी चिंता का विषय हैं । दिन प्रतिदिन प्रदूषण का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है जिससे पृथ्वी का औसत तापक्रमं भी बढ़ रहा है जिससे ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उठ खड़ी हुई है ।

समुद्र का जल स्तर ऊंचा होकर इन्सानी आबादियों फ़स्लों और सब्ज़ियों को अपनी ज़द में लेने को आतुर है । आज भारत की राजधानी दिल्ली, दुनिया का सर्वाधिक प्रदूषित शहर है । भारत की बड़ी-बड़ी नदियां जो पानी के स्रोत से निकल कर मैदानी इलाक़ों में आती हैं, यहां के क्षेत्रीय प्रभाव से प्रभावित होती हैं । शहरों का प्रयोग किया हुआ प्रदूषित जल, फैक्ट्रियों से निकलने वाला पानी आदि मिलकर नदियों के जल को प्रदूषित कर देता है ।

रासायनिक ख़ाद भी प्रदूषण का एक बड़ा कारण है जिसके कारण भूमि अपनी उर्वरक क्षमता खोती जा रही है । फ़स्लों और सब्ज़ियों पर इसके बुरे प्रभाव पड़ रहे हैं । जिससे तरह-तरह के रोग एवं महामारियां फैलने लगी हैं ।

जंगलों की बेतहाशा कटाई भी प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ने का एक बड़ा कारण है । जंगलों की कमी से वर्षा

प्रभावित हो रही है । इससे जानवरों की संख्या में कमी या बेतहाशा वृद्धि हो रही है । इस कारण कई प्रजातियां तो विलुप्त हो चुकी हैं । वर्षा ऋतु आगे-पीछे हो रही है । इसका सर्वाधिक ख़तरा ऊर्जा की कमी के रूप में सामने आ रहा है । पेट्रोल, लकड़ी, कोयला और प्राकृतिक संसाधनों के बेतहाशा इस्तेमाल के नतीजे में जीवन के संसाधनों की कमी का ख़तरा बना हुआ है ।

इन ख़तरों एवं चुनौतियों का मुक़ाबला करने के लिए यद्यपि कोशिशें हो रही हैं फिर भी इस्लामी दृष्टिकोण से इस पर विचार करने की आवश्यकता है कि वातावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए हम मुस्लिम उम्मत की हैसियत से किस तरह मददगार साबित हो सकते हैं ।

इससे पहले कि हम प्रदूषण से बचने के उपाय सोचें हमें यह समझ लेना चाहिए कि इन्सान और सृष्टि के बीच क्या रिश्ता है । इस संबंध में एक दृष्टिकोण तो यह है कि सृष्टि को संचालित करने वाला कोई सर्वशक्तिमान नहीं है । इन्सानों में प्रकृति पर विजय प्राप्त कर लिया है और वे स्वतंत्र हैं । आज पश्चिम के बुद्धिजीवियों का यही विचार है । जबकि इस्लाम का दृष्टिकोण यह है कि इन्सान अल्लाह का बन्दा है । उसे कुछ सीमित अधिकार प्राप्त हैं जो अल्लाह के दिये हुए हैं । ये अधिकार उसे सीमित अवधि के लिए दिये जाते हैं, हमेशा के लिए नहीं । ये अधिकार भी कुछ नैतिक सीमाओं से बंधे हुए हैं ।

इस्लामी दृष्टिकोण यह है कि अल्लाह तआला ने सृष्टि को इन्सानों के लिए साध दिया है । उसे इन्सानों की सेवा पर लगा दिया है । इन्सान का काम सृष्टि पर विजय प्राप्त करना नहीं है, बल्कि उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करना है । अल्लाह के एहसानों की मांग है कि इन्सान शुक्र की भावना से प्रकृति से लाभ उठाये और उसे प्रयोग में लाते समय ख़ुदा की हिदायतों का ख़याल रखे और उसके अन्दर बन्दगी का एहसास पैदा हो ।

इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा हम सबकी ज़िम्मेदारी है । हानि पहुंचाने वाली चीज़ों से अपने घर और आसपास के वातावरण को बचाएं । पानी, हवा, वातावरण सड़क, गली-कूचा और रास्तों को साफ़-सुथरा रखने की ज़िम्मेदारी हम सबकी है । उसी के साथ संसाधनों के व्यर्थ प्रयोग से बचना भी हमारी ज़िम्मेदारी है । आम इस्तेमाल की चीज़ें मसलन पानी पर किसी का अधिपत्य क़ायम न होने दिया जाए । मगर आज स्थिति यह है कि कुछ पूंजीपतियों ने पानी जैसी बुनियादी ज़रूरत की चीज़ पर भी कंट्रोल हासिल कर लिया है । वे उसे बेच रहे हैं और कुछ को Soft Drink के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है । ऐसी तमाम चीज़ें जिनके लाभ और हानि दोनों ही पहलू हैं उनका जायज़ा लेकर उन्हें क़ानून के दायरे में लाया जाए ।

इस्लाम यह चाहता है कि वर्तमान परिस्थितियों एवं ज़रूरतों का जायज़ा लिया जाए और फिर उस ज़ायज़े के तहत योजना बनायी जाए । मिसाल के तौर पर सूरह यूसुफ़ में आया है कि हज़रत यूसुफ़ (अलैहि०) ने मिस्र में सात साल बाद आने वाले अकाल से सरकार को अवगत कराया और उससे निबटने के लिए प्रभावशाली योजना भी सुझायी और उसकी समय रहते व्यवस्था भी की । आज ऊर्जा स्रोत जिस तरह घटते जा रहे हैं उसको देखते हुए उसकी समय रहते योजना बनाना ज़रूरी हो गया है ।

इसके अलावा जिन लोगों ने प्रदूषण फैलाया है उन पर सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदारी भी आती है कि वे इस समस्या का समाधान करें । इस तरह सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदारी यूरोप और अमेरिका पर ही आती है । आम आदमियों को भी प्रदूषण फैलाने वाले कामों से बचना चाहिए ।

मुसलमानों की भी यह ज़िम्मेदारी है कि वे अपने आसपास के माहौल को साफ़-सुथरा रखें । हवा और पानी को प्रदूषण से बचाएं । कूड़ा-करकट को गलियों एवं सड़कों पर न डालें । गाड़ियों को उचित स्थानों पर पार्क करें और सड़क को आवागमन के लिए खुला रखें । बीड़ी, सिग्रेट और तंबाकू खाकर सड़कों पर न थूकें ।

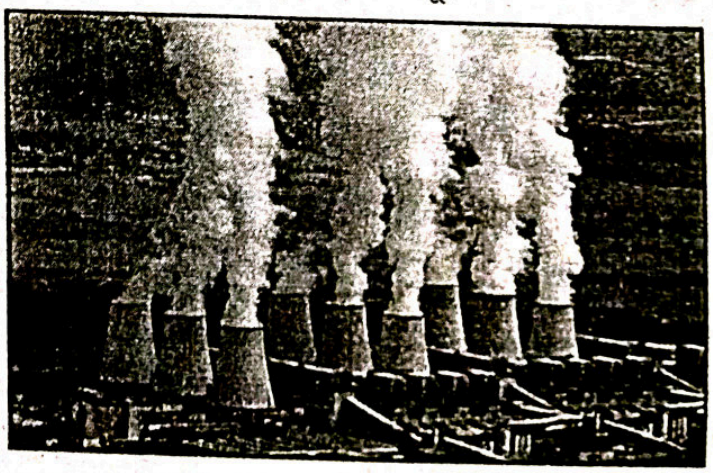

लापरवाही न बरतें चिकनगुनिया में

■ डॉ॰ अनुराग श्रीवास्तव

चिकनगुनिया का रोग डेंगू की तरह ख़तरनाक तो नहीं है लेकिन तनिक भी लापरवाही बरतने पर किसी भी मर्ज़ की स्थिति बद से बदतर होने में विलंब नहीं होता । इस रोग का वायरस एडीज एजिप्टी मच्छर के काटने से फैलता है जिसके कारण देश में प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में लोग इस मर्ज़ से प्रभावित तथा पीड़ित होते हैं ।

चिकनगुनिया का एक प्रमुख लक्षण तीव्र ज्वर है जो रोगी में सामान्यत: 102 से 104 डिग्री फारेनहाइट तक रहता है । वायरस के प्रकोप से 3 से 7 दिनों के दौरान शरीर के विभिन्न जोड़ों में गंभीर दर्द रहता है । आमतौर पर यह दर्द सबसे अधिक हाथों और पैरों को प्रभावित करता है । जोड़ों का दर्द सप्ताहव्यापी हो सकता है लेकिन कुछ लोगों के मामलों में यह दर्द एक साल अथवा इससे अधिक समय तक भी रह सकता है । इस मर्ज़ का एक अन्य लक्षण दाने हैं जो बुख़ार की शुरुआत के बाद दिखलाई पड़ने लगते हैं ।

अमूमन ऐसे दाने पीड़ित व्यक्ति के धड़ और हाथ-पैर को प्रभावित करते हैं तथा हथेलियों, तलवों और चेहरे पर भी दाने दिखलायी पड़ सकते हैं । इस मर्ज़ में सिरदर्द के अलावा मांसपेशियों में भी दर्द हो सकता है । इसके अलावा इसमें जी मिचलाने और उलटी की समस्या भी हो सकती है ।

चिकनगुनिया भी एक वायरल रोग है जिसके लक्षण भी डेंगू के समान पाये जाते हैं । इस मर्ज़ से ग्रस्त रोगियों में डेंगू की भाँति तीव्र ज्वर, जोड़ों में तेज़ दर्द, सिर दर्द, जोड़ों में सूजन तथा मांसपेशियों में पीड़ा आदि समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं जिसके कारण रोगी के शरीर पर लाल निशान पड़ सकते हैं किन्तु चिकनगुनिया में रक्तस्राव का जोखिम नहीं होता जैसा डेंगू में प्लेटलेट्स की संख्या घटने के कारण उत्पन्न हो जाता है । डेंगू के मामलों की तुलना में इसके रोगियों में जोड़ों का दर्द लंबा खिंचता है विशेषकर बुज़ुर्गों

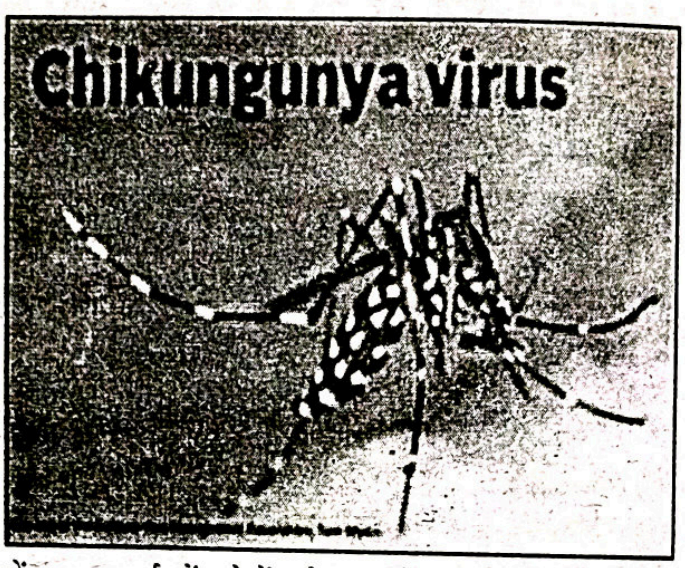

में । इस मर्ज़ में लोगों को घबराने तथा चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इसमें डेंगू की तरह मृत्यु का ख़तरा नगण्य रहता है ।

हाई ब्लड प्रेशर, डाईबिटीज तथा हृदय रोग से पीड़ित व्यक्तियों को इस बीमारी से विशेष सतर्कता बरतनी चाहिए। शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को सशक्त रखकर चिकनगुनिया से पीड़ित अधिकांश रोगी स्वस्थ हो जाते हैं । इस रोग की रोकथाम हेतु अभी तक इसका टीका (वैक्सीन) उपलब्ध नहीं है । इस पर नियंत्रण हेतु डी॰एन॰ए॰ टीकाकरण के विकास पर अनुसंधान जारी है । इस रोग से सुरक्षा हेतु मच्छरों से हर संभव विधि से बचाव करना आवश्यक है ।

एहतियात बरतकर इस मर्ज़ के प्रकोप को काफ़ी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है । मच्छरों से बचाव हेतु शरीर को पूरी तरह ढक्कर रखें । पूरी बाज़ू वाली कमीज़ और पैंट पहनें । रात में सोते वक़्त मच्छरदानी का इस्तेमाल करें । मच्छर को भगाने वाली मास्किटो क्रीम का प्रयोग करें । घर या उसके आसपास पानी का भराव न होने दें । एडीज़ मच्छर गंदे पानी में ही नहीं, साफ़ जल में भी पनपता है । इसलिए घर में बाल्टी, मटका और सुराही का पानी प्रत्येक दिन बदलें । गमलों के पानी को भी प्रतिदिन बदलते रहें ।

हफ़ीज़ मेरठी का साहित्यिक संदर्भ

■ फ़रहत हुसैन ख़ुशदिल

आईन जवां मर्दां हक़गोई व बेबाकी
अल्लाह के शेरों को आती नहीं रूबाई ।

अल्लामा इक़बाल के मशहूर शेर को जब हम पढ़ते या सुनते हैं, तो हमारी श्रुतियों में एक नया जोश व उमंगें मौजें मारने लगता है । कल्पनाओं की दुनिया में हम अपने पूर्वजों के कारनामों और उनकी सत्यवादिता व निर्भीकता को देखकर हैरान भी होते हैं और अपनी अकर्मण्यता पर शर्मिन्दा भी । इस वास्तविकता से इन्कार नहीं किया जा सक़ता कि अल्लामा इक़बाल ने जिस तरह अपनी शायरी की मध्यस्थता से सत्यभाषिता व निर्भीकता का प्रदर्शन किया उसके गहरे प्रभाव हफ़ीज़ मेरठी के अशआर में यदा-कदा मिलते हैं । हफ़ीज़ मेरठी उर्दू शायरी के इतिहास का एक अहम नाम है । उर्दू के अहम पाठशालाओं में एक नाम पाठशाला मेरठ में भी है । उनकी शायराना निर्भीकता पर वार्तालाप से पहले मेरठ के ऐतिहासिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि की चर्चा करना ज़रूरी समझता हूं ।

डॉ॰ ख़ालिद हुसैन ख़ां की प्रकाशित किताब "अदबी तहरीरें" के एक संदर्भ पर ग़ौर करें, मेरठ दिल्ली से क़रीब, उत्तर की ओर प्राचीनकाल से दुआबे (दो नदियों के बीच का प्रदेश) का एक उपजाऊ और मशहूर ज़िला है । इसकी ऐतिहासिक हैसियत उर्दू जगत में इसलिए कि खड़ी बोली का वास्तविक और मूल क्षेत्र यही है । उर्दू साहित्य के इतिहास में गद्य-पद्य को समान हैसियत प्राप्त है । पाठशाला मेरठ की बीसवीं शताब्दी के साहित्यिक इतिहास के अध्ययन से इस वास्तविकता का उजागर होता है कि यहां शायरों के साथ-साथ गद्यकारों की संख्या भी किसी रूप में कमतर नहीं समझी जा सकती ।

उपर्युक्त वास्तविकताओं की रोशनी में बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से भारत की आज़ादी तक उर्दू शेर व साहित्य को सिंचित करने वालों का एक अहम और सक्रिय केन्द्र की धुरी मेरठ कालेज भी रहा है । इस शैक्षिक संस्था से



लाभान्वित होने वाले चोटी के पद्यकारों में ख़्वाजा अहमद फ़ारूक़ी, डॉ॰ शौकत सब्ज़वारी, डॉ॰ सलीम अख़्तर, डॉ॰ जमील जाल्बी, मुहम्मद यहया तन्हा, मौलवी अब्दुल हक़, मौलवी चिराग़ अली, अल्लामा सहर अश्क़ आबादी, हबीबुर्रहमान ख़ां शेरवानी, मिर्ज़ा रहीम बेग, डॉ॰ नूर अहमद मेरठी, रेवती शरण शर्मा, पंडित लेखराम शर्मा, शीबा अब्बास, इन्तिज़ार हुसैन, इमदाद हुसैन जुबैरी, डॉ॰ अमीनुल्लाह शाहीन; मुहम्मद मुश्ताक़ शारिक़ की सेवाएं अविस्मरणीय हैं ।

इसी तरह कवियों और शायरों में मौलवी इस्माईल मेरठी, सैयद यार ख़ां साग़र निज़ामी, तस्कीन मेरठी, कौसर मेरठी, रविश सिद्दीक़ी, अफ़सर मेरठी, तस्ख़ीर मेरठी, बूम मेरठी, हफ़ीज़ मेरठी, नूर तक़ी नूर मेरठी और दीपक क़मर जैसे शायरों की सेवाओं ने उर्दू दुनिया में दबिस्ताने मेरठ को विशिष्ट स्थान और साहित्य व पत्रकारिता के इतिहास में सर्वश्रेष्ठ स्थान दिलाया है । (मेरठ-तारीख़ी, अदबी और सियासी पसमंज़र-पृष्ठ 212-214)। इस संदर्भ से दबिस्ताने मेरठ के साहित्यकारों व शायरों की अहमियत उजागर होती है । अलबत्ता शायरों की इस सूची में इस्माईल मेरठी के बाद हफ़ीज़ मेरठी को इस्लामी विचारधारा की तरजुमानी करने के साथ-साथ सत्यभाषिता व निर्भीकता के साथ अपनी बात

कहने वालों में गणना करता हूं । जनाब हफ़ीज़ मेरठी का जन्म 10 जनवरी 1922 ईसवी में मेरठ में हुआ । 30 साल की उम्र में जमाअत इस्लामी हिन्द के सिद्धांतों से प्रभावित होकर 1952 ईसवी में जमाअत से जुड़ गये । उनके पिता इबराहीम ख़लील साहब अपने समय के अच्छे शायर थे । हफ़ीज़ मेरठी को शायरी विरासत में मिली । अपनी सत्यभाषिता और निर्भीकतापूर्वक शायरी के हवाले से दुख व क्लेश और एमरजेंसी के दौरान जेल भी गये । कारावास के दौरान अपने इकलौते बेटे की मृत्यु के ग़म को सहन किया । अल्लामा इक़बाल के उपर्युक्त शेर के पसमंज़र में उन्होंने अपने शेर में बहादुरी का सबूत देते हुए कहा–

बे असा अपनी कलीमी है तो क्या, वक़्त के फ़िरऔन से डर जाएं क्या

दाद दीजिये कि हम जी रहे हैं वहां, हैं मुहाफ़िज़ जहां क़ातिलों की तरह

मैं हक़ का सिपाही हूं तमाशाई नहीं हूं, हर मार्का कर्बोबला मेरे लिए है

मज़लूम था मैं मुझको ही ठहराते हैं मुजरिम, यह फ़लसफ़ा जुर्मो सज़ा मेरे लिए है ।

हफ़ीज़ मेरठी के ये शेर उनकी सत्यभाषिता और निर्भीकता का जिस तरह सबूत देते हैं, इनकी रोशनी में जब हम अपने संकल्प व दृढ़ता का जायज़ा लेते हैं तो बड़ी हद तक निराशा होती है । इस सच्चाई की अनदेखी नहीं की जा संकती कि हफ़ीज़ मेरठी जिस तरह अपनी शायरी और अर्थपूर्ण कलाम के लिए भारतीय उपमहाद्वीप और पाकिस्तान के अलावा उर्दू दुनिया के क्षितिज पर चमकीले सितारे की भाँति ख़ूब चमके, लेकिन यह अफ़सोस भी कम नहीं कि उनकी कला-कौशल पर उनके जीवनकाल और मृत्यु-पश्चात जितना लिखना चाहिए था, नहीं लिखा गया । सच तो यह है कि उनके कारनामों पर ध्यान कम ही लोगों ने दिया । आज भी उनके कलाम को पढ़कर यह अनुमान होता है कि उनकी शायरी में वह चमकदार मोती छिपा है, जिसकी रोशनी में यह शेर ज़ुबां पर अपने आप ख़ुद आकर उनके मान-सम्मान और इज़्ज़त को बढ़ाने के लिए काफ़ी है–

मुश्क आन्सत कि ख़ुद बबोयद, न कि अत्तार बगोयद।

इस्लामी दृष्टिकोण के समर्थक शायर हफ़ीज़ मेरठी यद्यपि हमारे मध्य नहीं हैं, लेकिन उनका कलाम आज भी ज़िंदा है । हफ़ीज़ मेरठी के कारनामों पर किसी एक लेख में अपनी बातों को संक्षिप्त रूप से समेटना आसान नहीं, लेकिन उन बातों को जो बहुत अहम हैं लिखना ज़रूरी समझता हूं–

कारवां चाहे मुख़्तसर हो जाए, कोई रहज़न न हम सफ़र हो जाए ।

मर्दाने हक़परस्त को हर कर्बला क़बूल, पेचीदा मसला हो तो कुछ ग़ौर भी करें ।

रात को रात कह दिया मैंने, सुनते ही बौखला गयी दुनिया ।

अब अहले कारवां पे लगाता है तोहमतें, वह हम सफ़र जो हीले-बहाने में रह गया ।

जनाब हफ़ीज़ मेरठी के उपर्युक्त शेरों की जो रूप व छटा है, उसकी रोशनी में यह बात स्वीकार की जा सकती है कि "शायरी जुज़वयस्त अज़ पैग़म्बरी" और "इन मिनल शेर हिक्मत" की कसौटी पर खरा उतरता है । लेकिन शायरी का एक रंग वह भी है, जिसकी क़ुरआन मजीद में मनाही है । पहले ज़िक्र किये गये शेर का निर्भीकता पूर्वक और न्यायोचित तंज़ भी हमारे जीवन के व्यक्तिगत व सामूहिक कार्य-प्रणाली पर प्रतिबंध भी लगाता है और हमें सावधान भी करता है । जनाब मेरठी साहब के संकल्प व हिम्मत की दाद देने की मुझे इतनी ज़रूरत नहीं, बल्कि ज़रूरत इस बात की है कि हम इन सज्जन लोगों के पैग़ाम से शिक्षा प्राप्त करें और उनके लिए भलाई की दुआ करें । अल्लामा इक़बाल का यह शेर बड़ा ही क़ीमती है, काश कि यह शेर हमारे दिल में उतर जाए–

चूं मी गोयम मुसलमानम ब लरज़म, कि दानम मुश्किलात ला इलाह रा ।

हफ़ीज़ मेरठी ने यह बात अपनी करनी-कथनी से साबित करके दिखा दिया है, जिसका इक़रार करने वाला आज भी एक ज़माना है कि जो लोग सत्यप्रिय हैं उन्हें हर दुख व मुसीबत की आज़माइश से गुज़रना होगा । हफ़ीज़ मेरठी हों या इस्माईल मेरठी, हफ़ीज़ जालंधरी हों या अल्लामा इक़बाल, इन जैसे शायरों और अनगिनत साहित्यकारों ने अपने लेखों और कारनामों से इस्लामी समुदाय के सोये हुए लोगों को जागरूक करने की कोशिश की । ऐसे लोगों की सूची में एक नाम हफ़ीज़ मेरठी का भी होगा । हफ़ीज़ मेरठी का पहला शायरी संग्रह "शेर व शऊर" 1975 ईसवी में प्रकाशित हुआ । एक लंबी अवधि के बाद दूसरा संग्रह

"मताअ आख़िर शब" 1986 ईसवी में प्रकाशित हुआ । यह साल मेरठी साहब के लिए दुख व मुसीबत का था । एक मुसलमान जो मेरठी साहब के क़रीबी बताये जाते हैं उन्होंने उनकी बीवी का बड़ी बेदर्दी से क़त्ल कर दिया । ख़ुदा बेहतर जानता है कि मैंने रवानी में इस क़ातिल को मुसलमानों के लक़ब से क्यों उपाधि दी ? लेकिन यह कोई अनोखी घटना नहीं है । इसकी एक नहीं हज़ारों-लाखों मिसालें मुस्लिम क़ौम के दामन को दाग़दार कर चुकी हैं और कर रही हैं–

जो क़त्लेआम के शाहिद थे, मज़लूमों के हामी थे ।
इजारादार हैं दामने क़ातिल की सफ़ाई के ।।
हफ़ीज़ अब वे मेरी हक़गोई पर तनक़ीद करते हैं ।
मेरे अहबाब को दावे थे मेरी हमनवाई के ।।

"हफ़ीज़ मेरठी की याद आ रही है" के शीर्षक से एक लेख मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी, अमीर जमाअत इस्लामी हिन्द का मेरी नज़रों से गुज़रा । उन्होंने हफ़ीज़ मेरठी से संबंधित जो बातें लिखी हैं, उनको संक्षिप्त रूप में आपके हवाले करता हूं–"हफ़ीज़ साहब फ़ितरी शायर थे । उनको शायरी का ज़ौक़ ख़ुदादाद था । वे दिवंगत इक़बाल सुहैल और मौलाना शिबली के ख़ास शिष्यों में से थे । ख़ुद शायर थे और उर्दू और फ़ारसी शायरी पर गहरी नज़र रखते थे । उनके एक रिश्तेदार और मेरे दोस्त मुहम्मद इकराम साहब ने बयान किया कि (क़ातिब की ज़्यादती है कि उन्होंने दिवंगत शब्द को जो कर्मवाचक संज्ञा है अपनी अंजानी ग़लती से मरने या मरा हुआ के अर्थ में लिया है, जबकि संदर्भ के शुरुआत में लफ़्ज़े मरहूम जिसका माद्दह रहम है मौत नहीं लिया गया है-ख़ुशदिल) यह उस वक़्त की बात है जब मेरठ से इदारा अदबे इस्लामी हिन्द का मासिक मुखपत्र "मेआर" प्रकाशित होना शुरू हुआ था और हफ़ीज़ साहब की ग़ज़लें उसकी शोभा बन रही थीं कि संयोग से एक बार इसके कुछ शुमारे सुहैल साहब देख रहे थे । हफ़ीज़ साहब की ग़ज़ल पर उनकी नज़र जम गयी । उन्होंने इकराम साहब से पूछा कि ये कौन साहब हैं ? उन्होंने परोक्षतः परिचय कराया तो इक़बाल सुहैल ने कहा और उनका कहना सनद का दर्जा रखता है, कि इस व्यक्ति में शेर कहने की फ़ितरी योग्यता है । हफ़ीज़ साहब के व्यक्तित्व-निर्माण में तहरीके इस्लामी की बड़ी भूमिका रही है । वे जवानी ही से तहरीक से जुड़ गये । इसके लिए उन्होंने जेल की तकलीफ़ भी बर्दाश्त की, लेकिन उनके हौसले में कोई कमी नहीं आयी । वे अपने अमल से ऐलान करते रहे–

"बढ़ता है ज़ौक़े जुनूं यां हर सज़ा के बाद ।"

(माहनामा पेशेरफ़्त-जुलाई 2014, पृष्ठ 14)

लेख के समापन से पहले कुछ ऐसे शेर जिनमें सत्यवादिता और निर्भीकता का खुल्लम-खुल्ला इज़हार भी है और उनके रोशन विचार और रचनाएं भी आपको उपहारस्वरूप भेंट करता हूं–

ज़ुबां बंदी से कब जज़्बात का सैलाब रुकता है ।
हुदूदे बह्र की पाबंद तुग़यानी नहीं होती ।।
जान हथेली पर रख ले । कहनी है गर सच्ची बात ।।

इस शेर में इतनी सच्ची बात और सत्यवादिता का इज़हार दाद देने के योग्य है–

दस्ते हवस में सैफ़ है, जहल के हाथ में क़लम ।
मारक-ए-हयात में रह गये ख़ाली हाथ हम ।।

यह त्रासदी सिर्फ़ और सिर्फ़ मुस्लिम क़ौम की है कि आपस में उलझे हैं ।

फ़िर्क़ाबंदी है कहीं और कहीं ज़ातें हैं ।
क्या ज़माने में पनपने की यही बातें हैं ।।

ज़रूरत इस बात की है कि इस तरकीब पर हमारे प्रतिष्ठित जन ग़ौर फ़रमाएं और ऐसी अच्छी बातें बताएं, जो हमारे सांसारिक हितों के साथ-साथ पारलौकिक जीवन की भलाई के लिए लाभदायक हो ।

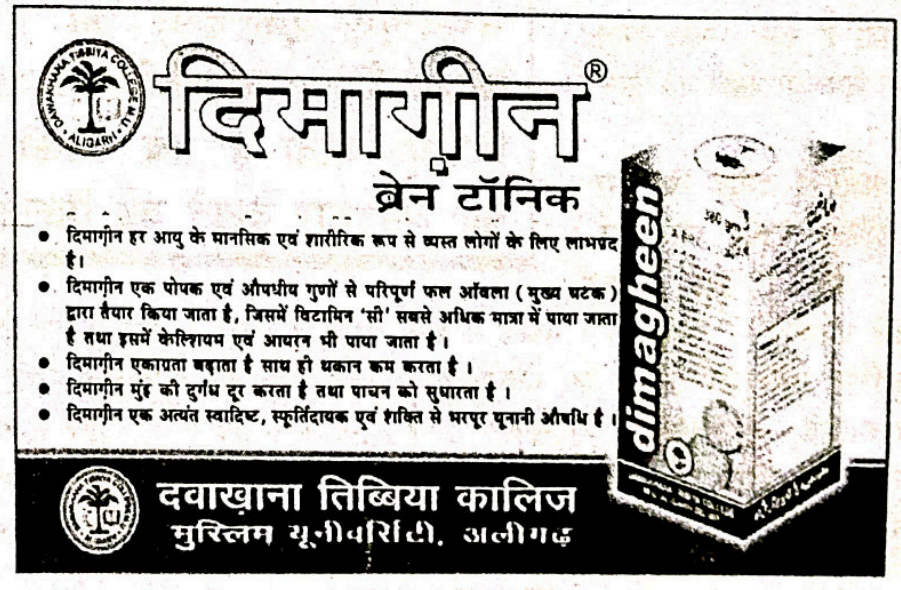

सफलता के लिए ज़रूरी है शब्दों का जादू

■ डॉ॰ विभा सिंह

साहित्य के शब्द शक्तियों का उल्लेख होता है अविधा, लक्षणा और व्यंजना का । लेकिन यहां इन शब्द शक्तियों की बात नहीं कर रहे हैं । यह बात अलग है कि हम जो बात कह रहे हैं बीच-बीच में प्रसंगवश उससे इन शब्द शक्तियों की ओर संकेत होता-सा प्रतीत हो ।

शब्द उपयोग जानकारियों के आदान-प्रदान तक ही सीमित नहीं है । कटु और मधुर शब्दों का दूसरों पर प्रभाव पड़ता है, शब्दों की मदद से ही लोग परामर्श के अपने विचारों में परिवर्तन कर लेते हैं, शब्दों में व्यक्त संवेदनाएं एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं । जब शब्दों को वाक्य में पिरोया जाता है तब उनकी शक्ति का चमत्कार देखने को मिलता है ।

शब्द उपयोग जानकारियों के आदान-प्रदान तक ही सीमित नहीं है। कटु और मधुर शब्दों का दूसरों पर प्रभाव पड़ता है, शब्दों की मदद से ही लोग परामर्श के अपने विचारों में परिवर्तन कर लेते हैं, शब्दों में व्यक्त संवेदनाएं एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं । जब शब्दों को वाक्य में पिरोया जाता है तब उनकी शक्ति का चमत्कार देखने को मिलता है ।

शब्दों में वाक्य पिरोकर देखिए उनका चमत्कार

एक ही वाक्य को कई ढंग से कहा जा सकता है । वाक्य में शब्द बदल कर उसे अधिक प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है, आदेश दिया जा सकता है, आलोचना की जा सकती है, उपहास किया जा सकता है, प्रेरणा दी जा सकती है, प्रसन्नता ज़ाहिर की जा सकती है तो विभिन्न प्रकार के रसों यथा वीर, शांत, करुणा या वीभत्स आदि की निष्पति की जा सकती है ।

नाना प्रकार के उपलब्ध फूलों से विभिन्न प्रकार की मालाएं गूंथी जा सकती हैं पर उनमें से एक गूंथने वाले के कौशल से गूंथी सर्वोत्तम होती है । वैसे ही अपने शब्द भंडार के शब्दों का उपयोग करके अपने विचार अनेक प्रकार से व्यक्त किये जा सकते हैं । एक तरह की अभिव्यक्ति से आकर्षण पैदा होता है तो दूसरी तरह की अभिव्यक्ति से विकर्षण ।

सफलता के लिए ज़रूरी शब्दों का सही उपयोग

वाकशक्ति का महत्व वहां तो और अधिक होता है जहां लोग बातों का खाते हैं । कारें और बहुत से वाहन पेट्रोल से आगे बढ़ते हैं पर लोग ज़्यादातर बोल कर ही आगे बढ़ते हैं ।

हमारा शब्द भंडार ही महत्वपूर्ण शस्त्रागार है, उसका सही ढंग से इस्तेमाल ही सर्वोत्तम सफलता पाने का तरीक़ा है । सफलता के लिए ज़रूरी है कि हमें शब्दों के सही उपयोग का, उनके विभिन्न अर्थों का ज्ञान हो ।

एक सामान्य विचार यदि अच्छी तरह व्यक्त किया जाए तो वह उस अच्छे विचार से जो ठीक से व्यक्त नहीं किया गया है, अधिक प्रभावशाली होता है विचार शब्दों पर चढ़कर

ही व्यक्तियों के बीच पहुंचते हैं । एक को दूसरे के साथ जोड़ने, दूर करने, मित्रता, शत्रुता के बीज बोने से शब्द महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं । जीवन में हम शब्दों की शक्ति का चमत्कार आये दिन देखते हैं ।

शब्दों से बनाएं व्यक्तित्व प्रभावशाली

यदि आप अपनी बात साफ़ ढंग से नपेतुले शब्दों में सधी हुई आवाज़ में कहकर सुनने वाले को प्रभावित कर सकते हैं, तो समझ लीजिए आपके पास एक ऐसा शस्त्र है, जिसके बल पर आप सफलता को अपनी दासी बना सकते हैं । यदि इस ख़ूबी के साथ आपका व्यक्तित्व भी प्रभावशाली है तो आप जीवन के किसी भी क्षेत्र में मात नहीं खा सकते ।

साक्षात्कार में मामूली प्रश्नों के उत्तर से ही योग्यता की जांच हो जाती है, बातचीत के माध्यम से लोग आपके ज्ञान, अनुभव तथा पूरे व्यक्तित्व से ही परिचित हो जाते हैं ।

नेता जनता का मन जीत लेते हैं, वकील अपना मुक़दमा जीतते हैं, दुकानदार अपना माल बेचते हैं, कैसे ? शब्दों के उचित चयन और प्रयोग से ही तो ।

● सुकरात अपने को ऐसे व्यक्त करते थे कि श्रोता झूम उठे ।

● चर्चिल की शक्ति उनकी वाक्शक्ति थी ।

लोग उन्हें पढ़ते थे इसलिए नहीं कि की उन्होंने क्या कहा बल्कि इसलिए कि कैसे कहा ? जब दूसरे महायुद्ध में ब्रिटेन के सामने जीवन-मरण का प्रश्न था तब चर्चिल ने कहा, "हमें इस प्रकार विपत्ति का सामना करना है कि यदि ब्रिटेन 1000 साल तक रहे तब भी यही कहा जाए कि इतिहास का यही सर्वोत्तम समय था ।"

● हम याद करे गांधी जी का 'करो या मरो' का नारा जिसने सारे देश में जान फूंक दी और लोग स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े ।

● ग्रीस के एक नेता के लिए कहा जाता है कि वह भाषण देता था तो मेघगर्जन होता था, बिजलियां चमकती थीं ।

● मार्क एंटनी ने ब्रुटस और उसके सहयोगी षड्यंत्रकारियों से रोम साम्राज्य को बचाया था, अपनी उस वाक्शक्ति से जा उसने सीजर की शोक सभा में प्रयुक्त की ।

शब्दों के चयन से पलट जाते हैं पासे

ऐसे अनेक लोग हुए हैं जिन्होंने शब्दों के उचित चयन से पासे पलट दिये हैं । शब्दों के उचित प्रयोग से हम आहत मन को सहला सकते हैं, सांत्वना दे सकते हैं, मन के घावों

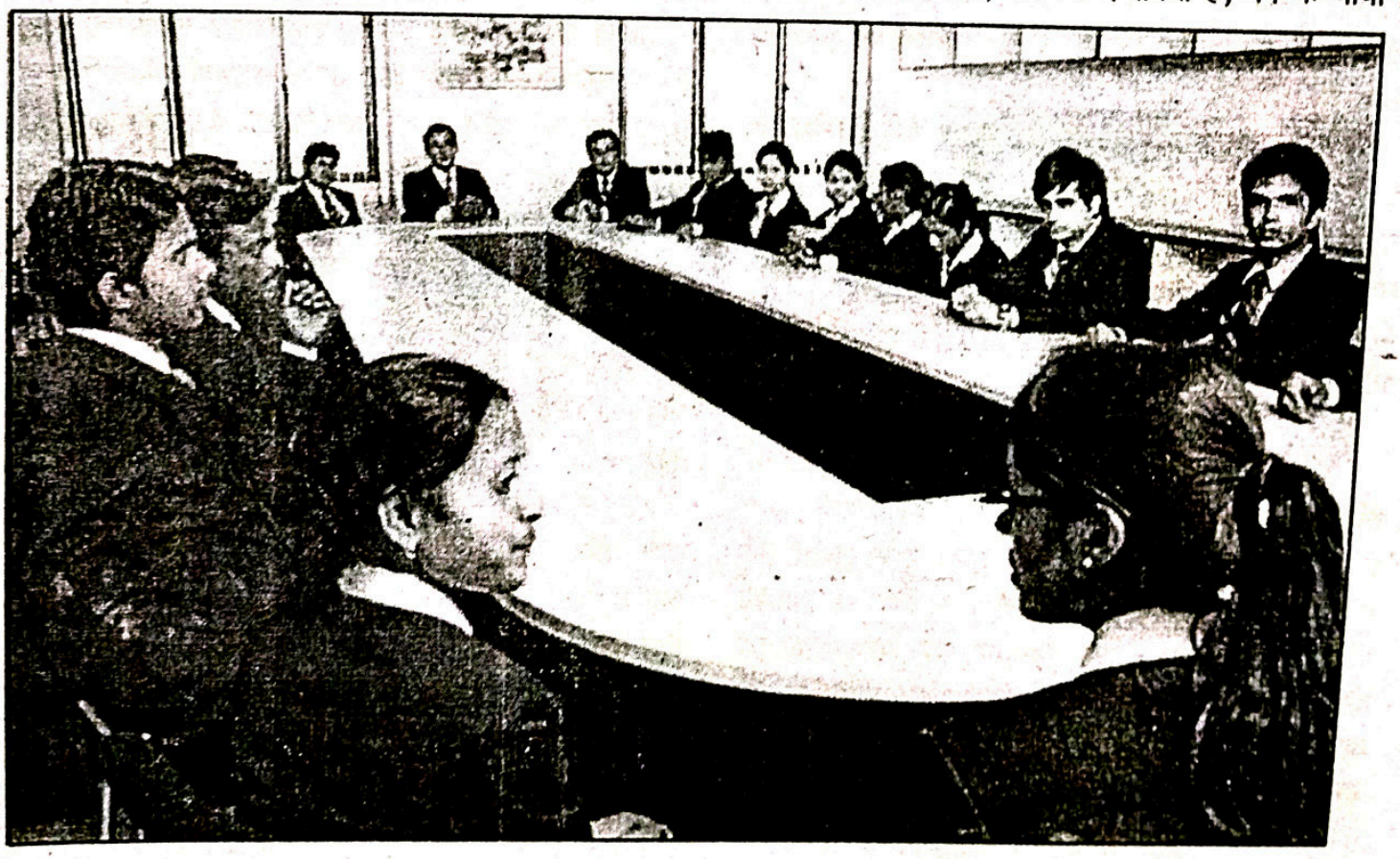

पर मरहम लगा सकते हैं । वाणी के द्वारा हम प्रेम, घृणा, क्रोध, सहानुभूति व्यक्त कर सकते हैं । यदि जिह्वा अच्छी तरह प्रशिक्षित है तो आपके पास असीम शक्ति है, ख़ासकर जब व्यक्त किये जाने वाले विचारों में चरित्र झलकता हो और भ्रष्टाचार की गंध न आती हो ।

शब्दों के चयन का तो महत्व है ही पर वे किस प्रकार बोले जाते हैं, इसका भी बहुत महत्व है । वेश-भूषा, प्रसन्न मुद्रा आदि का तो सामने वाले के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता ही है पर वाणी का विशेष प्रभाव पड़ता है । व्यक्ति के बोलते ही उसकी असलियत सामने आ जाती है । चर्चिल का कहना था कि कोई भी मेरे सामने एक बार बोल ले और दस क़दम चल ले तो मैं उसका चरित्र बता दूंगा ।

सही उच्चारण व लहज़ा सीखने की चीज़

वाणी व लहजे से लोग प्रभावित होते हैं । एक शब्द या वाक्यांश बोलने के ढंग से पता चल जाता है कि आप निवेदन कर रहे हैं, आदेश दे रहे हैं या मशविरा दे रहे हैं ।

सही उच्चारण और लहज़ा सीखने की चीज़ है । दूसरों को सुनते समय उसका स्वयं पर पड़ता हुआ प्रभाव महसूस किया जा सकता है । बात तो कुछ नहीं होती पर लहज़ा इतना तीखा व व्यंगात्म होता है कि सुनने वालों की भावनाएं आहत होती हैं ।

जिस तरह आंखें मन का भेद खोल देती हैं वैसे ही वाणी भी मनुष्य की भावनाओं को बाहर ला देती है । वाणी यदि एक ओर व्यक्ति के विश्वास, दृढ़ता, साहस और समझदारी जैसे गुण व्यक्त करती है तो दूसरी ओर वाणी से ही मनुष्य की चिड़चिड़ाहट, क्रोध, उतावलापन जैसी दुर्बलताएं भी उजागर हो जाती हैं ।

जलाइए अपनी आवाज़ का जादू

यहां यह उल्लेखनीय है कि आपकी आवाज़ दूसरों को वैसी नहीं सुनायी पड़ती जैसी स्वयं आपको सुनायी पड़ती है । यदि आप अपनी आवाज़ को टेपरिकार्डर पर रिकार्ड कर के सुनें तो आपको शायद विश्वास न हो कि वह आपकी ही आवाज़ है । अत: अपने उच्चारण और अभिव्यक्ति को दोषरहित और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए अच्छा होगा कि आप अपनी आवाज़ को टेप पर रिकार्ड कर, बार-बार सुनें । उससे आपको उच्चारण और अपनी अभिव्यक्ति की कमियों का सही अंदाज़ हो सकेगा और साथ ही आप उन्हें सुधारने का प्रयास कर सकेंगे ।

विचारों की अभिव्यक्ति के लिए ज़रूरी नहीं कि कठिन शब्द प्रयोग में लाए जाएं, सामान्य सहज शब्दों से भी मनोभाव अच्छी तरह व्यक्त किये जा सकते हैं । आपका, शब्द भंडार प्रचुर होना चाहिए ताकि एक ही शब्द बार-बार न दोहराना पड़े ।

शब्द होते हैं विचारों के परिधान

अभिव्यक्ति क्षमता शब्द भंडार के अनुरूप होती है । शब्द समाप्त होते ही असंख्य विचार अभिव्यक्त होने के लिए मानो तड़फड़ाते हैं । शब्द भंडार जितना विशाल होता है उतने ही प्रभावशाली ढंग से विचार व्यक्त हो सकते हैं । लार्ड चेस्टरफील्ड ने कहा है, "शब्द विचारों के परिधान हैं जो चीथड़ों में नहीं व्यक्त किये जाने चाहिए ।"

अत: अपना शब्द भंडार बढ़ाने की आवश्यकता है । इसका एक ही तरीक़ा है कि उन्हें प्रयोग में लाया जाए और सामान्य ज्ञान बढ़ाया जाए । जो भी नया शब्द सुनने या पढ़ने में आये उसे समझ, उसका प्रयोग करके अपने शब्द भंडार का हिस्सा बना लेना चाहिए ।

शब्दों की अभिव्यक्ति को बनाइए सफलता की सीढ़ी

अन्य गुणों के साथ उनकी प्रभावशाली भाषाशैली भी रही है, भाषा पर नियंत्रण द्वारा अपने मातहतों, सहयोगियों, अनुयायियों को साथ लेकर चल सकते हैं । अपनी इस सामर्थ्य को बढ़ाने के लिए हमें अधिक पढ़ना होगा, ज्ञान अर्जित करना होगा, महान व्यक्तियों के विचार जानने होंगे । ज्यों-ज्यों हम उनके शब्दों व विचारों को अपनाएंगे हमारी अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ेगी । हमारे शब्द जब ढंग से हमारे मुंह से निकलेंगे तो उनका दूसरों पर प्रभाव पड़ना आरंभ हो जाएगा । लोग सुनेंगे और प्रभावित होकर उसी के अनुसार कार्य करेंगे ।

अपने शब्दों के उचित एवं सही उपयोग से आपकी अभिव्यक्ति सुंदर बनेगी और सफलता की सीढ़ी चढ़ना आपके लिए आसान होता जाएगा । धीरे-धीरे अभ्यास के द्वारा जीवन में एक समय ऐसा आएगा कि अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में आपकी सफलता में आपके व्यक्तित्व के अन्य गुण शायद गौण ही रहें, किंतु शब्द सामर्थ्य पर आधारित आपकी प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति प्रमुख ज़रिया बन जाएगी ।

भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ कारगर लड़ाई की ज़रूरत

■ विद्या प्रकाश

विभिन्न जनसमस्याओं और अवामी मुद्दों को लेकर जब तब आज़माये जाने वाले लोकतांत्रिक तरीक़े अब बेदम और बेअसर साबित हो रहे हैं। विद्युत और पेय जलापूर्ति में अनियमितता, सड़क की बदहाली, भ्रष्टाचार तथा शासन की ग़लत नीति के ख़िलाफ़ किसी संगठन या प्रतिपक्ष द्वारा कभी कलेक्ट्रेट परिसर में आये दिन धरना-प्रदर्शन, भूख हड़ताल तथा पुतला दहन किया जाता है, कभी कैंडल मार्च आदि विरोध किया जाता है।

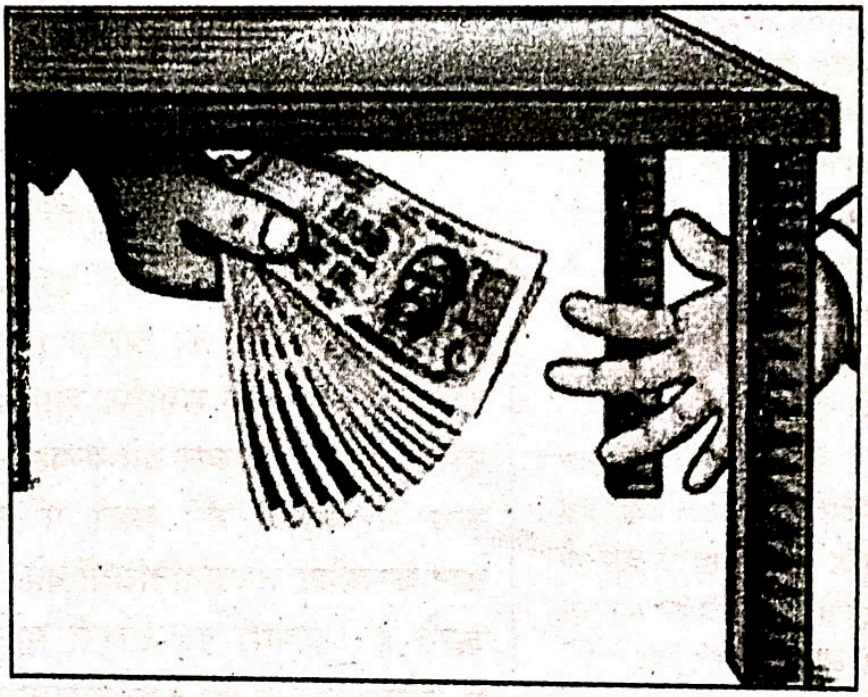

कभी शहर बन्द तथा ज़िला बन्द किया जाता है तथा कभी राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन ज़िला प्रशासन को सौंपकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली जाया करती है। हम किसी समस्या या मुद्दे को लेकर विरोध प्रदर्शन के तौर पर इन लोकतांत्रिक तरीक़ों की सालों से आज़माइश पर आज़माइश करते चले आ रहे हैं।

जैसे-जैसे हम धरना प्रदर्शन, भूख हड़ताल व बन्द का आयोजन करते जाते हैं, वैसे-वैसे दूर होने के बजाय समस्या सुरक्षा की भाँति पहले से और भी जटिल तथा गंभीर होती जाती है। भ्रष्टाचार, कोटेदार या ग्राम प्रधान की मनमानी या किसी अन्य जनहितकारी मुद्दे को लेकर ज़िला प्रशासन को दिये अथवा शासन को भेजे जाने वाले ज्ञापन पर शायद ही कभी सुनवाई संभव हो पाती हो।

इन ज्ञापनों को या तो कूड़ादान में फेंक दिया जाता है या फिर ठंडे बस्ते में लावारिस की तरह ग़ैर ज़िम्मेदाराना ढंग से डाल दिया जाता है। कुछ लोग तो भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ चौराहे पर पुतला दहन करते हैं जिसका न कोई तर्कसंगत औचित्य है और न कोई आवश्यकता। भ्रष्टाचार तो न्यायालयों तथा सरकारी कार्यालयों में हैं, जहां न्यायाधिकारी के सामनेउसका पेशकार या अहलपद वादकारियों से खुल्लमखुल्ला दस-दस बीस-बीस रुपया तारीख़ पेशी के नाम पर वसूलता है, मगर अधिकारी व हाकिम हुक्काम इस लिए नहीं बोलता कि इसमें उसकी भी तयशुदा हिस्सेदारी होती है तथा शाम को इसी रुपये में उसके बंगले में शाकभाजी, मिष्ठान्न तथा बेटे के सालगिरह पर क़ीमती गिफ़्ट का पैक पहुंच जाया करता है। हमें मौक़े पर दफ़्तरों में जाकर रंगे हाथ ऐसे पेशकारों को पकड़कर तत्काल कारगर कार्रवाई करानी चाहिए मगर हम विरोध प्रदर्शन बाज़ार अथवा तिराहे पर वहां करते हैं जहां भ्रष्टाचार नहीं है

तथा जहां भ्रष्टाचार हो रहा है वहां जाने तथा रिश्वतख़ोर पेशकार को गिरफ़्त में लेने की हमारी हिम्मत नहीं पड़ती । हम विरोध करते तो हैं मगर अपनी जान बचाकर ।

शहर बन्द या ज़िला बन्द का आयोजन कर हम कौन-सा मक़सद हासिल करना चाहते हैं ? बन्द के आयोजन से सर्वाधिक परेशानी रोज़-बरोज़ कुआं खोदकर पानी पीने वाले टुटपुजिया ख़ुदरा व्यापारियों को ही होती है । इसी प्रकार किसी मुद्दे मसाइल के ख़िलाफ़ ट्रेन रोकने से हमारा मक़सद तो हरगिज़ पूरा नहीं हो पाता, अलबत्ता ट्रेन में सफ़र करने वाले मुसाफ़िरों की फ़ज़ीहत हम ज़रूर बढ़ा देते हैं ।

ट्रेन में सवार कोई यात्री परिवार के बीमार सदस्य के इलाज हेतु वाराणसी जा रहा है, कोई छात्र बी०एच०यू० में इंटरव्यू या इम्तिहान के सिलसिले में जा रहा है तथा कोई दिवंगत संबंधी के संस्कार में शामिल होने के मक़सद से जा रहा है । इन्हें समय पर गंतव्य पर पहंचने की जल्दी है ।

जब तक हम अपनी मानसिकता तथा संघर्ष का तरीक़ा नहीं बदलेंगे, तब तक न समस्याओं से छुटकारा हासिल होगा और न भ्रष्टाचार का ख़ात्मा । एक तरफ़ हम भ्रष्टाचार की समाप्ति चाहते हैं तथा दूसरी तरफ़ भ्रष्टाचार को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा देने वाले मंत्रियों तथा वादाफ़रामोश जनप्रतिनिधियों को सम्मानित करते हैं । हमारी इस दोहरी मानसिकता से जनसमस्याओं का व्यावहारिक स्तर पर, समाधान क़तई संभव नहीं है ।

क्या रेलगाड़ी रोक कर हम उनका नुक़सान तथा चिंता वृद्धि नहीं करते ? हम तो ट्रेन रोककर, रोडवेज की बस में आग लगाकर तथा फोटो के साथ अख़बार में ख़बर छपवाकर अपनी उपलब्धि पर प्रसन्न हो जाया करते हैं मगर इससे यात्रियो की होने वाली फ़ज़ीहत के प्रति हम अमानवीय स्तर पर बेरहम, निष्ठुर तथा असंवेदनशील हो जाया करते हैं । विरोध का हमारा यह ढंग क्या मानवीय है ?

होना तो यह चाहिए कि हम किसी मुद्दे को लेकर अपने क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों तथा मंत्रियों को पकड़ें तथा समस्या का समाधान न होने तक उनका ध्यान बराबर आकृष्ट कराते रहें । अपने क्षेत्र के वादाफ़रामोश नाकारा विधायकों, सांसदों तथा मंत्रियों का विरोध करने के बजाय उलटे हम उन्हें कार्यक्रम का मुख्य तथा विशिष्ट अतिथि बनाते हैं, स्वागत तथा प्रशास्तिगान करते हैं इस लालच में कि उनको सरकारी स्तर पर मिलने वाली विधायक निधि तथा सांसद निधि में से एक कौर हमें भी मुफ़्त में मिल जाएं और हमारा भी कुछ कल्याण हो जाए । इसी लालच में हम उनके आगे पीछे दुम हिलाते और उनके कुकर्म की तरफ़ से आंख मूंद लेते हैं । अनेक ऐसे अवामी नुमाइन्दे हैं जो भ्रष्टाचार तथा परायी ज़मीन हड़पने में कुख्यात हैं मगर उनका विरोध क्यों नहीं किया जाता । किसी ग़लत काम तथा भ्रष्टाचार के विरोध तथा समस्या के निराकरण हेतु हमें सर्वप्रथम अपनी मानसिकता बदलनी होगी तथा कारगर तरीक़े से संघर्ष करना होगा ।

जब तक हम अपनी मानसिकता तथा संघर्ष का तरीक़ा नहीं बदलेंगे, तब तक न समस्याओं से छुटकारा हासिल होगा और न भ्रष्टाचार का ख़ात्मा । एक तरफ़ हम भ्रष्टाचार की समाप्ति चाहते हैं तथा दूसरी तरफ़ भ्रष्टाचार को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा देने वाले मंत्रियों तथा वादाफ़रामोश जनप्रतिनिधियों को सम्मानित करते हैं । हमारी इस दोहरी मानसिकता से जनसमस्याओं का व्यावहारिक स्तर पर, समाधान क़तई संभव नहीं है ।

आवश्यकता इस बात की है कि जनपद स्तर पर प्रबुद्ध लोगों तथा जागरूक मतदाताओं का मज़बूत संगठन बने और वे जनहितकारी मुद्दों तथा मामलों को लेकर सार्थक सशक्त लड़ाई लड़ें । नाकारा विधायकों तथा सांसदों से उनके किये-धरे का हिसाब मांगे तथा न सुधरने पर इसी के लिए दबाव बनाएं । किसी विभागीय कार्यालय के भ्रष्ट अधिकारी या कर्मचारी के ख़िलाफ़ सबूत जुटाकर ठोस कार्रवाई करें । हवा में बेमतलब तीर चलाने से कोई फ़ायदा नहीं होने वाला । अपनी मांग को लेकर पुतला दहन या बन्द के आयोजन से न मसले का मुश्तक़िल हल निकलने वाला है और न इससे शासन-प्रशासन पर कोई असर पड़ने वाला है । भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ लड़ाई जनता राजनीतिक दलों के भरोसे नहीं, ख़ुद अपने दम-ख़म पर लड़े ।

भारत के 500 टेस्ट मैचों का सफ़र

■ ए॰ एन॰ शिब्ली

भारत ने पहले टेस्ट क्रिकेट मैच में न्यूज़ीलैंड पर 197 रन से जीत दर्ज करके अपने ऐतिहासिक 500वें टेस्ट मैच को यादगार बना दिया । भारत ने इस जीत से एक तरह से हैट्रिक भी पूरी की । उसने इससे पहले अपने 300वें टेस्ट मैच में 1996 में अहमदाबाद में दक्षिण अफ़्रीका को 64 रन से और 400वें टेस्ट मैच में 2006 में किंग्सटन में वेस्टइंडीज को 49 रन से हराया था । भारत की यह टेस्ट मैचों में कुल 130वीं जीत है । भारत ने दिसंबर 2012 से घरेलू सरज़मीं पर 12 मैचों में अपना अजेय अभियान भी जारी रखा । उसने इनमें से दस मैच जीते हैं । दो मैच ड्रा रहा । भारत को 2012 में इंग्लैण्ड के हाथों हार मिली थी उसके बाद से भारत अब तक अपनी धरती पर नहीं हारा है । 1977 और 1980 के दौरान भारत ने अपनी धरती पर बिना हारे 20 टेस्ट खेले । उसी प्रकार 1960 से 1964 तक भारत ने 16 टेस्ट खेले जिनमें से उसे एक में भी हार नहीं मिली ।

भारत ने अपना पहला टेस्ट जून 1932 में इंग्लैंड के ख़िलाफ़ खेला था । उस टेस्ट में भारत को हार मिली थी । भारत ने 100वां टेस्ट जुलाई 1967 में इंग्लैंड के ही ख़िलाफ़ खेला यहां भी भारत को हार ही मिली । भारत ने अपना 200वां टेस्ट पाकिस्तान के ख़िलाफ़ 1982 में खेला । यह टेस्ट डरा पर समाप्त हुआ ।

भारत दुनिया की सिर्फ़ चौथी ऐसी टीम है जिसने 500 या उससे अधिक टेस्ट खेले हैं । अब तक सबसे अधिक 976 टेस्ट खेलने का रिकार्ड इंग्लैंड के नाम है । इंग्लैंड ने अब तक 350 टेस्ट जीते हैं, जबकि 286 टेस्ट में उसे हार मिली है । 342 टेस्ट ड्रा रहे हैं । सबसे अधिक टेस्ट खेलने के मामले में ऑस्ट्रेलिया दूसरे नंबर पर है । ऑस्ट्रेलिया ने 791 टेस्ट खेले हैं जिनमें से उसे 372 में जीत मिली है और 211 में हार मिली है । 206 टेस्ट ड्रा रहे हैं । 500 या उससे अधिक टेस्ट खेलने वाली तीसरी टीम वेस्टइंडीज की है । वेस्टइंडीज ने 517 टेस्ट खेले हैं जिनमें उसे 164 में जीत मिली है और 179 में हार का सामना करना पड़ा है ।

भारतीय टीम ने अब चूंकि 500 टेस्ट पूरे कर लिए हैं तो आइये देखते हैं कि भारत ने किन-किन टीमों के ख़िलाफ़ कितने मैच खेले हैं और उसमें उसे कितने में जीत या हार मिली है । वैसे तो भारत को सबसे अधिक 24 जीत ऑस्ट्रेलिया के ख़िलाफ़ मिली है, मगर उसने सबसे अधिक 112 टेस्ट इंग्लैंड के ख़िलाफ़ खेले हैं । इंग्लैंड के ख़िलाफ़ भारत को 21 में जीत और 43 में हार मिली है, जबकि 48 टेस्ट मैच डरा रहे हैं ।

ऑस्ट्रेलिया के ख़िलाफ़ भारत को 40 मैच में हार



मिली है, एंक टेस्ट टाई रहा है, जबकि 25 टेस्ट डरा हुए हैं। पाकिस्तान के ख़िलाफ़ भारत ने 59 टेस्ट खेले हैं जिनमें से उसे 9 में जीत मिली है, जबकि 12 में हार मिली है। 38 टेस्ट ड्रा रहे हैं। बंगलादेश के ख़िलाफ़ भारत को 8 टेस्ट खेलने का मौक़ा मिला है जिसमें से उसे 6 में जीत मिली है और दो टेस्ट डरा रहा है। बंगलादेश एकमात्र ऐसी टीम है जिसके ख़िलाफ़ भारत अब तक कोई टेस्ट नहीं हारा है। ज़िम्बाब्वे भी भारत को दो बार हरा चुका है। भारत और ज़िम्बाब्वे के बीच 11 टेस्ट हुए हैं जिनमें भारत को 7 में जीत मिली है और दो में हार का सामना हुआ है।

न्यूज़ीलैंड के ख़िलाफ़ भारत ने अब तक 55 टेस्ट खेले हैं जिनमें से उसे 19 में जीत मिली है, 10 टेस्ट में हार हुई है और 26 टेस्ट में इन दोनों टीमों के बीच हुआ टेस्ट डरा रहा है। दक्षिण अफ़्रीक़ा और भारत के बीच 33 टेस्ट मैच हुए हैं। इनमें से भारत को 10 में जीत मिली है, 13 टेस्ट में हार मिली है और 10 टेस्ट का कोई नतीजा नहीं निकला। वेस्टइंडीज और भारत की टीमें अब तक 94 बार आपस में भिड़ी हैं। 18 में भारत को जीत मिली है, जबकि 30 टेस्ट भारत हारा है। 46 टेस्ट डरा रहे। भारत और श्रीलंका के बीच अब तक 38 टेस्ट हुए हैं।

अब तक 32 खिलाड़ियों को भारत की कप्तानी करने का गौरव प्राप्त हो चुका है। इनमें महेंद्र सिंह धोनी सबसे अधिक सफल रहे। धोनी ने भारत के लिए सबसे अधिक 60 मैचों में कप्तानी की है, 27 मैचों में उन्होंने भारत को जीत दिलाई है, जबकि सिर्फ़ 18 टेस्ट वह हारे हैं। 15 टेस्ट धोनी की कप्तानी में ड्रा रहे। रवि शास्त्री ने सिर्फ़ एक मैच में कप्तानी की और उसमें उन्हें जीत मिली। इस प्रकार उनकी सफलता का प्रतिसाद 100 है। ज़्यादा मैच खेलने वाले कप्तानों की बात करें तो इनमें कोहली कमाल कर रहे हैं वह अब तक 15 मैचों में कप्तान बने हैं जिनमें से उन्हें 8 में जीत मिली है, वह सिर्फ़ 2 टेस्ट हारे हैं, 5 टेस्ट डरा रहे हैं।

मुहम्मद अज़हरुद्दीन जिन्हें इतिहास में ऐसे एकमात्र खिलाड़ी होने का गौरव प्राप्त है जिसने अपने पहले तीनों टेस्ट में शतक बनाया ने भी भारत की कप्तानी की। अज़हर ने 47 मैचों में भारत की कप्तानी की जिनमें से उन्हें 14 में जीत मिली, 14 में ही हार मिली और उनकी कप्तानी में खेला गया 19 टेस्ट ड्रा रहा।

कविता

नहीं आ पाते कुछ लोग !

सबके भाग्य में नहीं होता
कि उठे सुबह खाया-पिया
निकले घर से
और रात ढलने से
पहले वापस आ गये
कुछ लोग नहीं भी आ पाते
न जाने कहां उलझ जाते हैं
कौन बन्दा कर लेता है पिंजरे में ?
और घर लौटते-लौटते
बीत जाती है सारी उमर
वे खुशनसीब हैं
जो लौट आते हैं
शाम ढले घर।
मार गिराते हैं कुछ को बहेलिये
बन जाते हैं भोजन
राह तकने वाले तड़पते रहते हैं
मरने वाला बन जाता है ख़बर
राह तकती आंखें हो जाती हैं अंधी
खुशनसीब हो तुम
जो आ गये घर वापस
अन्यथा कितने शिकार
हो जाते हैं सड़क के
किसी के गुस्से के
किसी के बिछाये शिकंजे में
फंसकर दम तोड़ देते हैं
जो आ गये
वे आ गये
जो नहीं आये
वे नहीं आ पाये फिर कभी
और लौटे भी बरसों बाद
तो ख़त्म हो जाती है
उनकी दुनिया उनके सपने।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कालोनी, भरत नगर,
चन्दनगांव छिन्दवाड़ा (म०प्र०)

मुसलमानों की अनदेखी से पिछड़ रहा है भारत

■ ठाकुर पवन सिंह

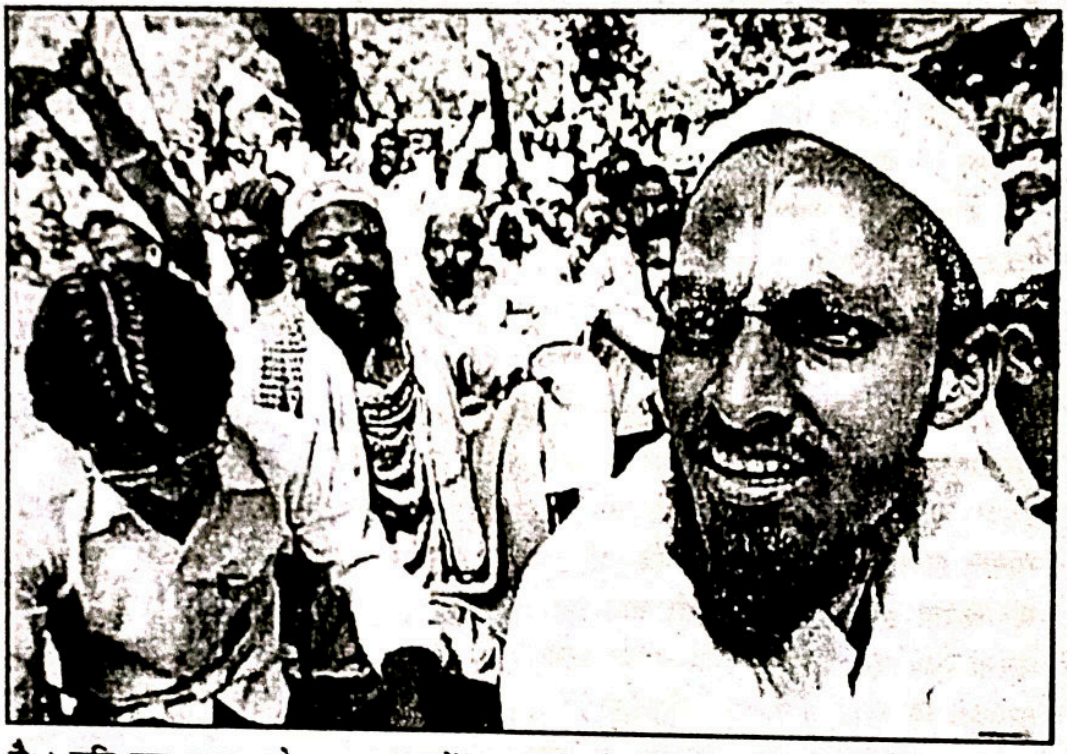

देश की तरक़्क़ी के लिए मुसलमानों का ताक़तवर होना ज़रूरी है । हमारा देश पिछले कई दशकों से विकासशील देश की श्रेणी से आगे नहीं बढ़ पा रहा है, तो इसका एकमात्र कारण मुसलमानों की उपेक्षा है । देश में मुसलमानों की आबादी अब इतनी अधिक है कि यदि अब भी उन्हें अनदेखा किया जाता रहा तो देश कभी भी विकसित देशों की क़तार में शामिल नहीं हो सकेगा । देश की तरक़्क़ी के लिए अब मुसलमानों का ताक़तवर होना अनिवार्य हो गया है । यदि हम भारत को विश्व का सिरमौर बनाना चाहते हैं तो मुसलमानों की उपेक्षा अब बंद होनी चाहिए ।

नेताओं की गंदी राजनीति के कारण देश बुरी तरह दो वर्गों में विभाजित हो चुका है । एक वर्ग हिन्दुओं का है जो देश को अपनी बपौती मानता है, तो दूसरा वर्ग मुसलमानों का है, जो ख़ुद को अपने ही देश में अपमानित महसूस करता है । इसी का यह नतीजा है कि देश की तरक़्क़ी में मुसलमानों का योगदान उनकी आबादी के हिसाब से नगण्य है ।

जब तक यह खाई नहीं पटेगी, तब तक हिन्दुस्तान की तरक़्क़ी नहीं हो सकती । भारतवर्ष को बुद्धिजीवियों का देश कहा जाता है, लेकिन पिछले कुछ दशकों की राजनीति ने देश के दोनों समुदायों के लोगों के बीच एक घृणा और नफ़रत का माहौल पैदा कर दिया है । दोनों समुदायों को आपस में लड़वाकर ये नेता अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं और भोली-भाली जनता इनके चक्रव्यूह में फंसकर अपना नुक़सान तो कर ही रही है, देश के विकास को भी अवरुद्ध कर रही है । अब समय आ गया है कि देश के बुद्धिजीवी जागें और दूसरे धर्म के लोगों को उपदेश देने के बजाय अपने धर्म के लोगों को झकझोरें और उनके मलिन मन को साफ़ करने का काम करें । नहीं तो देश की राजनीति अभी हिन्दू-मुसलमानों का कितना और ख़ून बहाएगी, कहना मुश्किल है ।

हमारे युवा और होनहार मुख्यमंत्री अखिलेश यादव उत्तर प्रदेश के आला अफ़सरों को समय-समय पर समझाते रहते हैं कि सांप्रदायिक ताक़तों को पूरी सख़्ती से कुचलो, नहीं तो ये यू०पी० को दंगों की आग में झोंक देगी । लेकिन यदि पूरी मशीनरी इन सांप्रदायिक ताक़तों के आगे बौनी साबित हो रही है, तो इसका एकमात्र कारण दोनों समुदायों के

बुद्धिजीवियों का ख़ामोश हो जाना है । दरअस्ल ऐसा नहीं है कि दोनों वर्गों में अब बुद्धिजीवी लोग नहीं रहे, वरना देश और प्रदेश में हो रहे नंगानाच को देखकर ये बुद्धिजीवी इतने कुपित और निराश हैं कि इन्होंने अब मौन धारण कर लिया है । लेकिन मेरी बुद्धिजीवी वर्ग से अपील है कि कभी-कभी मौन रह जाना लड़ाई को बढ़ने से रोकने का काम करता है । यह सच है कि लेकिन अब कहीं आग लगी हो, तब भी यदि मौन रह गये तो सब कुछ खाक हो जाएगा । बस देश में अब आग लगती ही बाक़ी है । इससे पहले कि गंगा जमुना तहज़ीब और हमारी सदियों पुरानी सभ्यता खाक हो जाए, आप अपना मौन तोड़िए ताकि देश दंगों की आग में झुलसने से बच जाए ।

बड़ी अजीब विडंबना है कि आज़ादी के बाद कोई भी सरकार ऐसी नहीं आयी जिसे मुसलमानों का विश्वास हासिल हो । सबने मुसलमानों को वरग़लाकर और उन्हें हसीन सपने दिखाकर सत्ता का सुख भोगा है । मुसलमान आज़ादी के समय जहां था, आज भी वहीं खड़ा है । मुसलमान देश को विश्व का सिरमौर बना सकते हैं, लेकिन इसके लिए पहले उनका भरोसा जीतना होगा, उन्हें अपना मानना होगा, उन्हें सिर्फ़ वोट बैंक की नज़र से देखना अब बंद करना होगा । सबसे बड़ी बात यह कि उन पर शक करना अब पूरी तरह से बंद करना होगा । हिन्दुस्तान की तरक़्क़ी के लिए अब यह अनिवार्य हो गया है ।

देश का मुसलमान यदि पिछड़ा होगा, तो मुल्क की तरक़्क़ी नहीं हो सकती । सत्ता में बैठे हुक्मरानों को अब इस पर गंभीरता से सोचना चाहिए । मुसलमानों को आगे बढ़ाकर ही देश आगे बढ़ सकेगा । उनकी सुरक्षा का पूरा इन्तिज़ाम होना चाहिए और उनकी समस्याओं का पूरी तरह समाधान होना चाहिए । उन्हें बराबरी पर लाना होगा ताकि तरक़्क़ी की गाड़ी के चारों पहिए हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई समाज ऊंचाई पर रहें और प्रगति की यह गाड़ी निरंतर दौड़ती रहे ।

मेरा मानना है कि यदि सियासत में बैठे लोग मुसलमानों को आगे बढ़ाएं और उनकी तरक़्क़ी पर ध्यान दें, तो मैं यह बिल्कुल मान नहीं सकता कि मुसलमान फिर भी ग़लत काम करेंगे । दरअस्ल उनके ग़लत काम करने के पीछे कहीं न कहीं उनका भूखा पेट ज़िम्मेदार है । किसी कवि ने लिखा भी है कि–

भूख इन्सान को हैवान बना देती है,
यदि हद से बढ़ जाए तो शैतान बना देती है ।
भूखे पेट को ऐ देशभक्ति सिखाने वालों,
भूख इन्सान को ग़द्दार बना देती है ।

तो मुस्लिमों का भूखा, नंगा, फटेहाल होना कहीं न कहीं इसके लिए ज़िम्मेदार है, लेकिन जब हम उन्हें बराबरी पर ले आएंगे, तो फिर वे कोई ग़लत काम नहीं करेंगे, क्योंकि कोई भी शौक़िया मुजरिम नहीं बनना चाहता । जितने भी मुजरिम हैं, उनमें से 99 प्रतिशत लोग किसी मजबूरी में मुजरिम बनते हैं । उनकी इस ख़ौफ़नाक ज़िन्दगी के पीछे का काला सच जानने की कोशिश तो कीजिए, आपके मन में उनके प्रति भरी घृणा और नफ़रत पल भर में मुहब्बत में बदल जाएगी । मुस्लिम भी कहीं न कहीं वक़्त का मारा हुआ है, परेशान है, मजबूर है, उसे बराबरी पर लाइए और उसे उसके हक़ दीजिए, आप मुसलमानों में एक नया परिवर्तन देखेंगे, यह मेरा दावा है ।

लेखक संपर्क : विधूना, ज़िला-औरैया (उ०प्र०)
मोबाइल : 09411613020
('हक़दार' पाक्षिक, अंक 16, बीकानेर, राज०)



हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर दो उत्तम पुस्तकें

■ मुहम्मद इलियास हुसैन

1. 'हमारे रसूल पाक (सल्ल०)' पुस्तक के विद्वान लेखक तालिब हाशिमी ने इस पुस्तक में कठोर परिश्रम के बल पर पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद के जीवन-समन्दर में गोते लगाकर रंग-बिरंगे हीरे-मोती चुनकर मानो 'गागर में सागर' भर दिया है। यह किताब बहुत अच्छी किताब है और इतनी उत्कृष्ट किताब कभी-कभार ही पढ़ने को मिलती है।

आप (सल्ल०) के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने लिखा है कि पैग़म्बर की ज़िंदगी में नैतिकता, सामाजिकता और राजनीति सब कुछ कूट-कूटकर भरी थी। आप (सल्ल०) हमेशा सच बोलते थे, वादे के पक्के थे, बहुत ही ईमानदार और लेन-देन में बहुत खरे थे।

आप (सल्ल०) सारे इन्सानों के लिए दयानिधि थे, ग़ुलामों और ख़ादिमों पर रहम, जानवरों पर दया, औरतों पर रहम और मेहरबानी करते थे, यतीमों के सरपरस्त और ग़रीबों के हमदर्द थे, बेसहारों का सहारा थे, बीमारों का ख़्याल रखते थे, लोगों के दुख के साथी थे, मेहमानों की बहुत इज़्ज़त करते थे और लोगों की ख़िदमत करके ख़ुश होते थे, बड़े दानी थे, आप के अंदर त्याग की भावना कूट-कूटकर भरी थी, बहुत शर्मीले और हंसमुख थे, बड़े मीठे बोल बोलते थे और दूसरों पर अपनी बड़ाई नहीं जताते थे, बड़े सादा मिज़ाज थे और बुराई का बदला भलाई से देते थे, ग़लतियों को माफ़ कर देते थे, हमेशा अल्लाह पर भरोसा करते थे, बड़े बहादुर और निडर थे, सब्र और शुक्र करने वाले थे, हर एक के साथ इन्साफ़ करते थे, लोगों के सामने हाथ फैलाने से मना किया करते थे, आप (सल्ल०) को सफ़ाई-सुथराई बहुत पसंद थी और आप (सल्ल०) बच्चों से बहुत मुहब्बत करते थे।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) जो बातें कहते या जो काम करते थे, उनके बयान को हदीस कहते हैं। आप (सल्ल०) की प्यारी बातों पर अमल करके हर आदमी अपनी ज़िंदगी संवार सकता है और ज़िंदगी के हर मैदान में कामयाबी हासिल कर सकता है। आप (सल्ल०) सदा सच बोलते, झूठ न बोलते। जो कहते, वही करते थे; जो करते, वही कहते थे। इसलिए आपकी कथनी और करनी में कण भर भी अन्तर नहीं होता।

ऐसे लोगों को आप मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) कहते थे जिनके दिल में कुछ, ज़बान पर कुछ और जिनका अमल कुछ होता था। ऐसे लोग इस्लाम को बहुत नुक़सान पहुंचाते हैं, अपनी कथनी और करनी से इस्लाम की राह में रोड़े अटकाते हैं। ऐसे लोगों से मुसलमानों को होशियार रहना चाहिए। इस्लाम के जन्मकाल से ऐसे लोग देखने में सकारात्मक, किन्तु वास्तव में नकारात्मक भूमिका निभाते रहे हैं। ऐसे लोग धन-पिपासु और धन-पिचाश होते हैं।

निष्कर्ष यह कि 'हमारे रसूले पाक (सल्ल०)' शीर्षक किताब में विद्वान लेखक तालिब हाशिमी ने पैग़म्बर हज़रत

1. पुस्तक : हमारे रसूले पाक (सल्ल०)
   लेखक : तालिब हाशिमी
   पृष्ठ : 176
   मूल्य : ₹ 95.00
   प्रकाशक : एम०एम०आई० पब्लिशर्स, नई दिल्ली-25
   फ़ोन : 011-26981652, 23987858
2. पुस्तक : विश्वनेता हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)
   लेखक : मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी (रह०)
   पृष्ठ : 24
   मूल्य : ₹ 14.00
   प्रकाशक : एम०एम०आई० पब्लिशर्स, नई दिल्ली-25

मुहम्मद (सल्ल०) की ज़िंदगी के प्राय: हर अहम पहलू पर बड़े दिलचस्प अंदाज़ में रोशनी डाली है । लेखन-शैली अत्यंत मनमोहक, भाषा सरल, सरस, चपल, प्रवाहमयी और भावाभिव्यक्ति अत्यंत उत्कृष्ट है । बहुत ही कम लेखक होते हैं जिन्हें इतनी अच्छी भाषा लिखने, सुगठित प्रस्तुति का सौभाग्य प्राप्त होता है । सिद्धहस्त लेखक तालिब हाशिमी इस किताब में अपनी सर्वोत्तम प्रतिभा का इस्तेमाल कर पाने में कामयाब हुए हैं । यह उनकी कालजयी कृति है ।

2. 'विश्वनेता हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)' शीर्षक पुस्तक में युगद्रष्टा, महान इस्लामी विचारक और विद्वान मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी (रह०) ने पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के वैश्विक व्यक्तित्व पर बहुआयामी प्रकाश डाला है । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को मानवता उपकारक, दयानिधि, विश्वनेता, विश्वनायक, दुनिया का सरदार, लीडर ऑफ़ दी वर्ल्ड, सरवरे आलम इत्यादि अनेकानेक अच्छे नामों से जाना जाता है । आप (सल्ल०) संसार के सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति हैं । आप (सल्ल०) ने इस्लाम के रूप में संसार को जो सर्वजन-कल्याणकारी बहुमूल्य उपहार प्रदान किया, वह लाख विरोधों के बावजूद दिन-प्रतिदिन सत्यान्वेषियों के दिल पर अपनी विजय-पताका फहराता सतत् आगे बढ़ता जा रहा है । वर्चस्ववादी शैतानी शक्तियां उसकी राह में अड़चनें खड़ी करने के कुत्सित प्रयासों के बावजूद अपने मक़सद में कामयाब नहीं हो पा रही हैं । इस्लाम का विजय-रथ सतत् गतिमान है ।

मौलाना की लेखनी से दर्जनों कालजयी कृतियां निकली हैं, जिनमें 'तफ़हीमुल-कुरआन' (कुरआन-भाष्य) न केवल लेखक की, बल्कि बीसवीं सदी की सर्वाधिक महत्चपूर्ण और मशहूर कृति एवं क़ुरआन-भाष्य है ।

'विश्वनेता हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)' शीर्षक पुस्तक में मौलाना कहते हैं कि पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन का अध्ययन करें तो एक ही दृष्टि में महसूस कर लेंगे कि यह किसी राष्ट्रवादी या देश-प्रेमी का जीवन नहीं है, बल्कि एक मानव-प्रेमी और विश्वव्यापी दृष्टिकोण रखने वाले मनुष्य का जीवन है । उनकी दृष्टि में सारे मनुष्य समान थे, किसी परिवार, किसी वर्ग, किसी जाति, किसी वंश, किसी देश के विशेष लाभ से उनका कोई संबंध न था । अमीर और ग़रीब, ऊंच और नीच, काले और गोरे, अरब और ग़ैर अरब, एशियाई और यूरोपीय, शामी और आर्य सबको वे इस वास्तविक रूप में देखते थे, मानो सब एक ही मानव-जाति के अंग हैं । उनके मुख से जीवन भर कोई एक शब्द या एक वाक्य नहीं निकला और न जीवन भर कोई काम उन्होंने ऐसा किया जिससे यह संदेह किया जा सकता हो कि उनका किसी एक मानव-वर्ग के विरुद्ध दूसरे मानव-वर्ग के लाभ से विशेष संबंध है ।

इसलिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षा सार्वभौमिक और सार्वकालिक है; क्योंकि उन्होंने विशेष जातियों और विशेष देशों की सामयिक और स्थानीय समस्याओं पर ही विचार प्रकट करने में अपना समय नष्ट नहीं किया, बल्कि अपनी पूर्ण शक्ति संसार में मानवता की उस बड़ी गुत्थी सुलझाने में लगा दी जिससे मनुष्यों की कुल छोटी-बड़ी समस्याएं सुलझ जाती हैं । इस्लाम की शिक्षा सर्वरोगविनाशक औषधि है, सर्वजन हितकारी है । इसलिए इस्लाम की शिक्षा संसार सम्पूर्ण मानव-जाति के कल्याण के लिए है ।

अपने जीवन का विधान स्वयं बनाने या दूसरों से ग्रहण करने के स्थान पर ईश्वरीय विधान को ग्रहण करना ही बुनियादी सुधार की योजना है, जिसे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मानव-जीवन के लिए पेश की है । यह विधान देश-काल के बंधन से मुक्त है । इसलिए धरती पर जहां-जहां मनुष्य आबाद है, यही एकमात्र सुधार-योजना उनके भ्रष्ट जीवन को शुद्ध कर सकती है । डेढ़ हज़ार साल पहले यह जितनी प्रामाणिक, शुद्ध और लाभदायक थी, उतनी ही आज भी है और उतनी ही दस हज़ार साल बाद या अनंत काल के बाद भी रहेगी ।

किताब के अंत में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के अनेकानेक कथन पेश किये गये हैं । पाठकों के लाभार्थ उनमें से कुछ कथन ये हैं–"ईमानवाला वह है, जिससे लोगों की अपनी जान और माल को कोई ख़तरा न हो ।"

"जब नेकी करके तुझे ख़ुशी हो और बुराई करके तुझे पछतावा हो तो तू ईमानवाला है ।"

"जो व्यक्ति ख़ुद पेट भर खाए और उसके पड़ोस में उसका पड़ोसी भूखा रह जाए, वह ईमान नहीं रखता ।"

"ईमान संयम, सहनशीलता और उदार हृदयता का नाम है ।" "मुसलमान सब कुछ हो सकता है, लेकिन झूठा और ख़ियानत करने वाला नहीं हो सकता ।"

इस किताब का आवरण-पृष्ठ मनमोहक और विषयानुकूल होने के बावजूद दोषपूर्ण है ।

(1)

अपना-अपना वजूद

सांझ ढलते ही डीबले और बाती में अपने-अपने वजूद को लेकर बहस शुरू हो गयी । तभी डीबले ने बाती से कहा–"देखले बाती, मेरे बिना तेरा कोई वजूद नहीं है ।"

डीबले की यह बात सुनकर, बाती से भी नहीं रहा गया । वह भी अकड़ कर बोली–

"मूर्ख डीबले, अगर मैं तेरे साथ नहीं होती तो तू ठोकरें खाता फिरता । मेरे कारण ही तेरा वजूद है । वरना डीबले का डीबला रहता ।"

बेचारा तेल उन दोनों में चल रही बहस को चुपचाप सुन रहा था । जब वे दोनों अपनी हदें पार करने लगे तो तेल ने उन्हें चुप कराते हुए कहा–

"माना तुम दोनों का अपना-अपना वजूद है । अगर मेरा वजूद तुम्हारे साथ नहीं मिलता तो तुम दोनों को कौन पूछता ? हम तीनों के वजूद से दीपक बना है । देखो वह मानव तम को भगाने के लिए हमें जलाने आ रहा है । अब हम तीनों का वजूद दीपक बनकर तम को दूर करेगा और जग को रोशन ।"

दीपक जलते ही फिर उन तीनों का वजूद मुस्करा उठा था ।

(2)

तालियां

समूचा पंडाल लोगों से भर गया था । लोगों की भारी भीड़ देखकर नेता जी बहुत खुश हुए । नेता जी ने अपना 'ओजस्वी' भाषण सुनाना शुरू किया । लोग नेता जी का भाषण सुनने में तल्लीन थे । लेकिन वे भाषण पर तालियां नहीं बजा रहे थे । इस बात से नेता जी बड़े निराश दिखायी देने लगे तो उसके समर्थकों ने लोगों से तालियां बजाने का अनुरोध व आग्रह भी किया । पर लोग थे कि तालियां बजाने का नाम नहीं ले रहे थे ।

तभी नेता जी को एक उपाय सूझा । उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे भाषण पर न सही, पर तालियां बजाने में कंजूसी न करें । तालियां बजाने से मन प्रसन्नचित होता है तथा स्वास्थ्य भी ठीक रहता है । नेता जी की यह बात सुन लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण को गुंजा दिया ।

तालियों की गड़गड़ाहट में नेता जी का 'ओजस्वी' भाषण भी ठीक से सुनायी नहीं दे रहा था । पर नेता जी तालियों की गड़गड़ाहट से खुश थे । वहीं लोग तालियां बजाकर खुश थे ।

(3)

घोषणा-पत्र

चुनाव प्रचार चरम पर था । विपक्षी दल ने आज पार्टी कार्यालय में एक पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया था । पार्टी अध्यक्ष जब पत्रकारों को संबोधित करने लगे तो एक पत्रकार ने उनसे पूछ लिया–

"अध्यक्ष महोदय जी, सत्तारूढ़ दल ने अपना चुनावी घोषणा-पत्र जारी कर दिया है । अब आप अपनी पार्टी का घोषणा-पत्र कब जारी कर रहे हैं ?"

पत्रकार का यह प्रश्न सुनकर अध्यक्ष जी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया–

"पत्रकार महोदय, हमें इसके जारी करने की क्या ज़रूरत है ? जो वादे सत्तारूढ़ दल ने अपने घोषणा-पत्र में किये हैं, वे सब हमारे ही तो हैं । हम इन वादों को पूरा करेंगे । फिर भी जिन वादों को सत्तारूढ़ दल ने छोड़ दिया है, उन शेष वादों को भी हमारी पार्टी पूरा करेगी । इसका मैं वचन देता हूं ।"

अध्यक्ष महोदय का यह जवाब सुनकर सभी पत्रकार स्तब्ध रह गये ।

रोहित यादव
सैदपुर, मंडी अटेली, हरियाणा

● हज़रत अम्र बिन शुऐब अपने पिता से और वे अपने दादा (रज़ि॰) से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "अपने बच्चों को नमाज़ का हुक्म दो जब वे सात वर्ष के हो जाएं और जब वे दस वर्ष के हो जाएं, तो उन्हें नमाज़ के लिए मारो और उनके बिस्तर अलग-अलग कर दो ।" –अबू दाऊद

हिंसा के रूपों पर क़ाबू पाने की ज़रूरत

■ डॉ॰ विभा सिंह
(झांसी, उ॰प्र॰)



आधुनिक समाज में न केवल स्त्री के प्रति हिंसा बढ़ रही है, बल्कि स्वयं स्त्री द्वारा की जाने वाली हिंसा भी बढ़ रही है । दोनों का ही एक बड़ा कारण वही है, जो दलितों के प्रति बढ़ने वाली हिंसा का है । आज का दलित अपने पूर्वजों की तरह अपमान, अन्याय और विषमता स्वीकार नहीं करना चाहता । यह प्रतिवाद करता है । अत: उसका दमन करने के लिए उसके साथ हिंसा की जाती है इस प्रक्रिया में वह स्वयं भी हिंसा की तैयारी करता है । स्पष्टत: इसके पूर्व की तथाकथित सामाजिक शांति वास्तविक शांति नहीं थी । वह एक छद्म था, जो अब टूट-टूटकर बिखर रहा है । असमांजस्य और तनाव की यही स्थिति स्त्री-पुरुष संबंधों में भी दिखायी देती है । परंपरागत स्त्री प्राय: सभी स्थितियों में चुप रहती थी । वह अपनी अधिकारहीनता को, अपने अपमान को सिर झुकाकर सहन कर लेती थी । इसलिए पारिवारिक और सामाजिक हिंसा प्रकट नहीं हो पाती थी । वस्तुत: उस स्थिति में भी हिंसा थी-शांत, छिपी हुई हिंसा, जिसका जवाब प्रति हिंसा से नहीं दिया जा सकता था । अब स्थिति बदल रही है । आज की स्त्री उस सहनशीलता से इन्कार करती है, जो उसे अमानवीय बनाती है । इसकी परिणति कई बार हिंसा में होती है । दोनों तरह की हिंसा में-पुरुष की हिंसा में भी और स्त्री की हिंसा में भी ।

क्या इस हिंसा से बचा जा सकता है ? हां, यदि परिवार तथा समाज में समझ तथा संवेदना हो, तो इस पर प्रभावी नियंत्रण संभव है ।

हिंसा की आधुनिक कहानियां नहीं है । ऐसे वृत्तांत समय-समय पर सामने आते रहते हैं । इससे चालाक पुरुष का दिमाग़ यह सोचकर हर्षित हो सकता है कि स्त्री के साथ मानवीयता और गरिमा का जो मिथक जुड़ा हुआ है, वह नष्ट हो रहा है । वह यह सिद्ध करने की कोशिश कर सकता है कि स्त्री भी मूलत: वैसी ही है, जैसा पुरुष है । अत: स्त्री के प्रति अतिरिक्त संवेदना प्रकट करने की ज़रूरत नहीं है । कहना होगा कि यह एक विकृत दृष्टि है । इसमें संदेह नहीं कि मानव स्वभाव मूलत: एक ही है, अत: स्त्री से हर उस काम की उम्मीद और आशंका की जा सकती है, जो पुरुष से ।

स्त्री भी उतनी उद्दांत और क्रूर हो सकती है, जितना पुरुष । लेकिन क्या यह सच नहीं है कि ज़्यादातर हिंसा बाह्य स्थितियों का बदलना है, जिनमें स्त्री को अपना जीवन बिताना पड़ता है । पुरुष ने अपने लिए जो हिंसक दुनिया बनायी है, उसी का उपहार वह स्त्री को देता है और फिर आह भरता है कि देखो, स्त्री का अस्ली चेहरा यह है । नहीं, हिंसा किसी का भी अस्ली चेहरा नहीं है और अगर है, तो फिर सभी का है । यह चेहरा कब हमारे सामने आएगा-यह इस पर निर्भर करता है कि हम मनुष्य के लिए कैसी परिस्थितियों का निर्माण करते हैं । बेशक एक मानवीय समाज गढ़ने में स्त्री और पुरुष दोनों की ज़िम्मेदारी है-फिर भी पुरुष की ज़्यादा, क्योंकि शक्ति के तंतु उसके नियंत्रण में हैं । लेकिन इससे उसका उलटा भी सिद्ध होता है, क्योंकि जो शक्तिहीन है, यदि वह संघर्ष नहीं करता, तो शक्ति का संतुलन बदलेगा कैसे ? जो जुल्म का शिकार है क्या जुल्म की प्रणालियों को नष्ट करना सबसे पहले उसी का दायित्व नहीं है ?

आसान नहीं लोकतंत्र को हिलाना

■ विभांशु दिव्याल

यह जो हमारा लोकतंत्र है, जिसे विश्व का विशालतम और महानतम लोकतंत्र कहा जा रहा है और जिसे हमने स्वयं अपने हाथों से बनाया है, चलाया है, बढ़ाया है, उस गतिमान, द्युतिमान और प्रतिमान लोकतंत्र की जड़ें बहुत मज़बूत हो गयी हैं, बहुत गहरी हो गयी हैं। इस स्वयं-विकसित, स्वयं-संचालित और स्वयंजीवी लोकतंत्र का चमड़ा इतना मोटा हो गया है कि न इस पर डेंगू और चिकनगुनिया के डंक कोई असर डालते हैं और न इसको लांछित, कलंकित, अपमानित या तिरस्कृत करने वालों के मौसमी-बेमौसमी स्यापे।

इस समय देश भर के लोकतंत्र कीराजनीतिक-अराजनीतिक निगाहें उत्तर प्रदेश पर टिकी हुई हैं। इस प्रदेश का परिपक्व लोकतंत्र बरसों से नेता जी और उनके परिवार के इर्द-गिर्द घूम रहा है, चाहे नेता जी पक्ष में बैठें या विपक्ष में। यहां लोकतंत्र अपने मंज़बूत विकास के उस संक्रमण काल से गुज़र रहा है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को होते सत्तांतरण के दौरान अनिवार्यत: पैदा होता है।

आप कहते रहिए कि यह बाप-बेटे की लड़ाई है, चाचा-भतीजे की लड़ाई है, भाई-भाई की लड़ाई है, सत्ता पर वर्चस्व स्थापित करने की परिवार की आपसी लड़ाई है मगर वास्तविकता यह है कि यह हमारे विकसित लोकतंत्र के अद्यतन विकास की लड़ाई है। आप कहते रहिए कि लड़ाई की शुरुआत एक ऐसे मंत्री के निकाले जाने से हुई, जो कभी पार्टी के राजनीतिक मंचों का विदूषक हुआ करता था और जिसने कभी बड़ी मेहनत से अपने लिए बी॰पी॰एल॰ कार्ड (जानते हैं न यह क्या होता है ? यह वह कार्ड होता है जो ग़रीबी की रेखा से नीचे का जीवनयापन क़रने वालों को दिया जाता है) जुटाया था और अब अपने मंत्रित्व काल की चंद वर्षों की मेहनत से ही कथित हज़ारों करोड़ की परिसम्पत्तियां जुटा मारी है।

आप कहते रहिए कि जब एक नामालूम से मंत्री ने ऐसा चमत्कार किया है तो इसे मंत्री बनाने वालों का चमत्कार कैसा रहा होगा ? लेकिन वे भूल जाते हैं कि यह चमत्कार हमारे चमत्कारी लोकतंत्र का भारतव्यापी चमत्कार है। चमत्कृत करने की शक्ति इस लोकतंत्र की अपनी शक्ति है, जिससे न आप नज़र चुरा सकते हैं और न जिससे बचकर निकल सकते हैं।

कुछ दिन पहले हमारे विदग्ध बिहार का एक लोकप्रिय लोकतंत्री बाहुबली लाल 11 वर्ष लंबी कारावधि के कील-कांटों को काटकर बाहर आया तो जैसे बिहारी लोकतंत्र लहलहा उठा। लोकतंत्र के पहरुओं ने अपने पलक-पांवड़े बिछा दिये, सरकारी तंत्र ने सम्मान में सर झुका दिये, राजनीति के सिवान में सिहरन दौड़ गयी, कई हल्क़ों में हलचल बढ़ गयी और मीडिया की टी॰आर॰पी॰ आसमान चढ़ गयी। अब किसी के पेट में दर्द हो तो हो, किसी को बुरा लगे तो लगे, किसी को अपनी जान का ख़तरा दिखे तो दिखे, कोई इस बिहार-रत्न के अपराधों की संख्या गिनाए तो गिनाए, उसके कथित काले कारनामों की कुंडली खोले तो खोले, कोई मंत्रियों और विधायकों के साथ इसकी रिश्तेदारी पर बोले तो बोले, कोई कुकरभौंक करे तो करे, इन सबसे हमारे मुटियाये हाथी लोकतंत्र पर कोई असर नहीं पड़ता।

कभी कोई सिरफिरा हल्ला मचा देता है कि देश की लोकतांत्रिक सरकार अडानी-अंबानी से सांठगांठ कर रही है, कभी कोई कहता है कि अर्थापराधियों से समझौता कर रही है, कभी कोई कहता है कि फ़लां-फ़लां के पापों पर पर्दा डाल रही है, कोई कहता है कि एक ओर कर-क़र्ज़ माफ़ी का नाटक कर रही है तो दूसरी ओर क़र्ज़ कलाकारों को बाहर भागने का मौक़ा दे रही है, आदि, आदि। भले ही कोई कहे कि राजनीतिक पार्टियां अपने चंदे का हिसाब नहीं देतीं, चंदादाताओं के नाम नहीं बताती, अपने धन पर काला पर्दा डाले रहती हैं और अपनी गोद में न जाने कैसा-कैसा स्याह-सफ़ेद पाले रहती हैं। ये बेचारे निंदक-आलोचक नहीं जानते कि यह सब कुछ लोकतंत्र के भीतर, लोकतंत्र के लिए और लोकतंत्र की ओर से ही हो रहा है। इनका रोना-धोना अपनी जगह और इस लोकतंत्र की गहराई-ऊंचाई

अपनी जगह ।

कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें न इस लोकतंत्र की गहराई सुहाती है और न इसकी ऊंचाई । उन्हें न तो इसका तंत्र लोक के हित में दिखायी देता है और न इसका राजनीति के हित में । वे जिधर नज़र डालते हैं उन्हें बुरा दिखायी देता है और जो सुनते हैं वह बुरा सुनायी देता है । उन्हें चारों तरफ़ गड़बड़ होती प्रतीत होती है, इस गड़बड़ के प्रति अपने भीतर आक्रोश की अनुभूति होती है और इस अनुभूति में से कुछ कर गुज़रने के दायित्व की प्रतीति होती है । वे अपना अलग डंडा-झंडा लेकर दौड़ पड़ते हैं और इस लोकतंत्र को चलाने वाली राजनीति पर झपट पड़ते हैं । कहते हैं कि लोकतंत्र को बदल देंगे और लोकतंत्र को चलाने वाली राजनीति को बदल देंगे । वे अपनी अलग राजनीति लेकर आते हैं, अपनी भीड़ जुटाते हैं और अपना अंकुश लेकर लोकतंत्र के हाथी पर सवार हो जाते हैं । जनता कुछ तमाशबीन हो जाती है, कुछ समर्थक हो जाती है और कुछ मज़े लेने के मूड में आ जाती है । वह कभी हाथी को देखती है और कभी हाथी पर सवार महावत के निरीह अंकुश को ।

देखते-देखते सब कुछ एक तमाशे में तब्दील हो जाता है । हाथी अपनी चाल चलता है, महावत बौखला जाता है, अंकुश को कभी इधर मारता है, कभी उधर । अंकुश टूट जाता है मगर हाथी की चाल न टूटती है न बदलती है । बौखलाया हुआ महावत और बौखला जाता है । वह आंय-बांय बकता है । इधर उछलता है, उधर कूदता है, कभी इस पर निशाना साधता है कभी उस पर । कभी इसे गाली देता है, कभी उसे । कभी यहां चीखता है, कभी वहां । वह अपने बाल नोंचने लगता है । जनता हंसती है, कभी तरस खाती है, कभी हमदर्दी दिखाती है । कभी उसे विदूषक मान मुंह फेर लेती है ।

लोकतंत्र को बदलने वाले हलकान हैं कि लोकतंत्र का तो कुछ नहीं बदला लेकिन उनका सब कुछ बदल गया है । उनका अपना कोई अय्याशियों में पकड़ा जा रहा है, कोई फ़र्ज़ीवाड़े में, तो कोई भ्रष्टाचार में । लोकतंत्र ने अपने बदलने वालों को ही बदल दिया है । अब न उनकी चाल अलग नज़र आती है, न उनके चेहरे । अपना लोकतंत्र सचमुच बहुत मज़बूत हो गया है । किसकी हिम्मत है जो इसका कुछ बिगाड़ सके, इसकी गहरी होती जड़ों को हिला सके ।

आतंकी हमले की कड़ी निन्दा

जमाअत इस्लामी हिन्द के जामिया नगर नयी दिल्ली स्थित मुख्यालय में गत 1 अक्तूबर को आयोजित प्रेस मीट में जमाअत के अध्यक्ष मौलाना जलालुद्दीन उमरी और महासचिव इंजी० मुहम्मद सलीम ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये ।

कड़ी निन्दा

कश्मीर के उरी सेक्टर में फ़ौजी कैंप पर हुए आतंकी हमले और उसमें 19 जवानों की मौत पर जमाअत इस्लामी हिन्द अत्यंत दुख और अफ़सोस प्रकट करते हुए इसे अत्यंत निन्दनीय क़रार दिया । यह बात भी जमाअत के निकट हैरतअंगेज़ है कि आख़िर दहशतगर्द हमारी सीमा में किस तरह दाख़िल हुए, कहीं हमारी निगरानी और चौकसी की कमी तो नहीं, भविष्य में इस तरह की कोई अप्रिय घटना न घटे इसके लिए भी हमें अपनी सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक चाक-चौबंद करना चाहिए ।

जमाअत का एहसास है कि इस तरह घटना से भारत पाकिस्तान क बीच संबंध में कड़वाहट तो बढ़ सकती है इससे मसले हल नहीं होंगे । इस मौक़े पर दोनों देशों की तरफ़ से तीखे बयान समस्याओं को और भी पेचीदा ही करेंगे जो दोनों तरफ़ से अवाम के लिए नुक़सानदेह साबित होंगे। इसलिए गंभीरता और समझ का प्रदर्शन करते हुए समस्याओं के हल के लिए संबंधित पक्षों को पारस्परिक बातचीत और परामर्श का रास्ता अपनाना चाहिए।

असम में विदेशी के नाम पर अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न

असम में बी०जे०पी० सरकार द्वारा अवैध अप्रवासी विरोधी अभियान के बहाने राज्य में मुसलमानों के उत्पीड़न का जमाअत इस्लामी हिन्द कड़े शब्दों में निन्दा करती है । असम में बहुत से बंगला भाषी लोगों (जिनमें बहुसंख्यक मुसलमान हैं) को हिरासत में रखा गया है और बहुतों को बिना उचित जांच के जेलों में डाल दिया गया है ।

स्वाभाविक रूप से इन कार्रवाइयों से असम के अल्पसंख्यक समुदायों में भय और चिंता व्याप्त है और सांप्रदायिक दरार और ध्रुवीकरण का कारण बन रहा है । ये लोग नरेंद्र मोदी के असम और पश्चिम बंगाल में चुनाव-पूर्व बयानों को याद करतें हैं जिसमें उन्होंने घोषणा की थी कि अगर बी०जे०पी० सत्ता में आती है तो बंगलादेश के हिन्दू प्रवासियों को समायोजित किया जाएगा और अन्यों को निर्वासित कर दिया जाएगा ।

सावधान ! हम बच्चों को कौन से संस्कार दे रहे ?

■ ललित नारायण उपाध्याय



इसमें कोई दो मत नहीं कि युग बदल गया है, समय बदल गया है और यह भी कटु सत्य है कि हम माता-पिता बच्चों को एकदम नये, किन्तु अत्यंत बेकार या निरर्थक तथा निरुपयोगी संस्कार दे रहे हैं, इन संस्कारों से इनका क़तई भला होने वाला नहीं है, अधिकांश घरों में एक संस्कार यूं पनप रहा है । देर से उठो, चाय पानी पियो, अख़बार को सामने रखकर आधे घंटे बैठ जाओ, भले ही नल से पानी भरने जैसा महत्वपूर्ण काम रह गया हो या बिगड़ रहा हो या नल व्यर्थ ही बह रहा हो, इन सब बातों से उन्हें कोई मतलब नहीं होगा ।

उधर मां, पत्नी या बहू परेशान हो रही है, अकेले उससे काम नहीं सध रहा है या नहीं बन रहा है तो उन्हें इससे कोई मतलब नहीं होता ।

आजकल एक नया संस्कार पनपा है, चाय-नाश्ता करो और टी॰वी॰ के सामने बैठ जाओ, विशेषकर उन दिनों जब क्रिकेट मैच चल रहा हो, क्रिकेट का खेल देखने की एक 'नयी संस्कृति' और 'नया संस्कार' घरों में चल पड़ा है, किसी समय खेल खेला जाता था । आज खेल केवल देखा जा रहा है ।

मैं पचासों ऐसे घरों व लोगों को जानता हूं जो क्रिकेट में आकंठ डूबे रहते हैं, एक नशा-सा हो गया है उन्हें क्रिकेट मैच देखने तथा रन आदि पूछने का या कौन आउट हो गया ? जानने का, भले ही जीवन में वे 'आउट' हो रहे हैं, उनके बच्चे आउट हो रहे हैं, इससे उनको कोई मतलब नहीं ? मैं ऐसे बच्चों को जानता हूं जो क्रिकेट के सभी 'इंस एंड आउटस' जानते हैं पर कभी बैट हाथ में नहीं पकड़ते, घंटे आधे घंटे खेलते भी नहीं हैं ।

वे खेलने को एक कठोर काम तथा श्रमसाध्य मानते हैं जिसके कारण वे उसे अपनाते नहीं हैं, कई घरों में बड़े-बूढ़े तक इन्हें क्रिकेट देखने को प्रेरित करते हैं, आज, यह शौक़ बहुओं और माता-पिता तथा बहनों सबको लग गया है ।

क्रिकेट का मैच देखने भर से शायद ही हमें अच्छा खिलाड़ी मिले ! खिलाड़ी तो वही लोग जिसने मैदान में खेला होगा ।

इधर डॉक्टर आदि कहते हैं कि एक घंटे मैच देखने के बदले यदि बच्चा दस पन्द्रह मिनट खेले तो उसे ज़्यादा लाभ होगा । तीसरे लगातार देखने से व परिश्रम नहीं करने वाले बड़ों को दिल का दौरा पड़ने की आशंकाएं बढ़ जाती हैं ।

टी॰वी॰ के मामले में तो बहुत कुछ लिखा जा सकता है परंतु यह देखा गया है कि अनेक घरों में छोटे-छोटे बच्चे बिना टी॰वी॰ के नहीं रहते । वे खेलते हैं, तो देखते रहते हैं, पढ़ते हैं तो टी॰वी॰ देखते हैं, यहां तक कि बिना टी॰वी॰ के शोर के वे सोते तक नहीं हैं । यह नयी परिपाटी चली है ।

जैसे पंखा आज बारहों महीनों अनिवार्य-सा हो गया है। ऐसे ही टी॰वी॰ भी 24 घंटों अनिवार्य-सा हो गया है।

कई परिवार के लोग दस क़दम पैदल नहीं चलते, वे या तो साइकिल अपनाते हैं या मोपेड या स्कूटर, पचास पैसे की कोथमीर (धनिया) या हरी मिर्च नज़दीक से भी लेने जाएंगे तो दस रुपये का पेट्रोल जला देंगे, यह ख़रीदी क्या भाव पड़ी ?

परोसने के परिश्रम से ही बचने के कारण 'बुफेट' चल निकला है। उसमें कई बार 'सर्व' यानी सेवा करने वालों की कमी हो जाती है।

यहां मुझे एक उल्लेखनीय घटना याद आ रही है। हम लोग एक बारात में पहुंचे, लड़की का पिता बड़ा ऑफ़िसर था। परंतु रिटायर्ड हो गया था। सारे जीवन में कभी उन्होंने गिलास उठा कर इधर से उधर नहीं रखा। हाथ से पानी लेकर कभी नहीं पिया। हर बात पर सदा दूसरों पर आश्रित रहे तथा दूसरों पर हुक्म चलाया। जब रिटायर्ड हो गये तो उनके यहां उनकी लड़की की शादी में भारी अव्यवस्था फैली, खाना तैयार था परोसे कौन ? सजाये कौन ? सर्व कौन करे ? छोटी जगह थी, न आज के समान 'बुफेट' लोकप्रिय था। न 'सर्व' करने वाले नौकर मिले।

नौबत यहां तक आ गयी कि बारातियों को अपने साथ आये नवयुवकों को उठाना पड़ा था। उन्हें परोसने व सर्व करने का निवेदन करना पड़ा। श्रम से जी चुराने का परिणाम यह हो रहा है कि आज हमारी सामाजिक व्यवस्थाएं अस्त-व्यस्त हो रही है। दूसरी ओर शादी विवाहों के ख़र्च निरंतर बढ़ते ही चले जा रहे हैं। दूसरों पर 'आश्रितता' बढ़ती ही जा रही है या ठेका पद्धति को बढ़ावा मिल रहा है। ठेकेदार हमें प्रेम और भाईचारे से आवभगत व स्नेह से क्यों खिलाने बैठा ? पहले प्रेम से, आग्रह से खिलाया जाता था। अब तो खुला आह्वान है। गिद्धों आओ। धक्का-मुक्की करो और खाओ। यदि बिगाड़ना चाहो तो बिगाड़ो और जितना खाओ उतना ही भोजन बर्बाद करो।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित। फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।



Asian Optics
a multibrand showroom
SNP Area, Sakchi ,Jsr.
2221184
Main Road, Golmuri ,Jsr.
2341175

Sajid Anwar

9372478173, 9422828136

SAJID CARPETS

We Sale All Kinds of JA - NAMAZ

SPECIALIST IN MASJID JA-NAMAZ

WHOLE SALER & RETAILER

We also Import & Export

Mohammad Ali Road, Mominpura, NAGPUR - 440 018. INDIA

E-mail : carpetjanamaz@gmail.com

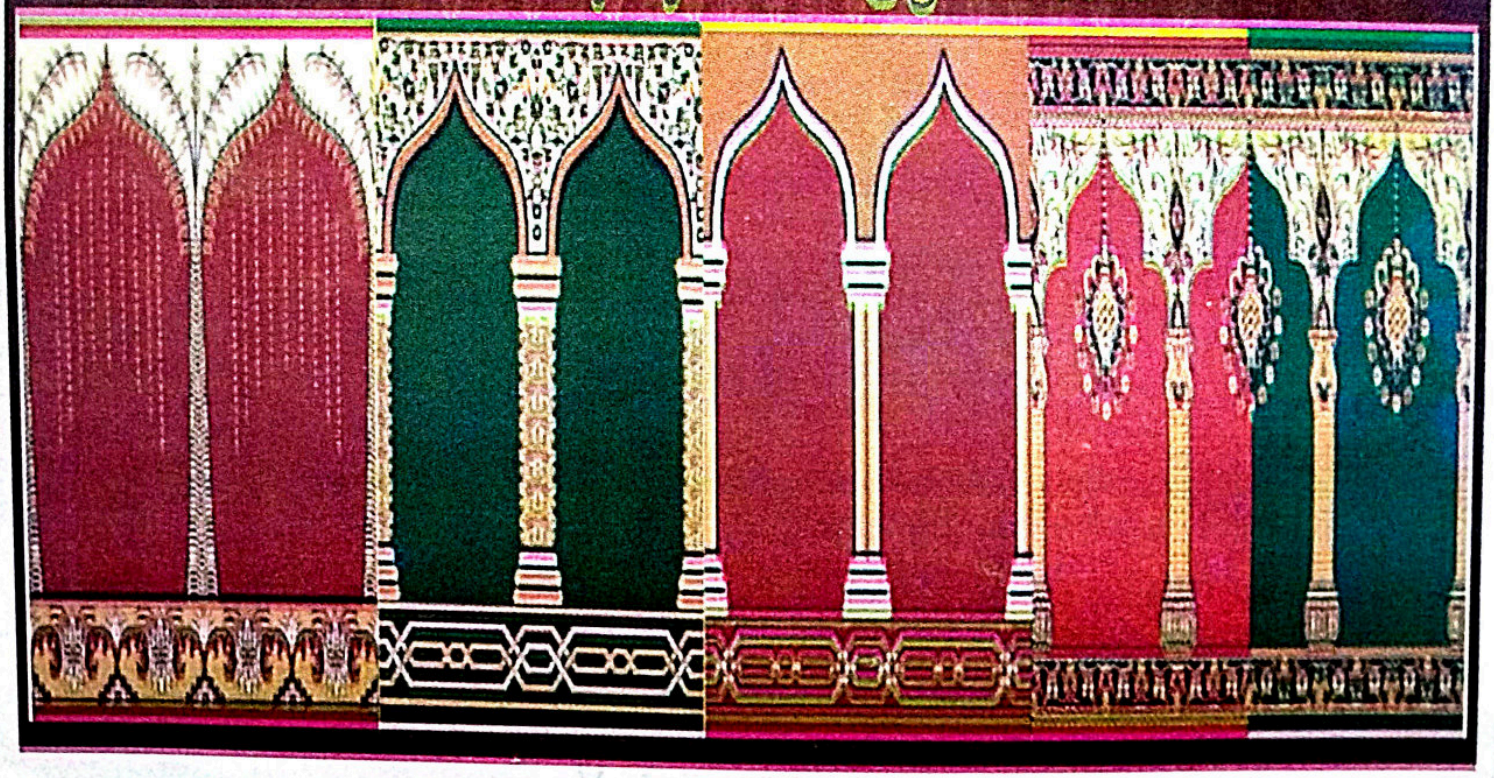

Posted on 20-21 October 2016
November 2016
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.10.2016
Total Pages-52 (With Covers)

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

कान्ति

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

पढ़िए और पढ़ाइए

जो केवल समाचार ही न दे

- बल्कि बताए समाचारों का मर्म और आगे-पीछे का हाल
- देश व समाज की उन्नति के लिए प्रस्तुत करे ठोस उपाय
- प्रस्तुत करे इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ होने वाले दुष्प्रचार का तोड़
- सामने लाए सही स्थिति और अवगत कराये वास्तविकताओं से
- रखे ध्यान नैतिक मूल्यों का और मार्गदर्शन करे भलाई व कल्याण की ओर

सहयोग राशि :-

✧ प्रति कॉपी 5 /= ✧ छहमाही 125/= ✧ वार्षिक 250/=

एजेंसी और ग्राहक बनने के लिए सम्पर्क करें ।

KANTI WEEKLY

D-314, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-25
Phone : 09818799223, 011-26949430
E-mail : kantiweekly@hotmail.com